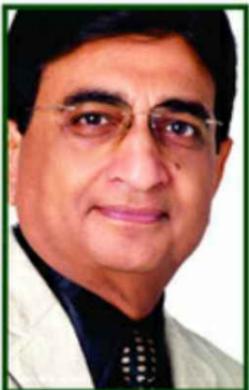




धनवान

तो बजजा ही चाहिए

आपका यह निर्णय ही आपको धनवान बना सकता है



डॉ. जितेन्द्र अद्ध्या M.D. • दीपक धाबलिया

धनवान

तो बनना ही चाहिए

आपका यह निर्णय ही आपको धनवान बना सकता है।

डॉ. जितेन्द्र अद्विया, एम.डी. - लाइफ कोच
दीपक धाबलिया - वेल्थ कोच



RUDRA

PUBLICATION

...publishing positivity...

25/B, Govt. Society, B/h, Municipal Market.
Off. C.G. Road, Navrangpura, Ahmedabad-380 009.
Ph.: 079-26447393 • Mobile: 098259 25947
email: rudrapublication1@gmail.com
www.rudrapublication.com
Buy online www.clickabooks.com

For Home Delivery : Mobile : +91-99241 43847

धनवान तो बनना ही चाहिए
डॉ. जितेन्द्र अद्धिया और दीपक धाबलिया

Copyright @ Dr. Jeetendra Adhia

All Rights reserved. No Part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior written permission of the copyright owner.

1st Edition : 27 June, 2013

: Proof Readers :

Gauriben Bharad

Kailash Khatri

Paresh Parmar

Prof. Dinesh V. Choumal

: Design & Layout :

Manu Patel

9898390057

: Publisher :

Adhia International

Ahmedabad

www.mindtraininginstitute.net

स-स्नेह भेंट

सृष्टि के जन्महार ने मानव के जन्म के साथ उसमें अनेकानेक इच्छाएँ रखी हैं, उनमें से महत्व की और प्रबल इच्छा रखी है, धनवान बनने की। आपकी भी दरअसल इच्छा होगी ही कि मैं भी धनवान बनूँ।

आपकी इस प्रबल इच्छा को सिद्ध करने का मार्गदर्शन इस किताब में मिलेगा, इसी श्रद्धा और प्रार्थना के साथ यह पुस्तक आपको भेंट कर रहा हूँ।

(जरूर पढ़िएगा)

हस्ताक्षर

दिनांक

स्थल

ऋण स्वीकार

इस पुस्तक को सदेह साकार करने में अनेक लोगों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग दिया है उनके हम कृतज्ञ हैं।

श्रीमती रूपल शाह और आत्मीय बहन अंजली साहू जिन्होंने दिन-रात दिलोज्ञान से हर शब्द को साकार करने में मेहनत की है। श्री राजेश सींगन और पीनल ठक्कर जिन्होंने धनवानों के बारे में जानकारी एकत्र करके उचित योगदान दिया है।

श्रीमती गौरीबहन बराड, श्री कैलाश खत्री, प्रो. दिनेश वी. चौमल और श्री परेश परमार जिन्होंने इस किताब कि भाषा शुद्धि के लिए योगदान दिया।

हमारे दोनों परिवारों के सभी सदस्य, भावना, नेहा, स्नेहा, जिजा, जाह्नवी, प्रिया, जिनेश, आरती, साक्षी और रूपल जिन्होंने प्रेरक प्यारभरा परिसर दिया, ताकि हम दिलोज्ञान से यह कार्य एक यज्ञ की तरह पूर्ण कर सके।

डॉ. जितेन्द्र अद्धिया ... दीपक धाबलिया

अर्पण

मेरे परम पूज्य पिताजी
श्री जयंतीलाल अमरशी धाबलिया और
वत्सल मातृश्री पू. रमाबहन,
जिन्होंने जीवन के हर मोड़ पर
मुझे धनवान बनने के लिए
प्रोत्साहित किया।

- दीपक धाबलिया

डॉ. जितेन्द्र अद्विया का परिचय



ગુજરાત રાજ્ય કે રાજકોટ જિલે મેં વાંકાનેર શહર હૈ। વહાં વીશીપરા નામ કે પછાત ક્ષેત્ર મેં ગરીબ માઁ-બાપ કે પરિવાર મેં, 1951 મેં, ડॉ. જિતેન્દ્ર અદ્વિયા કા જન્મ હુઆ। જીવન કા પ્રારંભ અતિ કષ્ટદાયક ઔર સંઘર્ષમય રહા। ઉનકે પિતાજી વાંકાનેર સ્ટેશન મેં રેલવે કે ડિબ્બોં મેં ફ્રૂટ, પીપરમેંટ ઔર ચોકલેટ બેચતે થેં। બાદ મેં ચપ્પલ કી લારી, સબ્જી કી લારી ચલાને જૈસે કામ કરતે હુએ પરિવાર કા ગુજારા કરતે થેં।

વાંકાનેર મેં તાતુકા શાલા નં. 2 મેં કક્ષા 6 તક ગુજરાતી માધ્યમ મેં અધ્યયન કિયા ફિર રાજકોટ આએ ઔર ઇન્ટર સાઇન્સ તક ગુજરાતી માધ્યમ મેં પઢાઈ કી। સન् 1969 મેં મેડિકલ કોલેજ મેં પ્રવેશ લિયા।

વર્ધા સેવાગ્રામ મેડિકલ કોલેજ સે એમ.બી.બી.એસ. કી ડિગ્રી સન् 1975 મેં ઔર મુંબઈ વિશ્વવિદ્યાલય સે એમ.ડી. કી ગૌરવશાળી ડિગ્રી સન् 1982 મેં હાસિલ કી। સન् 1985 મેં સાઉદી અરેબિયા કી અસ્પતાલ મેં ઉચ્ચ તનખ્ખાહ સે મેડિકલ ડૉક્ટર કે રૂપ મેં કેરીયર કા પ્રારંભ કિયા। ધનવાન બનને કી શુરૂઆત સાઉદી અરેબિયા સે હી હુઈ। સન् 1991 મેં ફિર ભારત લૌટે। બાદ મેં અહમદાબાદ મ્યુનિસિપલ મેડિકલ કોલેજ મેં વ્યાખ્યાતા બને।

મેડિકલ કોલેજ કી સેવા કે દૌરાન ઉન્હોને ‘મન’ કે વિષય પર પઢના - પઢાના ઔર ચિંતન કરના શરૂ કર દિયા થા। જિસસે ઉનકી માઇન્ડ ટ્રેનર કે રૂપ મેં કેરીયર કી શુરૂઆત હુઈ। દેખતે હી દેખતે ઉનકી વિવિધ વિષય પર અનેક કિતાબેं ઔર સી.ડી. પ્રાગટ હોને લગી જિન્હેં અપૂર્વ આદર ઔર સન્માન મિલા। ઉન્હોને ઇસ વિષય મેં વિશ્વ કે કરીબ 30 સે અધિક રાષ્ટ્રોં મેં મન કી શક્તિ કે બારે મેં સફળ કાર્યક્રમોં કા આયોજન કિયા।

જ્યાદા ધનવાન બનને કા ઉનકા યહ દૂસરા ઉપક્રમ થા। આજ ઉનકે પાસ દુનિયા કી હર સુખ-સુવિધાએં હૈનું। આજ ઉનકી ગિનતી કરોડ્સપતિયોં મેં હોતી હૈ ઔર અબ આપકે સાથ અરબપતિ બનને કિ ઉનકી યાત્રા શુરૂ હો ચુકી હૈ।

श्री दीपक धाबलिया का परिचय



माँ सरस्वती के मानसरोवर के राजहंस ... यानि कि बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्री दीपक धाबलिया।

दीपक का जन्म जामनगर में 1970 में हुआ। उनका बचपन मुंबई में छोटी सी चाल में बीता। दीपक बचपन में बहुत शर्मिले और अंतर्मुखी थे। बचपन की गरीबी और दुखों का सामना करके आज वे वैल्य कोच के रूप में उभर आए हैं। जिज्ञासा, कठोर परिश्रम, दृढ़ मनोबल और कुछ नया करने की तमन्ना ने इन्हें इस मुकाम पर पहुँचाया है।

जैसे विशेषज्ञ धन्वंतरी दर्दी की नब्ज पकड़ते हैं और परखते हैं ठीक उसी तरह दीपक व्यक्ति को परखते हैं और उनकी व्यथा और वेदना को अपने सकारात्मक अभिगम से दूर करने का सुझाव देते हैं। विषाद को प्रसाद में रूपांतर करने की कला विधाता ने उन्हें दी है। “He converts cry into creation.”

जब वे किसी से मिलते हैं, तब कोई पुस्तिका या सी.डी. देकर उस व्यक्ति के सुषुप्त स्वप्नों को जगा कर उस दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करते हैं।

दीपक “DD’s Real Wealth Maximizer Pvt. Ltd.” नामक कंपनी चलाते हैं। अपने ग्राहक का वर्तमान और भविष्य उन्नत, उज्ज्वल और ऊर्ध्वगमी बने ऐसा आयोजन करते हैं। जो व्यक्ति उनसे जुड़ते हैं उनको आयोजन का स्पष्ट नक्शा देकर उनके जीवन सुखी, समृद्ध, स्वावलंबी, सुगंधित और संवादी बनाने के लिए वे नित्य चिंतन करते हैं। सकारात्मक विचारों से वे अपने ग्राहकों की समृद्धि और विकास का ग्राफ नित्य ऊंचा उठे ऐसी प्रेरणा का पीयूष पिलाते हैं।

मुंबई के लब्धप्रतिष्ठित और लोकप्रिय मैनेजमेन्ट गुरु श्री संतोष नायर के वे मानसपुत्र हैं। साथ ही साथ मैनेजमेन्ट और माइन्ड पावर में ‘माइल स्टोन’ जैसे प्रतिभा संपन्न डॉ. जितेन्द्र अद्विया के साथ वे मैनेजमेन्ट, माइन्ड पॉवर और व्यक्तित्व विकास के यज्ञ में शामिल होकर तालीम देते हैं। अपनी सफलता का यश वे प्रभुकृपा, माता-पिता और अपने गुरुजनों को देते हैं।

करोड़पति बनने के दो रास्ते हैं।

- (1) सोनी टी.वी. द्वारा प्रस्तुत ‘कौन बनेगा करोड़पति’ कार्यक्रम में जाकर, श्री अमिताभ बच्चन के सामने बैठकर उनके द्वारा पूछे हुए प्रश्नों के सही उत्तर देकर।

या फिर

- (2) विश्व के धनवान लोग जिन सिद्धांतों और वैज्ञानिक रास्तों को अपनाकर करोड़पति बने, उन रास्तों को आप समझे उनका मनन करें और अपने जीवन में उनका प्रयोग करें।

यह पुस्तक क्यों?

हम दोनों लेखकों में बहुत साम्य है। हम दोनों का जन्म गुजरात के एक सामान्य गरीब परिवार में हुआ। हमने धनवान बनने की अदम्य तमन्ना के साथ हमारे जीवन की शुरुआत की।

हमने मुंबई को हमारी कर्मभूमि बनाया। हम दोनों ने मुंबई विश्वविद्यालय से उपाधि हासिल की और साथ-साथ सुंदर जीवन जीने के तौर-तरीके मुंबई में रहकर सीखे। दोनों ने एक बात जान ली कि सुबह उठने से रात में सोने तक सारे काम ऐसे हैं, जो बिना पैसे के नहीं होते। आध्यात्मिक कामों के लिए भी पैसे की जरूरत होती ही है।

किसत से दोनों को मुंबई की जीवन-यात्रा के दौरान हमें बहुत सारे धनवान दोस्त मिले और उन मित्रों के संपर्क और साथ रहने से हमारे भीतर धनवान बनने की प्रबल इच्छा प्रकट हुई और धनवान बनने के मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान भी मिला। धनवान बनने के फायदे और नुकसान, हमने बहुत करीब से जाने और पहचाने।

बाद में हमने धनवान बनने के लिए अपनी यात्रा और तप शुरू किया। नित्य नई-नई किताबें पढ़ना और उन पर चिंतन-मनन करना, देश-विदेश के वर्कशॉप में हम भाग लेना शुरू किया। प्रभु की असीम कृपा, दृढ़ मनोबल और कठोर परिश्रम से आज हम अपनी कल्पना से भी अधिक धनवान बन पाये हैं।

जीवन में एक मुकाम आया कि विश्व शक्ति के विराट आयोजन से हम दोनों गुरु-शिष्य के रूप में मिले और दोनों सहज मित्र बन गये। मैत्री की इस मनभावन यात्रा में एक विचार आया कि धनवान बनने के लिए हमें जो ज्ञान और अनुभव का अमृत मिला है उसे पुस्तक के द्वारा और वर्कशॉप के द्वारा लोगों तक पहुँचाना चाहिए।

लोगों की हमारे पाससे इस विषय पर नया जानने की और समझने की जिज्ञासा बढ़ती गई। जिसके फलस्वरूप इस पुस्तक और वर्कशॉप का आयोजन हुआ।

इस पुस्तक का उपयोग किस तरीके से करें?

यह पुस्तक पांच विभागों में विभाजित की गई है। सभी विभाग का महत्व है। प्रथम इस पुस्तक को एक कहानी की तरह पढ़ियेगा ताकि इस पुस्तक से आपका परिचय का सेतु बने। दूसरी बार यह पुस्तक आप पूरी लगान और ध्यान से पढ़िए और जो बातें आपके मन को छू जाए उसे रंगीन पेन से रेखांकित कीजिए।

पुस्तक के दूसरे और तीसरे भाग में आपका धनवान बनने का हौसला बढ़ाने कि कोशिश की है। चौथे भाग में धनवान बनने के मनोवैज्ञानिक और परिणामलक्षी रास्तों का निर्देश किया है। उन रास्तों पर चलने से आप अवश्य समृद्धि के सुवर्ण शिखर प्राप्त कर पाएंगे।

आपकी धनवान बनने की प्रक्रिया के साथ-साथ आपको सुख कैसे मिले उसका भी निर्देश पाँचवे भाग में किया है। पहले यह पुस्तक एक या दो बार पढ़िये मगर जब धनवान होने की प्रक्रिया का प्रारंभ करें तब इसे बार-बार पढ़िए और उन बातों पर चिंतन और मनन करे।

अंग्रेजी में कहावत है, “*The best way to learn is to teach.*” यानि कि धनवान बनने की विद्या सीखनी है तो इस पुस्तक में से जो बातें सही लगे उसे औरों को सिखायें, जिनको धन की आवश्यकता है मगर वो इस विद्या को नहीं जानते हैं। इस पुस्तक की बातें आत्मसात् करने से आपको नया बल, नई दिशा, नई मंजिल मिलेगी।

विषय सूची

I सर्वप्रथम

- (1) सही समझ
- (2) धनवान कौन बन सकता है
- (3) फोब्स की सूची
- (4) भारत के दस धनवानों की सूची (फोब्स के अनुसार)

II धनवानों को जानिए

- (1) कालोंस स्लीम हेलु
- (2) बिल गेट्स
- (3) वॉरन बफेट
- (4) लक्ष्मी मित्तल
- (5) धीरुभाई अंबाणी
- (6) नारायण मूर्ति
- (7) प्रेम गणपति
- (8) सर्गे ब्रीन और लेरी पेर्इज़
- (9) केरी पेकर
- (10) स्टीव जोब्स
- (11) टॉम मोनाहन
- (12) तुलसीभाई तंती
- (13) दीपचंद गाड़ी
- (14) गोविंदभाई धोलकिया
- (15) गोविंदभाई काकडिया
- (16) गौतम अदाणी
- (17) करसनभाई पटेल
- (18) सुधीर रूपरेलिया
- (19) सुभाषचंद्र गोयल

- (20) सबीर भाटिया
- (21) रे क्रोक
- (22) मार्क जुकरबर्ग
- (23) डॉ. किरण मजुमदार
- (24) अङ्गीम प्रेमजी

III धनवान बनने के लाभ, पात्रता, सिद्धांत और रहस्य

- 1. लोग धनवान क्यों नहीं बनते?
- 2. धनवान बनने के फायदे
- 3. धनवान बनने की पात्रता
- 4. मन की प्रोग्रामिंग
- 5. धनवान बनने के सिद्धांत

IV धनवान कैसे बनाए?

धनवान बनने के लिये इतना कीजिए

ब्लैन्क विझन बोर्ड

दीपक धाबलिया का विझन बोर्ड

धन की प्रार्थना

V धनवान बनने के सफर में

- 1. बैलेन्सिंग कीजिए
- 2. धन के माध्यम से आध्यात्मिकता
- 3. सुखी होने के लिए धन का उपयोग

I

सर्वप्रथम

“आपका जन्म गरीब घर में हुआ उसमें आपका कोई दोष नहीं, मगर आपकी मृत्यु गरीब घर में हो तो दोष अवश्य आपका ही है।”

- वारन बफेट

1. सही समझ

बचपन में जब हम गरीबी में जीवन जीते थे तब प्रत्येक कार्य में हम धन की कमी महसूस करते थे। मेले में धूमने जाते थे तो खिलौने लेने के पैसे भी हमारे पास नहीं होते थे। अच्छी स्कूल में पढ़ने के लिए फीस के पैसे भी नहीं थे। पैसों की इस कमी की वजह से पुरानी पुस्तकें खरीदकर पढ़ते थे। पैसों के अभाव से स्कूल के प्रवास में जाने के लिए तो हम सोच भी नहीं सकते थे।

इस तरह अभाव की परिस्थितियों में जब हमारा बचपन बीत रहा था तब हमारे मन में प्रश्न उठते थे कि हम क्यों गरीब हैं और कुछ लोग क्यों धनवान? हम दोनों के परिवार के बुजुर्ग धार्मिक और संतोषी थे, उनको ज्यादा अपेक्षाएँ नहीं थी इस लिए वे कहते थे कि, “जैसी प्रभु की इच्छा और जैसा हमारा नसीब!” मगर इन ज़वाबों से हम संतुष्ट नहीं थे। उस समय हमने सब कुछ सह लिया परंतु इन सवालों के ज़वाब जानने की हमारी इच्छा बढ़ती रही।

भीतर की इसी अदम्य इच्छा के कारण हमें इस विषय में अधिक अध्ययन करने की प्रेरणा मिली। गहरे अध्ययन और अनुभव से हमने गरीबी के कारण जाने। साथ-साथ धनवान बनने के नये रास्ते भी मिलते गये। वैज्ञानिक पद्धति से हम दोनों, उन रास्तों पर चल पड़े और धनवान बनते गये। यहाँ तक कि डॉ. जितेन्द्र अद्विया ने अपने पुत्र चि. निमिष को 12 वीं कक्षा के बाद अमेरिका की एक प्राइवेट युनिवर्सिटी में पीएच.डी. तक की पढ़ाई करवाई।

हम दोनों की गरीबी के कारण जानने की और धनवान बनने के रास्ते सीखने की सफर बहुत लम्बी और कठोर परिश्रम से भरी हुई थी। आप भी इसी तरह, जीवन के किसी मोड़ पर होंगे। यदि आपका हौसला कम हो जाए ... तो आपको चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमने हमारी धनवान बनने की सफर में जो भी सीखा-समझा है, उसका सारांश हमने इस पुस्तक में दिया है।

अभ्यास, अनुभव, अवलोकन और चिंतन करके हमने जिन रास्तों को ढूँढ़ा है उन रास्तों पर चल कर आप अपनी धनवान बनने की यात्रा शुरू कर सकेंगे।

धनवान बनने के लिए आपको सिर्फ तीन चीजें करनी हैं ...

- (1) धनवान बनने की अदम्य इच्छा अपने भीतर पैदा करें।
- (2) इस पुस्तक को बार-बार पढ़ें और उसे समझें।
- (3) इस पुस्तक में दिए गये नियम और रास्तों पर संपूर्ण विश्वास करके धनवान बनने की अपनी यात्रा शुरू करें।

2. धनवान कौन बन सकता है?

धनवान कौन बन सकता है? इस प्रश्न का उत्तर पाने की इच्छा हमें बचपन से ही थी। अनगिनत ज्ञानी और अनुभवी लोगों से हमने यह प्रश्न पूछा तो सबसे अलग-अलग ज़वाब मिले।

किसी ने कहा कि, कड़ी मेहनत करने से धन मिलता है। तो मन से सहज प्रश्न उठा कि, मजदूर इतनी मेहनत करने के बावजूद भी गरीब क्यों हैं?

किसीने कहा कि बहुत पढ़ाई करने से धनवान बन सकते हैं। तो प्रश्न उठा कि अनेक अनपढ़ लोग धनवान कैसे बने? तो किसी ने यह अभिप्राय दिया कि कुछ ग्रहों की असर के तले जन्म हो तो ग्रहों का असर तुम्हें धनवान बनाता है। तब एक नया प्रश्न मन में उठा कि श्री धीरुभाई अंबाणी और बिल गेट्स का जिन ग्रहों के असर तले जन्म हुआ उसी समय कई सारे बच्चों ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया था तो वे बच्चे क्यों धनवान नहीं बने?

कुछ लोगों का मतव्य था कि प्रभु की पूजा-अर्चना करने से और माँ लक्ष्मी की आराधना करने से धनवान बना जा सकता है। तो सहज प्रश्न मन में उठा कि महालक्ष्मी मंदिर के सभी पुजारी धनवान क्यों नहीं हैं? फोर्ब्स मैगज़ीन की लिस्ट में जिन धनवानों के नाम हैं उन्होंने क्या धनवान बनने के लिए लक्ष्मीजी का पूजन किया था? कुछ लोगों ने कहा कि, पुण्य करने से और सत्कार्य करने से धनवान बना जा सकता है, फिर प्रश्न उठा कि पापी लोग और गुंडों के पास संपत्ति कैसे आई? कुछ लोगों का कहना था कि धनवान बनने के लिए नसीब की यारी चाहिए, तो फिर यह प्रश्न उठा कि अपना नसीब कैसे बनाया जाये?

इन सब सवालों के असंतुष्ट ज़वाबों के कारण हमें सीधा और संतुष्ट ज़वाब जानने की अदम्य इच्छा हुई। अत्याधिक परिश्रम के बाद हमने गरीबी के कारण और धनवान बनने के सही तरीके जानें। उन रास्तों पर चलते हुए हम दोनों धनवान बने। आपके मन में भी इसी तरह के प्रश्न उठे होंगे और ज़वाब के बाद मन में एक उलझन उठी होगी। आपको भी सही रास्ते जानने की इच्छा होगी इसीलिए आप यह पुस्तक ध्यान से पढ़ रहे हो।

हमें पूरा विश्वास है कि यह पुस्तक पढ़ने के बाद आपको संतोषकारक ज़वाब मिल ही जायेंगे और आपने धनवान बनने का शुभारंभ कर भी दिया होगा।

3. फोर्ब्स की सूची

आप में से अधिकांश लोगों को पता होगा कि अमेरिका की 'फोर्ब्स मैगज़ीन' धनवान लोगों की सूची प्रकट करती है। उनकी वेबसाइट के मुताबिक विश्व के सर्वप्रथम दस धनवान व्यक्तियों के नाम इस तरह हैं :

मार्च 2011

नाम	उम्र	व्यवसाय	देश	मिलकत डॉलर्स
1. कालोंस स्लीम हेलु	73	टेलिकोम	मेक्सिको	74 अरब डॉलर
2. बिल गेट्स	56	माइक्रोसोफ्ट	अमेरिका	56 अरब डॉलर
3. वॉर्न बफेट	81	बर्कशायर हेथवे	अमेरिका	50 अरब डॉलर
4. बर्नार्ड अस्नोल्ट	62	LVMH	फ्रान्स	41 अरब डॉलर
5. लेरी एलिसन	67	सोफ्टवेर-ओरेक्ल	अमेरिका	39.5 अरब डॉलर
6. लक्ष्मी मित्तल	61	स्टील	भारत	31.1 अरब डॉलर
7. अमान्सीओ ओर्टेगा	75	फेशन इन्डस्ट्री-झारा	स्पेन	31 अरब डॉलर
8. इक बरीस्ता	55	माइनिंग इन्डस्ट्री	ब्राजील	30 अरब डॉलर
9. मुकेश अंबाणी	54	रीलायन्स इन्डस्ट्रीज़	भारत	27 अरब डॉलर
10. क्रीस्टी वाल्टन	57	वॉलमार्ट	अमेरिका	26.5 अरब डॉलर

फोर्ब्स मैगज़ीन ने विश्व के 100 धनवानों की सूची बनायी है जिसमें 6 व्यक्ति विशेष भारतीय हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं :

क्रमांक	नाम	विश्व में क्रमांक
1	लक्ष्मी मित्तल	06
2	मुकेश अंबाणी	09
3	अज्जीम प्रेमजी	36
4	सावित्री जिंदाल	56
5	गौतम अदाणी	81
6	कुमार बिरला	97



समग्र विश्व में भारत देश गरीब माना जाता है, फिर भी भारत देश के 6 व्यक्ति विश्व के 100 धनियों में से हैं। इसका निष्कर्ष यह है कि गरीब देश में जन्म लेने के बावजूद अगर कोई इन्सान सही दिशा में दिल से मेहनत करे तो

धनवान बन सकता है। आश्र्य की बात तो यह है कि ब्रिटेन देश जिसके बारे में कहा जाता था कि उनका सूर्य कभी अस्त नहीं होता है, उस देश का एक भी नागरिक 100 धनवानों की सूची में शामिल नहीं है।

जो लोग अपने आत्मबल और मेहनत से धनवान बने हैं और दुनिया को धनवान बनने के रास्ते दिखाए हैं, उन धनवानों को आगले पन्नो में पहचानिए और उनके जैसे धनवान बनने का आप दृढ़ संकल्प करे।

“रोज सुबह उठकर
फोर्ब्स की धनवानों की लिस्ट चेक करें।
यदि आपका नाम वहाँ पर ना हो तो
तुरंत ही काम पर लग जाइए।”

भारत के दस धनवानों की सूची

फोबर्स मैगजीन के अनुसार भारत के सबसे अधिक दस धनवानों के नाम इस तरह हैं।

मार्च 2011

नाम	उम्र	व्यवसाय	शहर
1. मुकेश अंबाणी	54	पेट्रोलियम ओयल गैस	मुंबई
2. लक्ष्मी मित्तल	61	स्टील	लंदन
3. अजीम प्रेमजी	66	कम्प्यूटर हार्डवेयर	बैंगलोर
4. शशि अंनंड रवि रुईया	62	स्टील, पावर, शिपिंग ओयल, गैस	मुंबई, लंदन
5. सावित्री जिंदाल अंनंड फर्मली	61	स्टील	हिसार/दिल्ली
6. सुनील मित्तल	54	टेलिकोम	दिल्ली
7. गौतम अदाणी	54	पावर, ओयल, गैस	अहमदाबाद
8. कुमार विरला	44	सीमेंट	मुंबई
9. पल्लुनजी मिस्त्री	82	कन्स्ट्रक्शन	मुंबई
10. अदी गोदरेज	69	FMCG, रीयल एस्टेट	मुंबई

II

धनवानों को पहचानिए

इस संसार में धन ही सर्वस्व नहीं है, प्रेम है। इत्तेफाक से मैं धन से प्रेम करता हूँ।

1. कालोस स्लीम हेलु



“लोग मुझे किस तरह से याद करेंगे यह सोचकर मैं जीने में नहीं मानता। जिस दिन औरों के अभिप्राय के अनुसार आप जीना शुरू करोगे उसी दिन आपकी मृत्यु निश्चित समझिये।”

उपर्युक्त अभिप्राय विश्व के सबसे अमीर व्यक्ति कालोस स्लीम हेलु का है। उनका जन्म 28 जनवरी 1940 में मेक्सिको में हुआ था। आज वे 220 कंपनियों के मालिक हैं। उनमें से टेलिकोम्युनिकेशन, बैंक, रेल्वे और होटेल्स उनके मुख्य व्यवसाय हैं। आप मेक्सिको की सफर पर जाए और कालोस की किसी भी कंपनी को आपके खर्चे में से मुनाफा न हो, ऐसी संभावना बहुत कम है। इसीलिए लोग उन्हें “Mister Monopoly” के लाडले नाम से पहचानते हैं।

‘ध न्यूयोर्क टाइम्स’ कंपनी जब नुकसान कर रही थी तब कालोस ने 250 मिलियन डॉलर की लोन देकर कंपनी को बदनामी और दिवालिया होने से बचाया था। इतनी व्यावसायिक व्यस्तता के बीच वे बेसबॉल खेलने के लिए समय निकालते हैं।

मेक्सिको की जी.डी.पी. (प्रोस डोमेस्टिक प्रोडेक्ट) के करीब 7 प्रतिशत मिलकत के वे मालिक हैं। यदि बिल गेट्स को अमेरिका की जी.डी.पी. के 7 प्रतिशत डॉलर इकट्ठे करने हो, तो उन्हें 101 मिलियन डॉलर इकट्ठे करने पड़ेंगे।

वे छ: संतानों के पिता हैं और हाल में विधुर हैं। उन्होंने बेचतर ऑफ आर्ट्स और सायन्स की डिग्री ली है। विश्व की सबसे बड़ी धनिक शाखियत होने के बावजूद भी वे 6 बेडरूम के 30 साल पुराने घर में रहते हैं। उनका बेडरूम मेनहटन की कोई भी होटल के रूम जैसा ही है। दरअसल वे लेबनोन के हैं। अपहरण के अधिक से अधिक किस्से मेक्सिको में बनते हैं, फिर भी वे खुद अपनी गाड़ी चलाकर ऑफिस जाते हैं। आज वे 74 अरब मिलियन डॉलर के मालिक हैं।

2. बिल गेट्स



“माईक्रोसोफ्ट की कामयाबी के दो मुख्य कारण हैं : प्रथम, हम अपने उत्पादन में नित्य परिवर्तन करते हैं। दूसरा - उत्पादन खर्च निम्न रखते हैं। इन्फोर्मेशन टैक्नोलॉजी को हो सके उतनी सरल बनाकर आम आदमी तक पहुँचाने का कार्य हमने किया है।”

- बिल गेट्स

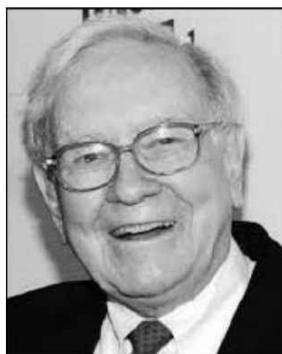
विलियम हेनरी गेट्स तीसरे (बिल गेट्स) का जन्म अमेरिका के सीएटल शहर में 28 अक्टूबर, 1955 में हुआ था। उनके पिता सीएटल में एट्नी हैं। उनकी माता स्वार्गस्थ मेरी गेट्स स्कूल में शिक्षिका थी। बिल गेट्स ने अपनी 13 साल की उम्र से ही कम्प्यूटर की प्रोग्रामिंग करना शुरू कर दिया था। 18 साल की उम्र में उन्होंने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया था जहाँ उनकी मुलाकात माईक्रोसोफ्ट के पहले C.E.O. स्टीव बालमेर के साथ हुई थी।

जब वे 18 साल की उम्र में अंडर ग्रेज्युएट विद्यार्थी के तौर पर पढ़ते थे तब उन्होंने कम्प्यूटर की एक लैंगेज लिखी, जिसका नाम था “बेसिक”। 18 साल की छोटी उम्र में उन्होंने अपनी प्रथम कंपनी की स्थापना की और सीएटल म्युनिसिपल कोर्पोरेशन को शहर का ट्राफिक गिनने का कम्प्यूटर बेचा। 1975 में अपना ग्रेज्युएशन पूर्ण करने से पहले माईक्रोसोफ्ट कंपनी का प्रारंभ किया। इस कंपनी की स्थापना अपने बचपन के मित्र पाउल एलो के साथ मिलकर की और आई.बी.एम. कम्प्यूटर कंपनी को MS DOS चलाने का हक देकर बिज़नेस का शुभ प्रारंभ किया।

10 नवम्बर 1993 में उन्होंने ‘माईक्रोसोफ्ट विंडोज’ ओपरेटिंग सिस्टम बाजार में रखी। 1 जनवरी, 1994 में उन्होंने मिलिन्डा फ्रेन्च गेट्स के साथ शादी की। वे तीन संतानों के पिता हैं। अपनी पत्नी के साथ मिलकर उन्होंने ‘बिल एन्ड मिलिन्डा गेट्स फाउन्डेशन’ की स्थापना की है जिसमें से सत्कार्यों के लिए अरबों डॉलर के दान किए जाते हैं। ‘फोर्ब्स मैगज़ीन’ की रिपोर्ट (2011) अनुसार आज

वे 56 अरब डॉलर धनराशि के मालिक हैं तथा उनका स्थान विश्व के धनपतियों में दूसरा है।

3. वॉरन बफेट



“सभी लोग जब लोभ करते हों (तेजी का समय हो) तब घबराकर चलें (सोचकर इन्वेस्ट करें) और सर्वत्र लोग जब डरते हों तब (जब मंदी हो) लोभी बने (यानि पैसे इन्वेस्ट करें)।”

यह सीख देने वाले शेयर बाज़ार के गुरु है जिनको समग्र विश्व वॉरन एडवर्ड बफेट के नाम से जानता हैं। उनका जन्म 30 अगस्त, 1930 में हुआ था। वे अमेरिका के वर्तनी हैं। विश्व के धनपतियों में उनका नाम तीसरे स्थान पर है।

“*Berkshire Hathaway*” कंपनी के वे मालिक हैं। वे अरबों डॉलर का दान करने के लिए विख्यात हैं। उनके पिता मिस्टर होवार्ड बफेट शेयर दलाल और राजनीतिज्ञ थे। तीन भाई-बहनों में वॉरन बफेट का नंबर दूसरा है।

छोटी उम्र से ही उनको बिज़नेस और अधिक से अधिक धन कमाने का शौक लग गया था। उनके दिमाग की कक्षा देखकर आज भी गणनात्मक सोच वाले उनके मित्र हैरत में पड़ जाते हैं। सिर्फ 6 साल की उम्र में ही उन्होंने अपने दादाजी की किराने की दुकान (ग्रोसरी शोप) में से कोकाकोला के 6 टिन खरीदकर बेचे थे और उसमें मुनाफा किया था। 11 वर्ष की उम्र में उन्होंने शेयर बाजार में पैसे लगाने का प्रारंभ किया था।

उन्होंने सीटी सर्विस कंपनी के 3 प्रेफरेन्शियल शेयर 38 डॉलर के भाव से खरीदे थे, जिसकी कीमत गिरकर 27 डॉलर हो गई फिर भी वे अडग रहे। .. घबराये नहीं। थोड़े दिनों के बाद में वही शेयर उन्होंने 40 डॉलर के भाव से बेचे और 6 डॉलर का मुनाफा किया। बाद में उस शेयर के भाव 200 डॉलर हो गये। इसी अनुभव से वे इनवेस्टमेंट का बुनियादी सिद्धांत सीख पाये कि, ‘धीरज के फल सदा मीठे होते हैं।’

17 साल की उम्र में स्कूल की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद कॉलेज जाने के बजाय अखबारों को ग्राहकों तक पहुँचाने (डिलीवरी बॉय) का काम शुरू किया। जिससे उन्होंने उस जमाने में 500 डॉलर कमाए, जिसे हम आज के जमाने में 5,000 डॉलर कह सकते हैं।

उनके पिताश्री ने उनको समझा-बुझाकर पेन्सिलवानिया की एक बिज़नेस कॉलेज में प्रवेश दिलवाया जहाँ वे दो साल तक रहे और शिकायत करते रहे की, “मेरे प्रोफेसरों से, मैं बिज़नेस करना अधिक जानता हूँ।” उनको अभ्यास में रुचि नहीं थी। फिर भी उनको समझा कर हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल में प्रवेश के लिए एप्लीकेशन करवाई गई, जिसमें उनकी उम्र कम है ऐसा कहकर उनको प्रवेश नहीं दिया गया। यह हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल की यह सबसे बड़ी गलती मानी जाती है।

हार्वर्ड में प्रवेश नहीं मिलने के पश्चात् उन्होंने कोलंबिया युनिवर्सिटी में प्रवेश लिया जहाँ उनकी मुलाकात उनके जीवन के शिल्पी समान बेन ग्रेहाम से हुई। उस मुलाकात से उनके जीवन में नया सवेरा आया... नयी रोशनी आयी। आज उनकी संपत्ति 50 अरब डॉलर से भी ज्यादा है।

4. लक्ष्मी मित्तल



“आप सबसे हटकर सोचेंगे तो नया मौका आपको मिलेगा।” - Think out of the box.

उपर्युक्त सलाह देनेवाले लक्ष्मी मित्तल का जन्म भारत में 2 सितम्बर, 1950 में हुआ था। आजकल वे इंग्लैण्ड निवासी हैं। 2005 में वे विश्व के धनिकों में तीसरे स्थान पर थे। और अब 2011 में वह 6 वें स्थान पर हैं। वे मित्तल कंपनी के चीफ ओपरेटिंग ऑफिसर हैं। लोग आदर से उन्हें ‘स्टील किंग’ कहते हैं। मित्तल स्टील कंपनी विश्व की सबसे बड़ी स्टील कंपनी है। कुछ समय पहले उन्होंने यूरोप की आरसीलेर कंपनी खरीदकर व्यापार विश्व में तहलका मचा दिया था।

लक्ष्मी मित्तल का जन्म राजस्थान के चूरू जिले के सादुलपुर गाँव में एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके दादाजी के बनाए हुए कच्चे मकान में 20 व्यक्तियों का परिवार रहता था। वे मारवाड़ी अग्रवाल जाति के हैं। उनके पिताश्री भारत की आजादी के पूर्व तारचंद घनश्यामदास नाम की प्रसिद्ध कंपनी में काम करते थे।

कुछ अरसे के बाद उनका परिवार कोलकाता में रहने के लिए आया। वहां उन्होंने एक स्टील कंपनी में भागीदारी की। 1994 में फेमिली बिज़नेस से अलग होकर उन्होंने अन्य देशों के साथ व्यापार का प्रारंभ किया, खास तौर पर इन्डोनेशिया, द्रीनीदाद, टोबैगो जैसे देशों में कारोबार शुरू किया। पिछले कुछ सालों में उन्होंने यूरोप और अमेरिका में अनेक कंपनियाँ खरीदी हैं। आज उनकी कंपनी का कारोबार विश्व के चार महाद्वीपों के 14 देशों में चल रहा है।

आधुनिक युग की सुविधाओं के वे शौकीन हैं। 2003 में उन्होंने विश्व का सबसे अधिक मूल्यवान घर ‘केनिंगस्टन मेन्शन’ 6 अरब रुपयों में खरीदा। उनकी लाडली बेटी वनीसा की शादी के शुभ अवसर पर उन्होंने 50 मिलियन डॉलर का खर्च किया था। यह शादी 20 वीं शताब्दी की सबसे महंगी शादी

थी। मार्च 2011 में फोर्ब्स मैगज़ीन के मुताबिक धनिकों की लिस्ट में उनका नाम छहे क्रमांक पर है, हाल में उनकी संपत्ति 31.1 अरब डॉलर की है।

5. धीरुभाई अंबाणी



“Growth has no limit in Reliance.

“Our dreams need to be bigger, our ambition higher, our commitment deeper and our efforts greater. This is my dream for Reliance and India.”

श्री धीरुभाई अंबाणी का पूरा नाम श्री धीरजलाल हीराचंद अंबाणी था। उनका जन्म गुजरात के जूनागढ़ जिले के चोरवाड़ गाँव में 21 दिसम्बर, 1932 में मोढ़ परिवार में हुआ था। उनके पूज्य पिताश्री स्कूल में शिक्षक थे। उन्होंने अपने व्यापार का प्रारंभ जूनागढ़ के गिरनार पर्वत पर पकोड़े बेचने से किया था। साथ ही साथ उन्होंने मेट्रिक तक की पढ़ाई की। 16 वें साल में मेट्रिक पास करने के बाद यमन देश के अडन शहर में कलर्क की नौकरी की और पैट्रोल भरने का काम किया। वहाँ दस साल काम करने के बाद 1958 में मुंबई लौटे। मुंबई में 15000 रुपये उधार लेकर मस्जिद-बंदर पर 300 स्क्वेअर फीट की ऑफिस में अपने व्यवसाय का प्रारंभ किया।

उनका विवाह कोकिला नाम की संस्कारी सुशील सन्नारी के साथ हुआ। उनके दो पुत्र और दो पुत्री हैं। दोनों पुत्रों में बड़ा मुकेश अंबाणी और छोटा अनिल अंबाणी है। उन दोनों पुत्रों की पढ़ाई में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। बाद में दोनों पुत्रों को अपने व्यवसाय में शामिल कर लिया।

वे एक सफल स्वजदृष्टा और स्वजसृष्टा थे, जिन्होंने भारत की सबसे बड़ी कंपनी रिलायन्स इन्डिया लि. की नींव डाली। धीरे-धीरे उन्होंने पेट्रो केमिकल्स से टेलिकम्युनिकेशन, इफोर्मेशन टैक्नोलॉजी, एनर्जी पॉवर, रिटेल, टेक्सस्टाइल, इन्फ्रास्ट्रक्चर सर्विसिस, केपिटल मार्केट एन्ड लोजेस्टिक में पदार्पण किया। इसी तरह जीरो से हीरो तक की विकास यात्रा यानि श्री धीरुभाई अंबाणी . . . !

शेयर बाज़ार में एक आम इन्सान को आकर्षित करने का श्रेय श्री धीरुभाई अंबाणी को जाता है।

उनकी कन्वर्टिबल डिबेन्चर की स्कीम ने शेयर बाज़ार में उनको लोकप्रियता के स्वर्णिम शिखर पर बैठा दिया।

1992 में उन्होंने अपनी रिलायन्स कंपनी को भारत की सर्वप्रथम ऐसी कंपनी बनाई, जिसने ग्लोबल मार्केट में अपना स्थान बनाया हो।

रिलायन्स भारत की सर्वप्रथम ऐसी कंपनी थी जिसने फोर्ब्स मैगज़ीन के 500 कंपनियों के लिस्ट में गौरवपूर्ण स्थान पाया।

श्री धीरुभाई अंबाणी को फिक्की द्वारा ‘इंडियन एन्ट्रोप्रिनियर ऑफ 20 वीं शताब्दी’ के पुरस्कार से विभूषित किया गया।

2000 की साल में ‘टाईम्स ऑफ इंडिया’ के सर्वेक्षण और समीक्षा के अनुसार ‘प्रेटेस्ट क्रिएटर ऑफ द वैल्य इन द सेन्चुरी’ के गौरव से सम्मानित किए गए।

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कोकिलाबेन अंबाणी हर कदम पर परछाई की तरह उनके साथ रही। अपने व्यवसाय की विशिष्टता...कुशलता और काबिलियत उन्होंने अपने दोनों पुत्रों को विरासत में दी है। जिसके फल स्वरूप मुकेशजी और अनिलजी की उन्नति का ग्राफ भी दिन-प्रतिदिन ऊँचाई पर जा रहा है।

श्री धीरुभाई के जीवन से प्रेरणा पाकर, जाने-माने विख्यात दिग्दर्शक श्री मणिरत्नम ने ‘गुरु’ नामक हिन्दी फिल्म बनाई, जिसमें अभिनेता अभिषेक बच्चन ने श्री धीरुभाई अंबाणी की भूमिका बखूबी निभायी है। हम दोनों लेखकों ने भी इसी फिल्म से बहुत प्रेरणा ली है।

6 जुलाई, 2002 में मुंबई की ब्रीच केन्डी अस्पताल में उस महामानव का देहांत हो गया।

उनके जीवन की ज्यौत परम ज्यौत में विलीन हो गई।

उनके जीवन का मुद्रालेख था . . .

“सोच बड़ी रखिये ... जल्दी सोचे, और सबसे आगे सोचे। आइडिया पर किसी एक व्यक्ति का इजारा नहीं है।”

6. नारायण मूर्ति



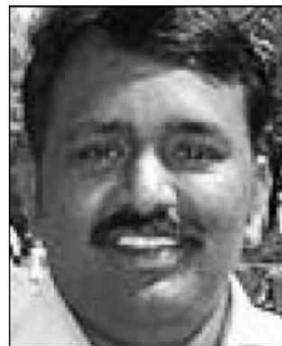
इन्फोसिस को सिर्फ दस साल में सर्वोच्च गौरव और गरिमा प्रदान करने वाले श्री नारायण मूर्ति का नाम नागवार रामाराव नारायण मूर्ति है। उन्होंने 1981 में इन्फोसिस की नींव तब डाली जब हमारे देश में आम आदमी कम्प्यूटर शब्द भी नहीं जानता था। कम्प्यूटर यानि विज्ञान के विश्व की कोई मूल्यवान चीज होगी ऐसी लोगों की सोच थी। तब दीर्घदृष्टा श्री नारायण मूर्ति ने भविष्य के बारे में सोच लिया और इन्फोसिस में कम्प्यूटर के विविध सोफ्टवेर बनाकर बेचना शुरू किया। उनकी दूरदर्शिता उनकी विकास यात्रा में लाभदायी बनी।

कन्ड माधव ब्राह्मिन परिवार में 20 अगस्त, 1946 में उनका जन्म हुआ। मैसुर युनिवर्सिटी के नेशनल इस्ट्रिट्यूट आफ इंजीनियरिंग में पढ़कर उन्होंने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की। बाद में आई. आई. टी. खडकपूर से 1969 में मास्टर डिप्री प्राप्त की। उन्होंने अपने केरीयर की प्रथम नौकरी आइ. आइ. एम. अहमदाबाद में चीफ सिस्टम प्रोग्रामर की हैसियत से की थी। बाद में पुणे में पट्टनी कम्प्यूटर्स सिस्टम में काम करने वाली उस जमाने की टेलीकोम कंपनी में नौकरी करती सुधा मूर्ति के साथ परिचय हुआ और दोनों ने परिचय को परिणय में परिवर्तित किया।

1981 में पत्नी सुधा से 10,000 रुपये उधार लेकर 6 इन्जिनियरों के साथ उन्होंने इन्फोसिस की स्थापना की। उनका बनाया हुआ ग्लोबल डिलिवरी मोडेल उनकी कंपनी के लिए सोने की खान बन गया। आज आई. टी. सेवाएँ इसी मोडेल के सहारे चलती हैं। 2002 में नारायण मूर्ति इन्फोसिस के चेमेन बने। सन् 2011 में उन्होंने नंदन निलकण्ठ को सी.ई.ओ. के तौर पर नियुक्त किया। हाल श्री नारायणमूर्ति संपूर्ण निवृत्त हो गये हैं। इस समय वे बोंगालुरु में रहते हैं और 2 अरब डॉलर के मालिक हैं।

हाल में बिलियोनर्स फोर्ब्स मैगज़ीन की लिस्ट के मुताबिक विश्व के धनपतियों में 165 के क्रम पर विराजित हैं। भारतवर्ष के धनवानों की लिस्ट में वे 33 वें स्थान को रोशन कर रहे हैं।

7. प्रेम गणपति



प्रेम गणपति नाम शायद आपको अपरिचित लगेगा, लेकिन “डोसा प्लॉज़ा” नाम से शायद ही कोई अपरिचित होगा। प्रेम का जन्म तमिलनाडु के नागालापुरम गाँव में हुआ था।

उनके पिताजी ने कोयले के व्यापार में बड़ा नुकसान किया और बाद में खेती के कार्य में जुड़ गये थे। प्रेम चेरिटी स्कूल से दसवीं कक्षा पास करके चेन्नई में अपने चचेरे भाई के कॉफी शॉप में नौकरी करने लगे।

1990 में कॉफी शॉप के मालिक के बड़े भाई मुंबई से कुछ दिनों के लिए चेन्नई आये। उनके साथ बातचीत करने के बाद प्रेम चेन्नई छोड़ कर मुंबई आ पहुँचे।

शुरू में वे हिन्दी भाषा नहीं जानते थे। बहुत मेहनत के बाद बेकरी में सफाई का काम मिला, बाद में होटल में बर्तन धोने का और तत्पश्चात् चाय बनाने का काम किया। बैंक के एक कर्मचारी के आर्थिक सहयोग से उन्होंने वाशी में टी-स्टोल शुरू किया।

उसी बैंक कर्मचारी ने उनकी लोकव्यवहार की कला से प्रभावित होकर प्रेम को पार्टनर बना दिया। लेकिन आगे चलकर जब दुकान अच्छी तरह से चलने लगी तब उन्होंने प्रेम को पार्टनरशिप से निकाल दिया। वह समय प्रेम के लिए अपने जीवन का सबसे निराशाजनक समय था। प्रेम फिर से अपने गाँव गये अपने चाचा से बात करके अपने भाई और चाचा से 20,000/- रुपये का लोन लेकर वापस मुंबई लौटे।

एक जगह पर चाय का छोटा सा स्टॉल शुरू किया। बाद में वाशी में दक्षिण भारतीय खाद्य पदार्थों की लारी शुरू की। धीरे-धीरे डोसा बनाने में वे निष्ठात बन गये। प्रेम ने सफाई और श्रेष्ठ क्वॉलिटी, इन दो बातों पर ही अपना ध्यान दिया। सफाई वाला और ताजा खाना देने के कारण, धीरे-धीरे उनके ग्राहक बढ़ने लगे और उनका नाम हो गया। हर साल वे नीले बोर्ड पर सफेद अक्षरों में अपना नाम अंकित करते थे और नया बोर्ड बनाते थे।

ऐसे नियमों से उन्होंने डोसा को प्रसिद्ध बनाया। उसको प्रेम ने नया और मोड़न नाम दिया ‘डोसा प्लॉज़ा’। प्रेम हर एक प्रदर्शनी में ‘डोसा प्लॉज़ा’ नामक नीले बैनर के साथ अपना फूड स्टोल लगाते थे। ऐसे उनका नाम ज्यादा प्रसिद्ध बन गया। कारोबार बढ़ने पर उन्होंने तमिलनाडु से अपने भाईयों को मुंबई बुला लिया और दूसरी अनेक शाखाएँ शुरू की। कारोबार बढ़ता गया और अपनी लोकप्रियता बरकरार रखने के लिए वे नये-नये व्यंजन सोचते थे. . . बनाते थे और बेचते थे। आज उनके डोसा प्लॉज़ा में 108 प्रकार के डोसे मिलते हैं।

एक अच्छा कार्य दूसरे कार्य को सीखाता है, उसी नियम पर प्रेम की शाखाएँ बढ़ती चली। उन्होंने फ्रेन्चाइज़ी देना शुरू किया, लेकिन एक ही शर्त पर कि डोसा बनाने का पदार्थ (मिगाया हुआ आटा) प्रेम से ही लेना है। सफाई में कोई कसर नहीं छोड़नी है और नाम ‘डोसा प्लॉज़ा’ ही रखना है।

फिलहाल अलग-अलग राज्य में ‘डोसा प्लॉज़ा’ के 35 आउटलेट्स हैं। उनका लक्ष्य उन्हें 800 तक पहुँचाने का है। 2008 में उन्होंने न्युजीलैन्ड में फ्रेन्चाइज़ी शुरू की, जिसमें 50 प्रतिशत ग्राहक न्युजीलैन्ड के हैं। न्युजीलैन्ड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री हेलन क्लर्क ने वहां पधारकर उनका गौरव बढ़ाया है। प्रेम गणपति का स्वप्न है कि विश्व भर में मेकडोनाल्ड की तरह उनकी ‘डोसा प्लॉज़ा’ की भी कई सारी फ्रेन्चाइज़ी हों।

8. सर्गें ब्रीन और लेरी पेईज़



गूगल आज विश्व का अव्वल नंबर का वेब सर्च एन्जिन है। इन्टरनेट पर कुछ भी ढूँढने के लिए हम जिस प्रोग्राम का उपयोग करते हैं, उसे सर्च एन्जिन कहते हैं। विश्व के 43 प्रतिशत लोग गूगल का इस्तेमाल करते हैं। किन्तु सर्गें ब्रीन और लेरी पेईज़ नाम के दोस्तों ने गूगल बनाया तब उसे बेचने के लिए यह दोनों मित्रों ने महीनों तक बड़ी-बड़ी कंपनियों का संपर्क किया था लेकिन किसी भी कंपनी ने उसमें दिलचस्पी नहीं दिखाई थी।

सर्गें और लेरी जब इन्टरनेट पर कुछ ढूँढने के लिए बैठते थे तब सबसे बड़ी कठिनाई समय की रहती थी। उस जमाने में नेट की गति बहुत मंद थी और सर्च एन्जिन आपके टाइप किए हुए स्पेलिंग के मुताबिक ही पेज ढूँढ निकालते थे। स्पेलिंग में अगर गलती हो तो गलत चीजों का ढेर इकट्ठा कर देते थे। वो एन्जिन जो चीजें ढूँढ लाते थे वो सब अस्त-व्यस्त स्थिति में आती थी। इसी वजह से हमें हजारों पेज में से अपनी आवश्यकता के अनुसार पेज ढूँढने में समय गँवाना पड़ता था।

सर्गें और लेरी ने सर्च एन्जिन में ऐसा सुधार किया कि जैसे आप सर्च के बाक्स में एक एक अक्षर टाइप करते जाओ वैसे-वैसे उनमें से बनते हुए नाम बाक्स के नीचे की ओर लाइन से दिखता जाए। इसी वजह से आपको पूरा शब्द या वाक्य टाइप करने की आवश्यकता न रहे। सिर्फ उसे पसंद करके खोज कर सके। इस एन्जिन को आपकी टाइप करने की पद्धति और उसके साथ पसंद किये हुए शब्दों से पता चला जाता था कि आपको दरअसल क्या चाहिए। बाद में मिली हुई चीजों को आपकी आवश्यकता के अनुसार क्रम में रख देता है, जिससे आप अपना समय बचा सकें।

इस सर्च एन्जिन को खरीदने के लिए कोई राजी नहीं था, ऐसलिए दोनों मित्रों ने स्वयं मिलकर, पैसे उधार लेकर, अपना पहला सर्च एन्जिन बना लिया। उनका सर्च एन्जिन हाल में सबसे लोकप्रिय है।

उनका मुद्रालेख है -

“अपने ग्राहकों को अधिक सुविधाएँ दें
और कम से कम नियंत्रण रखें और
अपने कार्य में श्रद्धा रखें।”

आज यह दोनों मित्र अरबपति हैं और 40 साल से कम उम्र वाले धनपतियों
में उनका स्थान द्वितीय है। फिलहाल वे दोनों सादगीपूर्ण जीवन जी रहे हैं।

लेरी पेर्झ़ज़ के पास 16.7 अरब डॉलर और सर्गे ब्रीन के पास 17 अरब डॉलर
की संपत्ति है।

गूगल अपने कर्मचारियों को बेहतरीन कार्य वातावरण और विश्व में श्रेष्ठ
वेतन देती है।

9. केरी पेकर



आपको यदि आत्मविश्वास और कुछ बिलकुल नया, जो लोकप्रिय बनेगा, वैसी आइडिया की मिसाल देनी हो तो, ‘केरी पेकर’ के नाम का जिक्र करना ही पड़ेगा। यूँ तो केरी पेकर की बात पैसे से पैसा खींचने की है, लेकिन लोगों की नज़र पकड़ने की और परखने की समझ उनमें काबिले तारीफ थी।

केरी पेकर को पढ़ाई के बजाय खेलकूद में अधिक दिलचस्पी थी। इसलिए उन्होंने परिवार की टी.वी. चैनल संभाली तब खेलकूद के प्रसारण पर वे अधिक ध्यान देते थे। उनकी ‘चैनल 9’ नामक टी.वी. चैनल स्पष्टता के लिए प्रसिद्ध थी। ऑस्ट्रेलिया के इस धनवान ने 1977 में शेफिल्ड क्रिकेट और टेस्ट मैच के प्रसारण के अधिकार नहीं मिलने पर, क्रिकेट बोर्ड को सबक सिखाने का निर्णय किया।

केरी पेकर ने क्रिकेट का आभ्यास किया। क्रिकेट चाहकों का सर्वेक्षण करवाया। बाद में 50-50 ओवर की एक-दिवसीय क्रिकेट मैच का आयोजन किया। इस क्रिकेट खेल में वर्ल्ड क्लास खिलाड़ी शामिल हो इसलिए उन्होंने क्रिकेट बोर्ड के रूपयों से 100 गुना ज्यादा रूपयों का ऑफर दिया। हर एक देश के क्रिकेट बोर्ड ने केरी पेकर के साथ खेलने वाले खिलाड़ी के सामने आजीवन प्रतिबंध का ऐलान किया। लेकिन केरी पेकर एक ही सीरीज खेलने पर इतने रूपये देते थे कि उससे वो सारा जीवन गुजार सके, इसलिए एक-एक करके श्रेष्ठ दर्जे के सभी खिलाड़ी उनमें शामिल हो गये।

केरी पेकर की क्रिकेट को सरकस का खेल कहने वाले सभी आलोचक यह मैच देखने आने वाले प्रेक्षकगण को देखकर आश्वर्य में पड़ गये। रंगीन कपड़े, सफेद बॉल, फ्लड लाईट के साथ एक-दिवसीय मैच का उत्कृष्ट प्रसारण हो रहा था। 50 ओवर ही खेलने थे इस लिए खिलाड़ी हर बॉल पर रन लेने का प्रयास करता था। चार-पांच ओवर तक गेंद को रोककर खड़े रहे और टाइमपास करे, ऐसी बोरिंग परिस्थिति इस मैच में नहीं दिखाई दी, इसलिए प्रेक्षकों के पैसे वसूल हो जाते थे।

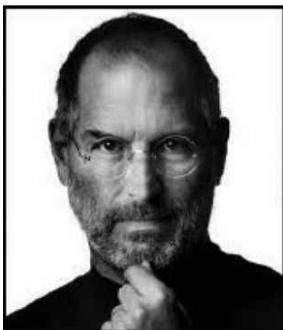
केरी पेकर का वन-डे क्रिकेट इतनी जल्दी और व्यापक तरीके से लोकप्रिय बन गया कि हर एक देश के क्रिकेट बोर्ड को केरी पेकर के साथ समाधान करना पड़ा। वन-डे क्रिकेट को मान्यता देनी पड़ी और खिलाड़ियों को फिर से बोर्ड में वापस लेने पड़े।

आज हम क्रिकेट विश्व में धन की जो बौछार देख रहे हैं वो केरी पेकर की ही बदौलत है। उन्होंने ही इस खेल से बहुत पैसा कमा सकते हैं, यह दुनिया को सिखाया।

उस वक्त 60 से भी ज्यादा सामयिकों का प्रकाशन करनेवाले केरी पेकर का मुद्रालेख था,

“ग्राहकों के पैसे वसूल हो इतना मनोरंजन तो उनको मिलना ही चाहिए, और उसके लिए हमें कुछ भी करने कि लिए तैयार रहना चाहिए।”

10. स्टीव जोब्स



अमेरिका की कम्प्यूटर बनाने वाली कंपनी, इन्टरनेशनल बिज़नेस मशीन (IBM) के चेयरमैन थॉमस वॉटसन् ने, कम्प्यूटर के बारे में सन् 1943 में कहा था कि, “समग्र विश्व में सब मिलाकर एक दर्जन से अधिक कम्प्यूटर की आवश्यकता नहीं रहेगी।”

उस समय एक पूरा कमरा भर जाये इतने बड़े कम्प्यूटर बनते थे और उसका उपयोग सिर्फ कठिन गिनतियाँ के लिए ही किया जाता था।

फिर भी स्टीव जोब्स और स्टीफन वोझानिअक ने तय किया कि, यदि छोटी साईंज वाले, जो लिख सके और हिसाब कर सके, वैसे कम्प्यूटर बनायें तो आम आदमी को भी उसमें दिलचस्पी पैदा हो सकती है। स्टीफन की उम्र उस समय 26 साल की थी और स्टीव सिर्फ 21 साल के थे। उन्होंने बाज़ार की निराशायुक्त हङ्कीकत के बारे में चिंता करने के बजाय अपने नये विचारों का अमल करने का साहस किया।

1 अप्रैल, 1976 के दिन उन्होंने केलिफोर्निया स्थित, ‘एप्पल कम्प्यूटर्स’ कंपनी शुरू की। एप्पल के पर्सनल कम्प्यूटर की सोच लोगों को छू गई। कम्प्यूटर के बड़े और वजनदार मशीन के बदले उसकी लघु कृति अपने घर में लाकर, अपने लिए उनसे काम लिया जाय यही सोच लोगों को इतनी पसंद आ गई कि, एप्पल कम्प्यूटर की बिक्री अधिक होने लगी। 1983 तक एप्पल ने हर साल 150 प्रतिशत की गति से विकास किया। उनका नाम फोर्ब्स की सूची में 234 वें क्रमांक पर आ पहुँचा। उसका मतलब विश्व की सर्वोच्च कंपनियों में उनका स्थान 234 वें क्रमांक पर पहुँच गया था।

उनकी यह सफलता आसान नहीं थी। कम्प्यूटर बनाने के लिए पूँजी और जगह की आवश्यकता थी। स्टीव जोब्स ने अपनी फोक्स वेगन मीनीबस बेचकर और स्टीफन ने अपना HP केल्क्युलेटर बेचकर 1300 डॉलर इकट्ठे किये। स्टीव जोब्स के गैरेज में उन्होंने अपनी कल्पना का कम्प्यूटर बनाने की शुरुआत की।

प्रथम कम्प्यूटर बनाने के बाद उन्हें बेचने के लिए भी उनको बहुत भाग-दौड़ करनी पड़ी।

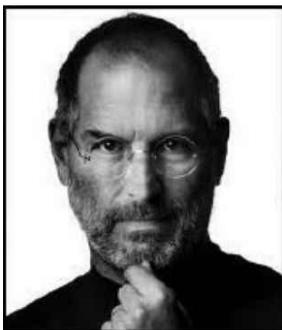
आखिर माउन्टेन व्यू नामक गाँव के एक छोटे से दुकानदार ने उनसे कहा कि, “तकरीबन 50 कम्प्यूटर बिकेंगे ऐसा मेरा ख्याल है।” उसी समय स्टीव और स्टीफन ने स्पेयरपार्ट्स वाले को जबरदस्ती से समझाकर 25000 डॉलर के स्पेयरपार्ट्स उधारी में खरीदे। उन्होंने कम्प्यूटर असेम्बल करना शुरू किया और सिर्फ एक महीने में 50 कम्प्यूटर बनाकर दुकान वाले को दिये।

उस समय कम्प्यूटर खरीदने के लिए लोग तैयार नहीं थे। इसलिए स्टीफन बोझानिअक ने उसे सुधारकर ‘एप्पल-2’ नाम का रंगीन पट्टेवाला कम्प्यूटर बनाया। तत्पश्चात बड़ी तीव्र गति से कम्प्यूटर बिकने का प्रारंभ हो गया। विशेषज्ञ विद्वानों का अभिप्राय है कि औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् एप्पल ने यह सबसे बड़ी क्रान्ति की थी।

अंतिम शताब्दी में थॉमस आल्वा एडिसन् जैसे महान संशोधक हो गये जिन्होंने मानवजाति के लिए अनेक नई खोज की। ठीक वैसे ही प्रतिभायुक्त स्टीव जोब्स, इस विश्व में आये और उन्होंने लोगों को ऐसा अन्वेषण दिया जो लोगों को सुख-सुविधापूर्ण जीवन दे रहा है। उनका यह अन्वेषण बहुत कम समय में विश्व के कोने-कोने तक पहुँच चुका है। जैसे कि आइपोड, आई-फोन और आईपेड।

यह पुस्तक जब हम लिख रहे थे उसी समय की अवधि में यह महान अन्वेषक इस दुनिया से अलविदा हो गये। उनका यह अचानक अलविदा होना पूरी मानवजाति के लिए बहुत बड़ा सदमा था।

11. टॉम मोनाहन



टॉम मोनाहन नामक साहसिक को पिज्जा बेचने का जब विचार आया तब ‘पिज्जा हट’ कंपनी की तीन हजार से भी ज्यादा रेस्टोरेन्ट में पिज्जा बेच रही थी। उसके सामने टॉम मोनाहन का पिज्जा कौन खरीदता? टॉम मोनाहन निरक्षर थे। हिसाब-किताब और सर्वेक्षण का कार्य नहीं जानने के बावजूद भी उनको विचार आया कि, ‘लोग पिज्जा हट के पिज्जा क्यूँ खरीदते हैं, वो जानने का मैं प्रयत्न करके देखूँ, शायद उसमें से मुझे कुछ रास्ता मिल जाय।’

लोगों को अनेक तरह के सवाल पूछने के बाद टॉम को इतना समझ में आया कि लोग ‘पिज्जा हट’ के पिज्जा इसलिए खरीदते हैं क्योंकि उसका रेस्टोरेन्ट घर के करीब ही मिल जाता है। दूसरा कोई पिज्जा इतनी आसानी से नहीं मिल पाता।

टॉम ने सोचा कि यदि लोगों को घर बैठे पिज्जा मिल जाये तो? टॉम ने तुरंत ही पिज्जा की दुकान शुरू की और उसकी होम डिलीवरी भी शुरू कर दी। लोगों को यह बात पसंद आई और उनके पिज्जा बिकने लगे।

‘पिज्जा हट’ वालों को इस बात का पता चला। लेकिन उन लोगों ने सोचा कि यह आदमी कितने दिन तक लोगों को होम डिलीवरी दे पायेगा? थोड़े ही दिनों में वो थक जायेगा। टॉम ने लोगों को घर बैठे पिज्जा पहुँचाने का आकर्षण पैदा किया। उसने कहा कि आपके ऑर्डर करने के बाद 30 मिनट में ही आपको पिज्जा मिल जायेगा और यदि नहीं मिला तो पिज्जा के पैसे नहीं लिए जायेंगे।

टॉम ने ‘डोमिनोज़’ के नाम से अपनी दुकान शुरू की और वो लोकप्रिय बनती चली। बड़े रेस्टोरेन्ट को अब पता चला कि होम डिलीवरी लोकप्रिय बनती है। लेकिन उनकी 30,000 से भी अधिक शाखाओं में होम डिलीवरी का इन्तज़ाम करना बहुत मुश्किल था। इसलिए वे यह सेवा शुरू नहीं कर पाये।

टॉम एक के बाद एक शहर में प्रसिद्धि हासिल करते गये और शाखाएँ खोलते गये। तेरह साल में उनकी सिर्फ 52 शाखाएँ खुली थीं फिर भी टॉम के लिए तो यह बहुत बड़ी सिद्धि थी।

टॉम मोनाहन ने पिज्जा बनाकर बेचने का और होम डिलीवरी का सिर्फ एक ही लक्ष्य रखा। इस वजह से उनकी प्रगति मंद परंतु मध्यम गति से चलती रही। आज यह विश्व की प्रसिद्ध कंपनी है।

टॉम मोनाहन का बिज़नेस सूत्र है —

“ग्राहकों को कौन सी सुविधा चाहिए वो समझ लो
और
एक ही लक्ष्य रखकर धीरे-धीरे ज्वलंत कामयाबी हांसिल करो।”

12. तुलसीभाई तंती



भारत के पूना शहर में जिनका जन्म हुआ था वे तुलसीभाई तंती ‘सुजलोन एनर्जी’ के स्थापक, चेयरमैन और मेनेजिंग डायरेक्टर है। हवा के प्रवाह से बिजली पैदा करने की नयी टैक्नोलॉजी का उपयोग करके उन्होंने काबिले तारिफ कमयाबी पाई हैं।

कोमर्स में स्नातक होने के बाद तुलसीभाईने राजकोट से इंजिनियरिंग में डिप्लोमा किया था।

असल में राजकोट के श्री तुलसीभाई ने सूरत में सुजलोन सिन्थेटिक्स से अपने कार्य की शुरुआत की, जो अब सुजलोन फाइबर्स नाम से कार्यरत है। तुलसीभाईने सुजलोन एनर्जी कंपनी बनाकर पवन से धूमने वाले पंखों से बिजली पैदा करने का प्रयोग किया। उसमें उनको जबरदस्त सफलता मिली।

उनकी कंपनी की कुल संपत्ति 2008 में 93 करोड़ डॉलर (करीब 4464 करोड़ रुपये) हो गई थी। बाद में भयानक मंदी की वजह से उनकी संपत्ति बहुत कम हो गई। फिर भी आज 40 करोड़ डॉलर (करीब 2000 करोड़ रुपये) की संपत्ति के वे मालिक हैं।

‘तुलसीभाई तंती’ का एक ही गुरुमन्त्र है —

“कुछ नया अन्वेषण करें और
उसमें ही आगे बढ़े
तो आपको बहुत सफलता मिलेगी,
क्योंकि उसमें आपका कोई प्रतिस्पर्धी
नहीं होने के कारण प्रारंभ में
आप अधिक मुनाफा पाएंगे।”

13. दीपचंद गार्डी



दीपचंद गार्डी के जन्म गुजरात के राज कोट जिले के पडधरी गांव में 25 अप्रैल, 1915 के दिन हुआ था। उनके पूरा नाम दीपचंद सवराजी गार्डी है। उन्होंने बी.एस.सी., एलएल.बी. किया है और 1942-43 में बार- एट-लॉ की डिप्री हासिल की है।

दीपचंद गार्डी यानि जैन समाज के भीष्म पितामह। वे 40 से भी अधिक सामाजिक संस्थाओं में बोर्ड मेम्बर के तौर पर कर्यरत हैं। उन्होंने अपना अधिकंश जीवन समाज सेवा को ही समर्पित किया है। उन्होंने 300 से ज्यादा स्कूल बनाई है। इसके अलावा हेल्प सेन्टर, मेडिकल कॉलेज, टेक्नीकल कॉलेज, नर्सिंग कॉलेज जैसी शैक्षणिक संस्थाओं में अपना दान दिया है। समाज का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें उनका योगदान न हो। वे भारतीय जैन संगठन के ट्रस्टी हैं। खुद जैन होने के बावजूद भी उन्होंने जैन संस्थाओं के अलावा अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में भी दान दिया है।

उनके दोनों सुपुत्र विदेश में स्थायी हैं जहाँ वे अपना बहुत समय बिताते हैं। एक बार ने राजकोट से मुंबई की हवाई सफर में डॉ. अदिया से मिले थे। सफर के दौरान डॉ. अदिया ने उनसे पूछा कि, “आप क्यों इकोनोमी क्लास में सफर कर रहे हो? आप के तो बिज़नेस क्लास में सफर करना चाहिए।” तब उन्होंने प्रत्युत्तर दिया कि, “हवाई जहाज के इकोनोमी ओर बिज़नेस क्लास की टिकट के फर्क में से, मैं किसी गरीब विद्यार्थी के साल भर की छत्रवृत्ति दे सकता हूँ।”

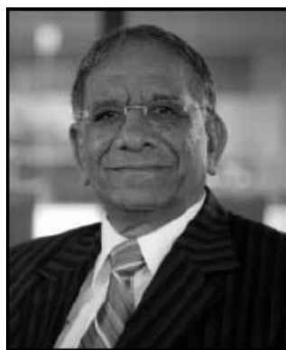
उनके जीवन का मंत्र है —

“Every living creature from the biggest to the smallest has right to peaceful existence.”

“वो कहते हैं कि, जो मैं मानता हूँ वो शायद सत्य हो...

फिर भी दूसरे जो मानते हैं उसको भी मैं स्वीकर करता हूँ।”

14. गोविंदभाई धोलकिया



गोविंदभाई धोलकिया जो ‘गोविंद काका’ के लाडले नामसे पहचाने जाते हैं। उनका जन्म 7 मार्च, 1947 में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। वे अमरेली के पास में दुधाला गाँव के वतनी हैं। दुधाला में उन्होंने 7 वीं कक्षा तक पढ़ाई की है।

दुधाला के छोटे से गाँव से सूरत आकर उन्होंने रत्न कलाकार के तौर पर अपनी केरीयर का प्रारंभ किया। बाद मैं अपने दो मित्र भगवानभाई पटेल और वीरजीभाई गोधाणी के साथ मिलकर श्री रामकृष्ण एक्सपोर्ट (SRK) कंपनी की स्थापना की। सालाना 5000 करोड़ रुपये का बिज़नेस करने वाली इस कंपनी के वे चेयरमैन हैं।

उन्होंने 1971 में चंपाबहन से शादी की। उनके परिवार में दो बेटियाँ मिनाक्षी, श्वेता और बेटा श्रेयांश हैं। उन्होंने श्री डोंगरेजी महाराज के विचारों से प्रभावित होकर उनकी प्रेरणा से अपना बिज़नेस शुरू किया था।

1999 में उनको ‘सूरत रत्न एवोर्ड’ मिला है। 2001 में ‘हाईएस्ट डायमंड एक्सपोर्ट एवोर्ड’ और 2005 में उनको ‘सूर्यपुर रत्न एवोर्ड’ मिला है। उनको 2013 का “Outstanding Entrepreneur 2013” एवोर्ड मिला है।

हाल वे समग्र विश्व के तीसरे नंबर के हीरों के उत्पादक हैं। कई सामाजिक संस्थाओं में उन्होंने अपना अनुदान और योगदान दिया है। डॉ. अद्विया के वे परम मित्र हैं।

डॉ. अद्विया मानते हैं कि गोविंदभाई अपने जीवन के हर एक पहलू का बखूबी संतुलन कर पाते हैं। इसी लिए डॉ. अद्विया अपने वर्कशॉप में जीवन को बेलेन्स करने की बात सिखाते हैं तब गोविंदभाई का खास तौर पर जिक्र करते हैं।

श्री गोविंदभाई सबके सामने कहते हैं कि,

“मैं अपने व्यवसाय में कुछ गलत करता हूँ
ये बात कोई सिद्ध करके दिखाये
तो मैं अपना व्यवसाय छोड़ने को तैयार हूँ।”

15 गोविंदभाई काकडिया



गोविंदभाई काकडिया को सभी जी.एल. लाडले नाम से पहचानते हैं। उनका जन्म एक किसान परिवार में 21 अक्टूबर, 1958 के दिन हुआ था। गुजरात के, भावनगर जिले के वल्लभीपूर तहसील के, पटाणा गाँव में उनका जन्म हुआ है।

10 साल तक उन्होंने डायमन्ड पोलिशिंग का काम किया। 1984 में वे नौकरी के लिए मुंबई आये और तुरंत ही उन्होंने शीतल ग्रुप की स्थापना की। हाल वे शीतल ग्रुप के चेयरमैन हैं।

हाल में 15000 लोग उनकी कंपनी में कार्यरत हैं। उनकी कीया (KIAH) डायमन्ड ब्रान्ड की ज्वेलरी बहुत प्रसिद्ध है। जिसकी ब्रान्ड ऐम्बेसेडर सुस्मिता सेन थी। गोविंदभाई ने भी समाज में कई स्कूल, कॉलेज, लाईब्रेरी और हेल्थ सेन्टरों में अपना अनुदान दिया है।

शीतल ग्रुप को लगातार सात बार 'Outstanding Export Performance of Cut and Polished Diamonds' का एवोर्ड भारत की जेम्स एण्ड ज्वेलरी काउन्सील से मीला है।

उनकी पत्नी का नाम मुक्ताबेन है। परिवार में उनकी तीन बेटियाँ और एक बेटा हैं। उनके जीवन में बालीयुड फिल्मों का बहुत असर रहा है। वो जो भी सीखे हैं या जिंदगी में उनको जो कुछ मोटिवेशन मिला है उसमें हिन्दी फिल्मों का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

16. गौतम अदाणी



अहमदाबाद में 1962 में जन्मे हुए गौतम अदाणी आज विश्व की अग्रिम एक्सपोर्ट कंपनी, “अदाणी ग्रुप” के चेयरमैन है। फोर्ब्स मैगजीन की सूची के अनुसार भारत के सबसे अधिक धनिकों के क्रम में उनका नंबर छठा है।

गौतमभाई के माता-पिता थराद गाँव से अहमदाबाद आकार बसे थे। उन्होंने अहमदाबाद के शेठ सी.एन. विद्यालय में अपनी हाईस्कूल तक की पढ़ाई की है।

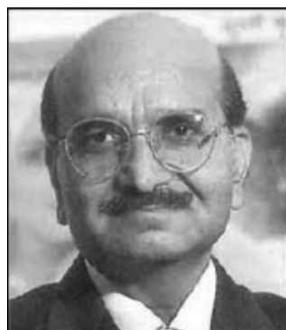
दूसरे ही साल वे पढ़ाई छोड़कर मुबई की डायमन्ड कंपनी में काम करने लगे। दो साल तक महिन्द्र ब्रदर्स नामक कंपनी में काम करने के बाद उन्होंने जवेरी बाज़ार में हीरे के कमिशन एजन्ट (डायमन्ड एजेन्ट) के रूप में अपने कार्य का प्रारंभ किया। उसमें उन्होंने एक लाख रुपयों की कमाई की। उस अरसे में उनके बड़े भाई ने प्लास्टिक की चीजें बनाने का युनिट शुरू किया और गौतम को उसका कारोबार सौंपा।

गौतम अदाणी ने उस युनिट को अपने कौशल्य से आगे बढ़ाया। इतने में आर्थिक नीति में राहत मिली और आयात-निर्यात में भी कुछ राहत मिली। बस, उसके बाद गौतम अदाणी ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। शुरू में प्लास्टिक के दानों के आयात का काम किया।

उसके बाद दूसरी अनेक चीजों का आयात-निर्यात शुरू किया। मुन्द्रा पोर्ट के विकास से लेकर स्पेशल इकोनोमिक ज़ोन में साहस करने जैसे दूसरे अन्य साहस पर भी उन्होंने अपना हाथ आजमाया। हर एक नये क्षेत्र में अपना हाथ अजमाकर, उन्होंने कभी किसी ने नहीं की हो ऐसी नई शुरूआत करके, सफलता पायी है।

हाल में उन्होंने अहमदाबाद में बहुत बड़ी सिटी ‘शांति ग्राम’ बनाने का आरंभ किया है। जो अहमदाबाद के लिए उनकी ओर से नई भेट होगी।

17. करसनभाई पटेल



‘निरमा वॉशिंग पाउडर’ जैसी लोकप्रिय ब्रान्ड के सर्जक करसनभाई पटेल का जन्म 1945 में गुजरात के महेसाणा जिले के रूपपूर गाँव में हुआ था। किसान परिवार के करसनभाईने रसायन के विषय में बी.एस.सी. करने के बाद लालभाई ग्रूप की न्यु कॉटन मिल्स में लेब टैक्नीशियन के रूप में नौकरी की। 1961 में वे सरकार के खनिज और भूस्तर विभाग में जुड़ गये।

शेष समय में उन्होंने अपने घर में अपने रसायन के ज्ञान का इस्तेमाल करके डिटरजेंट पाउडर बनाना शुरू किया। पाउडर को प्लास्टिक बैग में पैक करके अपनी पुत्री निरुपमा के नाम से ‘निरमा’ ब्रान्ड का पाउडर बेचना शुरू किया। घर में पाउडर बनाना, उसे प्लास्टिक बैग में पैक करना और उसे साईंकिल पर बेचने जाना यह सभी काम वे नौकरी के बाद के समय में करते थे।

बाजार में जब Surf वॉशिंग पाउडर 9 रुपये प्रति किलो के दाम से बिकता था, तब वे Nirma वॉशिंग पाउडर सिर्फ तीन रुपये प्रति किलो के भाव से बेचने लगे। उनका पाउडर कम दाम होने के बाबजूद भी असरदार था इसलिए वे वॉशिंग पाउडर कि जितनी भी थैलियाँ बनाते थे वे सब बिक जाती थीं और एक बार इस पाउडर की खरीदी करने के बाद गृहिणी फिर से वो ही पाउडर माँगती थी।

कुछ समय में ही करसनभाई को विश्वास बैठ गया कि उनका पाउडर जरूर चलेगा। इसके बाद उन्होंने नौकरी छोड़कर अहमदाबाद में फैक्टरी और टुकान के लिए जगह प्राप्त करने का निर्णय किया। पिता के जबरदस्त विरोध के बाद भी करसनभाई ने अपने पिता के शब्दों में ‘पागलपन कहलाने जाने वाला साहस’ शुरू किया था। यहाँ पर भी आरंभ साईंकिल से ही हुआ था।

करसनभाई ने अपने रसायन के ज्ञान को काम में लगाकर खोज लिया कि अलग -अलग विस्तार में पानी की खराश के मुताबिक पाउडर के रसायनों को बदल कर ही उसे अधिक असरदार बनाया जा सकता है।

इसलिए उन्होंने हर एक राज्य और क्षेत्र के लिए अलग फोर्म्युला बनायी। गुजरात का पाउडर महाराष्ट्र में बेचेंगे तो कपड़े उतने अच्छे नहीं धुलेंगे इसलिए हर एक राज्य के पाउडर का स्टॉक, बड़े ध्यान से अलग रखा जाता था।

देखते-देखते करसनभाई का ‘निरमा’ पाउडर सबसे अच्छे ‘सर्फ’ पाउडर से भी अधिक बिकने लगा। बस, उसके बाद करसनभाई ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। ‘कम मुनाफा, ज्यादा व्यपार, उत्तम क्वॉलिटी और ग्राहकों की ज़रूरत की समझ’ - यह तीन सिद्धांत करसनभाई कि सफलता के मुख्य कारण हैं।

आज निरमा 350 करोड़ की कंपनी है, वह अनेक उत्पादों को बनाती है और ‘निरमा युनिवर्सिटी ऑफ सायन्स एण्ड टैक्नोलोजी’ भी चलाती है।

18. सुधीर रूपारेलिया



सुधीर रूपारेलिया का जन्म युगान्डा में 1955 में हुआ था। असल में वे सौराष्ट्र के हैं। इदी अमीन के समय में वे युगान्डा से 1972 में यू.के. चले गए और उसके बाद 1985 में युगान्डा की परिस्थिति में बदलाव आने पर वे वापिस युगान्डा लौटे।

जब वे इंग्लैण्ड रहते थे तब उन्होंने छोटे-छोटे कई काम किये। जिसमें टैक्सी चलाने का काम भी किया। युगान्डा में फिर से स्थायी होने के बाद उन्होंने कई बिज़नेस में अपना नसीब आजमाया उग्र रूपारेलिया ग्रुप ऑफ कंपनीज की स्थापना की। आज वे कन्ट्रक्शन, बैंकिंग, इन्श्योरन्स, हॉस्पिटालिटी, एज्युकेशन और फ्लोरीकल्चर जैसे अनेक बिज़नेस के धारक हैं।

युगान्डा के प्रेसिडेन्ट के साथ उनका घरेलू रिश्ता है। वे खुद अपने आयलॉन्ड और पर्सनल प्लेन भी रखते हैं। युगान्डा के सबसे धनी व्यक्तिओं में उनकी गिनती होती है।

वे 'क्रेन बैंक', युगान्डा के वाइस चैयरमेन हैं। वर्ल्ड क्लास 'मुन्योन्यो होली-डे-रिसोर्ट' के मालिक हैं। जिसमें इंग्लैण्ड की क्वीन ऐलिजाबेथ भी उगकर ठहर चुकी हैं।

युगान्डा में उन्होंने एक 7 स्टार रीसोर्ट बनाया है। जिसका नाम मुन्योन्यो रीसोर्ट है। इस रीसोर्ट में इंग्लैण्ड की महारानी एलीझाबेथ महेमान बन चुकी है।

डॉ. अद्विया युगान्डा के प्रवास के दौरान उनसे मिले थे। तब डॉ. अद्विया को वो मिलने लायक व्यक्ति लगे थे और वे सुधीरभाई से कई सारी बातें सीख पाये।

19. सुभाषचंद्र गोयल



भारत की प्रथम मनोरंजन चैनल 'जी टी .वी.' और प्रथम मनोरंजन पार्क 'एसेल वर्ल्ड' शुरू करने वाले सुभाषचंद्र गोयल हैं। वे हमेशा नये प्रयोग करने का गुरुमंत्र रखते हैं और उसी के आधार पर ही उन्होंने अपना विराट साम्राज्य खड़ा किया है। वे कहते हैं कि नयी सफलता नये रास्ते पर चलने से ही मिलती है। आपके बनाये हुए पथ पर अन्य लोग चलेंगे तो आप अपने आप सफलता बन जाएंगे।

उन्होंने भारत में 'एसेल पेकेजिंग' और 'सुपर लोटो' नामक टी.वी. लोटरी की शुरुआत की थी। सुभाषचंद्र 2.3 अरब डॉलर (12 अरब रुपये) की संपत्ति के मालिक हैं। उनका जन्म हरियाणा के हिस्सार जिले के आधारपुर मंडी गाँव में हुआ था। वे इंजिनियर बनना चाहते थे। किन्तु संजोगों के अधीन होकर उनको इन्टर के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

उनकी कार्यसूझ से उनको किसी भी क्षेत्र के भविष्य के बारे में सुझाव मिल जाता था।

1982 में एक पेकेजिंग प्रदर्शनी में घूमते समय उनको पेकेजिंग कंपनी बनाने का विचार आया। बहुत प्रयत्न के बाद उन्होंने कंपनी शुरू की और उस समय टूथपेस्ट जैसी ट्यूब एल्युमिनियम के बजाय लेमिनेट प्लास्टिक से बनाई। आज टूथपेस्ट, खाद्यचीजें, सौंदर्य प्रसाधन जैसी कई चीजें प्लास्टिक लेमिनेटेड ट्यूब में बिकती हैं।

उनकी कंपनी 'एसेल पॉकेजिंग' दुनिया की दूसरे क्रम की लेमिनेटेड ट्यूब निर्माता कंपनी बन गई है।

वे 'Zee TV' कंपनी के मालिक भी हैं।

20. सबीर भाटिया



सबीर भाटिया अमेरिका में सिलिकोन वेली नामक प्रांत में एप्पल कम्प्युटर्स में काम करते थे।

उनके मन में विचार आया कि इन्टरनेट सेवा का उपयोग करके ग्राहकों के मुफ्त में ई—मेल सेवा दी जाय तो काफी लोकप्रियता मिलेगी। इसलिए 1996 में सबीर ने होटमैईल नामक ई—मेल सेवा शुरू की, जिसमें कम्प्यूटर धारक कोई भी ग्राहक जो सिर्फ इन्टरनेट कनेक्शन धारक हो, वह इन्टरनेट पर अपना ई—मेल अकाउन्ट बना सके और अपने संदेश को दुनिया के किसी भी देश के किसी भी स्थान पर मुफ्त में भेज सके।

6 महिने में उनके 10 लाख ग्राहक बन गये और 2 साल में 1 करोड़ ग्राहक बन गये। सबीर भाटिया यह सेवाएँ मुफ्त में देते थे। उनको इस सेवा से पैसा कैसे कमाया जाय यह पता नहीं था, इसलिए वे इस काम में 13 लाख डॉलर का नुकसान कर चुके थे।

वे यह सेवा से थक गये थे कि इतने में मार्ड्क्रोसोफ्ट द्वारा इन्टरनेट पर कब्जा करने के लिए निकले हुए बिल गेट्स को ई—मेल की लोकप्रियता का पता चला। उन्होंने सबोर को ऑफर दी की 16 करोड़ डॉलर में वो होटमैईल उनके बेच दे। सबीर नुकसानी कर रहे थे फिर भी अंडिंग रहकर वे कंपनी बेचने का इनकार करते रहे और दाम बढ़ाकर आखिर में 40 करोड़ डॉलर में होटमैईल कंपनी बिल गेट्स को बेच दी।

आज ई—मेल सेवा सबसे अधिक लोकप्रिय है इसका कारण, उसके शोधक सबीर भाटिया हैं, और उसे चालू रखने वाले व्यापारी कार्य कुशलता के धारक बिल गेट्स जैसे उद्योगपति हैं।

21. रे क्रोक



रेमन्ड एलबर्ट यानि कि रे क्रोक का जन्म अमेरिका में 5 अक्टूबर, 1902 में हुआ था। उनका जन्म शिकागो के ओकपोट नामक गाँव में हुआ और उनकी मृत्यु 14 जनवरी 1984 में हुई। उनके माता-पिता चेकोस्लोवाकिया देश के थे।

आप में से अधिकतर लोग ‘मैकडोनाल्ड’ के बारे में जानते होंगे और उनके खाद्य पदार्थ के स्वाद से भी परिचित होंगे। अमेरिका के एक कोने से आपके गाँव तक मैकडोनाल्ड को पहुँचाने का कार्य रे क्रोक ने किया है। 207 मिलियन डॉलर में खरीदी हुई कंपनी को उन्होंने 500 मिलियन डॉलर की कंपनी बना दी।

मैकडोनाल्ड भाईयों ने तो सिर्फ अच्छा हेमबर्गर बनाया और दोनों के हिस्से में कंपनी बिकने से तकरीबन 103 मिलियन डॉलर मिले जिससे संतुष्ट होकर उन्होंने सारा जीवन बिताया। लेकिन इन महानुभाव ने उनके ‘हेमबर्गर’ का स्वाद चीनी और जापानियों को भी चखाया। उनके बिज़नेस का राज़ था... समग्र विश्व में एक समान क्वॉलिटी, टेस्ट और फास्ट सर्विस.. !

उनके जीवन का मंत्र था,

“प्रारब्ध मेहनत का पल है,

जितना ज्यादा पसीना, उतना ज्यादा मीठा फल।”

वे हमेशा कहते थे कि —

“जब हम धनवान हैं तब सिद्धांतों का पालन करना आसान होता है, जब हम गरीब हैं तब सिद्धांतों का पालन करना मुश्किल होता है।”

22. मार्क जुकरबर्ग



न्यूयोर्क राज्य के 'व्हाईट प्लेइन्स' इलाके में 1984 में मार्क जुकरबर्ग का जन्म हुआ। कॉलेज पढ़ाई अधूरी छोड़कर वे गूगल की 'ओरकुट' जैसी वेबसाईट बनाने में मान हो गये। उन्होंने 2004 में अपने सहपाठी डस्टीन मोससेवित्ज़ के साथ मिलकर 'फेसबुक' की स्थापना की। उसकी शुरुआत कॉलेज-होस्टेल के कमरे से हुई और सिर्फ चार साल में, 2008 तक, मार्क जुकरबर्ग विश्व के सबसे छोटी उम्र के अरब पति बन गये। उनन्दर्दी निजी संपत्ति आज 20 अरब डॉलर (करीब 1000 अरब रुपये) तक पहुँच गई है।

मार्क जुकरबर्ग को शुरू से, जब वे प्राथमिक शाला में पढ़ते थे तब से, कम्प्यूटर में नये-नये प्रोग्राम बनाकर देखने का शौक था। वे चालू प्रोग्राम में कई बदलाव करके देखते थे। एक-दूसरे का संपर्क करने के लिए अनेकविध प्रोग्राम्स और विडियो गेम्स बनाने में उन्हें बहुत आनंद आता था। वे एक अच्छे प्रोग्रामर के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे।

कॉलेज में विद्यार्थी अपने पुराने सहपाठी को ढूँढ़ सके और मिल सके उसके लिए उन्होंने तीन प्रोग्राम बनाये थे। उनमें से एक था 'फेसमेस'। उसी से आगे जाकर 'फेसबुक' का निर्माण हुआ। शुरू में 'फेसबुक' सिर्फ हावर्ड में पढ़नेवालों के लिए ही था। उसकी लोकप्रियता बढ़ने पर मार्क जुकरबर्गने उसके प्रसार बढ़ाया। गूगल का 'ओरकुट' बाज़ार में होने के बावजूद भी 'फेसबुक' को सफलता मिली, उसका कारण है 'ओरकुट' में एक-दूसरे के साथ बात करने में और संपर्क में जो सुरक्षा नहीं मिलती थी, वह सुरक्षा मार्क ने 'फेसबुक' में दी।

इसमें आप अपनी इच्छा के मुताबिक जिस दोस्त के अपनी ज्ञानकारी देना चाहे, उन्हें ही सिर्फ ज्ञानकरी प्राप्त हो और आप जो चाहे वो मित्र की प्रवृत्ति अपनी फेसबुक एकाउन्ट की ओल पर देख सके ऐसा नियंत्रित आदान-प्रदान 'फेसबुक' में संभव बनाया।

बस, इसी सुरक्षा की व्यवस्था के कारण ‘ओरकुट’ का उपयोग करनेवाले सभी ‘फेसबुक’ पर आ गये और मार्क जुकरबर्ग शीघ्र ही लोकप्रिय और धनवान बन गये। उसने ‘फेसबुक’ पर आने वाले प्रसिद्ध लोगों की पब्लिसिटी भी की।

मार्क जुकरबर्ग का गुरुमंत्र है —

“लोगों को नित्य कुछ नया देते रहो,
जो सुरक्षायुक्त भी हो,
तो वे उसे अधिक पसंद करेंगे।

कुछ नया दो और
उसमें और नई चीजों को
शामिल करते जाओ।”

23. डॉ. किरण मजुमदार



डॉ किरण मजुमदार का जन्म मार्च 1953 में बंगलुरु में हुआ था। स्रातक को पढ़ाई उन्होंने बंगलुरु में ही की और ऑस्ट्रेलिया से उन्होंने ब्रू मास्टर की डिग्री पाई। उन्होंने विदेश में नौकरी भी की लेकिन भारत में बायोटैस्नोलॉजी पर आधारित उद्योगों को नींव डालना, उनका एक सपना था, इसलिए वे विदेश की नौकरी छोड़कर भारत लौट आईं।

29 नवम्बर, 1978 के दिन उन्होंने अपने माता-पिता के सहयोग से सिर्फ 10,000 रुपयों की अल्प पूँजी से अपने गैरेज में 'बायोकोन इंडिया' कंपनी को स्थापना की। बायोकोन भारत की प्रथम बायोटैक्वोलॉजी कंपनी थी जो किरण के लिए तृफानी समंदर पार करने जैसा साहस था।

डॉ किरण मजुमदार ने अपने उद्योग का विस्तार करने के लिए कई बैंकों से लोन लेने की कोशिश की लेकिन किसी बैंक ने उन्हें लोन नहीं दिया क्योंकि उस समय बायोटैस्नोलॉजी क्षेत्र भारत के लिए नया था और दूसरी बात उनके पास तब अमानत रखने के लिए कोई जमीन-जायदाद नहीं थी और तीसरी बात वह एक औरत थी। उस जमाने में औरत नौकरी करे, वहाँ तक ठीक माना जाता था, लेकिन वो अपना व्यवसाय करें वैसी लोगों की सोच नहीं थी।

दूसरी मुसीबत उनके लिए यह थी कि वे एक औरत थी, इसलिए स्त्री बॉस के कारोबार में और वो भी एक गैरेज में काम करने के लिए कोई आदमी तैयार नहीं था। परंतु ऐसी कई मुसीबतों को मात देकर आज डॉ. किरण मजुमदार 'बायोटेक क्वीन' मानी जाती है। उनकी कंपनी को पहला ऑर्डर आयलेंड की कंपनी की ओर से मिला।

उनकी कंपनी 'बायोकोन' टैक्नोलॉजी में भारत की सबसे बड़ी कंपनी है। बायोकोन को जब शेयर बाजार ने रजिस्टर किया, तब एक ही दिन में किरण अरबपति और भारत की सबसे अधिक धनवान महिला बन गई थी।

आज उनकी संपत्ति 1 अरब डॉलर अंकित की गई है।

उन्होंने बैंगालुरु में 1400 बेड का ‘मजुमदार शॉ’ नामक कैन्सर अस्पताल बनाया है।

‘टाइम मैगज़ीन’ के मुताबिक दुनिया के ‘100 चौटी के प्रभावी’ लोगों की सूची में उनका नाम शामिल है और फोब्स के अनुसार ‘100 पॉवरफुल वुमन’ में भी उनका स्थान है।

24. अज्जीम प्रेमजी



अज्जीम प्रेमजी का जन्म 25 जुलाई, 1945 में करांची में हुआ था। उनको 1966 में कैलिफोर्निया की स्टेन्कर्ड युनिवर्सिटी कि कम्प्यूटर की पढ़ाई छोड़ कर 21 साल की उम्र में वापस भारत लौटना पड़ा। उनके पिताजी ने उन्हें विरासत में 7 करोड़ की कंपनी दी थी, जो वनस्पति धी, तेल और कपड़े धोने का साबुन बना रही थी।

21 साल के प्रेमजी को, व्यवसाय के क्षेत्र का बिलकुल अनुभव नहीं था। वे खुद कहते हैं कि, “मैं इस के लिए बिलकुल तैयार नहीं था। मेरे पास सिर्फ एक ही स्वप्न था कि मुझे एक बड़ी कंपनी बनानी है।”

उन्होंने अपने धी, तेल साबुन बनाने के व्यवसाय में बहुत वृद्धि की। साथ ही साथ एक बड़ी कंपनी बनाने के सपने के साथ 1980 में आइ.टी.क्षेत्र में प्रवेश किया।

1991 में उनको एक जब्बरदस्त मौका मिला। भारत सरकार ने अमेरिका की आई.बी.एम. कंपनी के भारत में व्यापार करने पर प्रतिबंध रख दिया। एक बिज़नेस मेन के नाते अज्जीम प्रेमजी यह मौका अपने हाथ से गँवाना नहीं चाहते थे। उनको पता था कि आई.बी.एम. के जाने के बाद भारत में आइ.टी.क्षेत्र में बहुत बड़ी संभावनाएँ हैं। उन्होंने ‘विप्रो’ कंपनी के नाम से हार्डवेयर और सोफ्टवेर क्षेत्र में काम करना शुरू किया। उस समय भारत में बहुत ही कम कंपनियाँ इस क्षेत्र में कार्यरत थीं, लेकिन अज्जीम प्रेमजी की दूरदर्शिता ने उनको यह जब्बरदस्त कामयाबी दिलाई।

अज्जीम प्रेमजी को शादी यास्मिन के साथ हुई और उनके दो बच्चे रशीद और तारीक हैं। रशीद की शादी अदिति के साथ हुई है।

अज्जीम प्रेमजी ने अपने व्यवसाय का प्रसार करने के लिए वैश्विकीकरण की नीति अपनाकर दूसरी कंपनियों को खरीदकर अपनी स्थिति मज़बूत बनाई।

आई.टी. के बाद बी.पी.ओ. क्षेत्र की संभावनाएँ परखकर, उसमें भी अपना नसीब आजमाया। आजकल ‘विप्रो’ कई अमेरिकन और युरोपियन कंपनी की आधारशिला है।

हाल ‘विप्रो’ में 27,200 से भी ज्यादा लोग काम करते हैं। उनकी कंपनी का एक सिद्धांत है, कि “रिश्तत लेनी नहीं और देनी भी नहीं।” अज्ञीम प्रेमजी को पद्मभूषण से सन्मानित किया गया है। उनका जीवनमंत्र है — सिर्फ देश में नहीं समग्र विश्व में श्रेष्ठ बनिये। उन्होंने ‘विप्रो’ कंपनी को 1.5 मिलियन डॉलर में से 16.8 बिलियन डॉलर की बना दी।

‘अज्ञीम प्रेमजी फाउन्डेशन’ एज्युकेशन के कई कार्य करते हैं। 2010 दिसम्बर में उन्होंने 10,000 करोड़ का डोनेशन दिया था।

गरीब रहना पाप है,
और
धनवान बनना पुण्य है।

III

धनवान बनने के
लाभ, पात्रता,
सिद्धांत और
रहस्य!

1. लोग धनवान क्यों नहीं बनते?

आप थोड़ी देर के लिए इस किताब को पढ़ना बंद करके कम से कम दस व्यक्तियों से यह सवाल पूछिये कि आपको अखबपति बनना है? मुझे यकीन है कि प्रत्येक व्यक्ति उत्तर ‘हाँ’ में ही देगा। और यदि सवाल आप सौ व्यक्तियों से पूछेंगे तो 100 प्रतिशत व्यक्ति भी इसका ज़वाब ‘हाँ’ में ही देंगे। हाँ, यदि यही सवाल हजार लोगों से पूछेंगे तो शायद उनमें से किसी एक-दो विरले व्यक्ति ऐसे निकलेंगे कि जो इकार करेंगे और वे अपवाद रूप होंगे। यदि हमारी बात पर आपको विश्वास ना हो तो आप प्रयत्न करके देखिये।

इसका मतलब यह हुआ कि पृथ्वी के हर मनुष्य की मूलभूत इच्छा धनवान बनने की ही होती है। मगर हकीकत यह है कि हर एक व्यक्ति धनवान नहीं बन सकता, खास करके अपने देश में।

इच्छा होने पर भी नतीजा नहीं मिलने के कारण हमने हमारे रीसर्च से ढूँढ निकालें हैं, जो निम्नलिखित हैं...

- A. धनवान बनने की इच्छा की प्रबलता कम पड़ती है।
- B. मन की प्रोग्रामिंग गलत हुई होती है।
- C. धनवान बनने के लिए जितनी मेहनत करनी पड़े, उतनी मेहनत करने के लिए तैयार नहीं होते हैं।
- D. धनवान बनने के वैज्ञानिक नियमों के ज्ञान का अभाव होता है।
- E. धन के निवेश के ज्ञान का अभाव होता है।

A. धनवान बनने की इच्छा की प्रबलता कम पड़ती है:

अंग्रेजी में एक शब्द है Wish और दूसरा शब्द है Burning Desire, जिन्हें हिन्दी में इच्छा और अदम्य इच्छा कहते हैं। शायद अब आप इच्छा और अदम्य इच्छा के बीच का फर्क समझ गये होंगे।

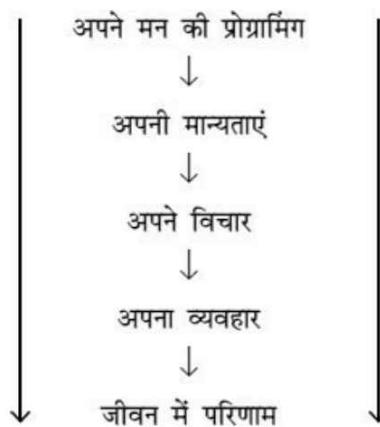
कुछ लोगों को धनवान बनना है मगर वे सिर्फ इच्छा ही करते हैं। वे अपनी इच्छा को अदम्य इच्छा में बदलते नहीं।

धनवान बनने के लिए सबसे प्रसिद्ध पुस्तक ‘सोचीए और धनवान बनीए’ - “Think and Grow Rich” (नेपोलियन हिल) में सर्वप्रथम चैप्टर इसी संदर्भ पर है।

B. मन की प्रोग्रामिंग गलत हुई होती है :

अपनी जिंदगी का परिणाम अपने व्यवहार से प्राप्त होता है। अपना व्यवहार अपने विचार में से उत्पन्न होता है। अपने विचार अपनी मान्यताओं में से आते हैं। अपनी मान्यताओं अपने मन के प्रोग्रामिंग की ही एक उत्पत्ति है।

जीवन में परिणाम नहीं मिले या गलत मिले वह हमारे किये हुए गलत प्रयत्नों के ही कारण है। यह गलत प्रयत्न और गलत व्यवहार, गलत विचारों में से ही आये हैं। गलत विचार गलत मान्यता का ही कारण है, गलत मान्यता गलत प्रोग्रामिंग के कारण होती है।



जो लोग गरीब हैं, वे धनवान बनने के गलत प्रयत्न और धनवान बनने के गलत विचारों के कारण हैं। यह गलत विचार, धन और धनवान बनने की गलत मान्यताओं का ही नतीजा है। जो धन के बारे में गलत प्रोग्रामिंग का निर्देश करते हैं। यह बात रोबर्ट कियोसाकी ने अपनी पुस्तक, 'रीच डेड पूअर डेड' - 'Rich Dad Poor Dad' में अच्छी तरह से समझाई है। आइए इस बात को मिसाल के तौर पर समझते हैं।

“पैसा किसी पेड़ पर नहीं उगता।”

“पैसा हाथ का मैल है।”

“पैसा सारे झगड़े का कारण है।”

“गलत काम करके ही धनवान बन सकते हैं।”

“धन दुरुणों को खींच लाता है।”

“लक्ष्मी जी की पूजा के बिना धनवान नहीं बन सकते।”

“धन की रेखा नहीं तो धन नहीं मिलता।”

“मेरे नसीब में पैसा ही नहीं है।”

“माता-पिता धनवान हो तो ही धनवान बन सकते हैं।”

उपर्युक्त विधानों से हमें क्या सूचीत होता है? यह सभी विधान पैसों के बारे में लोगों की मान्यताएँ सूचीत करते हैं। उपर्युक्त मान्यता सही है या गलत ऐसा प्रश्न यदि पूछा जाये तो कई लोग कहेंगे हां यह सही मान्यताएँ है और कई लोग कहेंगे कि यह गलत मान्यताएँ है। दरअसल बात यह है कि मान्यता

कभी सही या गलत नहीं होती। उस व्यक्ति के लिए तो अपनी मान्यता हमेशा सही होती है।

मान्यता कैसे बनती है यह आप जानते हैं? किसी भी बात या विचार को हम सत्य मानकर स्वीकारते हैं तब वो मान्यता बन जाती है। वैसे उपर्युक्त सभी विधान किसी के विचार थे। जिन्होंने इन विधानों को सत्य मानकर स्वीकार किया, वे सब विचार उस व्यक्ति की मान्यता बन जाती है।

हमें यह देखने की जरूरत नहीं है कि कौन सी मान्यता सही है या गलत। लेकिन यह देखने की आवश्यकता है कि उस मान्यता का असर हमारे जीवन में क्या परिवर्तन लाता है। जो मान्यता हमें नकारात्मक परिणाम दे उसे ‘Disempowering Belief’ मतलब कि शक्तिनाशक मान्यता कहते हैं और जो मान्यता हमारे जीवन में सकारात्मक परिणाम लाती है उसे शक्तिवर्धक मान्यता यानि कि Empowering Belief कहते हैं।

आगे लिखी हुई मान्यताओं की सूची देखकर आप तय कीजिए कि यह मान्यताएँ कैसी है, शक्तिवर्धक है या शक्तिनाशक? उन मान्यताओं के साथ जीने वाले लोग धनवान होंगे या गरीब? आप अपने आप में खोजिये कि आप इन सभी में से किसी मान्यता के धारक हो या नहीं।

हमारे कई सालों के अनुभव में लोगों से बात करने पर हमें कई ऐसी मान्यताएँ ज्ञानने को मिली कि जो सचमुच मनुष्य को धनवान बनने से रोकती है। आइए, ऐसी ही कुछ मान्यताएँ हम देखें।

1. मेरा अच्छे और बड़े लोगों से संपर्क नहीं है

ऐसे कई लोगों को मैं ज्ञानता हूं जो इस मान्यता के साथ जीते हैं कि पैसा कमाने के लिए हमें बहुत बड़े लोगों से संपर्क होना जरूरी है, जो मेरे पास नहीं है। फिर मैं धनवान कैसे बन सकूंगा? जो लोग ऐसी मान्यता के साथ जीते हैं वे कभी धनवान बनने की कोशिश नहीं करते, इसलिए वे धनवान नहीं बन सकते।

क्या आप जानते हैं कि धीरुभाई अंबाणी जब एडन से हिन्दुस्तान वापस लौटे तब उनके पास कोई बड़ी पहचान या संपर्क नहीं था।

आगे जिन धनवानों के बारे में लिखा गया है उनमें से अधिकतर लोग इस कक्षा में आते हैं जिनकी शुरू में किसी बड़े लोगों के साथ कोई पहचान नहीं थी।

आप किसको जानते हैं, या पहचानते हैं, उसका इतना महत्व नहीं, जितना आपको जिस निश्चित मंजिल पर पहुँचना है, उसके लिए आपको जिस व्यक्ति की जरूरत है, उसकी पहचान या संपर्क के लिए आज आप क्या प्रयत्न कर रहे हैं, वो बात ज्यादा महत्व की है।

1998 में दीपक ने डॉ. जितेन्द्र अदिया का माइन्ड पॉवर का प्रोग्राम मुंबई में कांदिवली में किया था तब डॉ. अदिया से प्रभावित होकर उन्हें डॉ. अदिया से मिलने की और उनसे दोस्ती करने की इच्छा हुई थी।

जिसके फलस्वरूप वे 2009 में लोनावाला स्थित डॉ. अदिया के ट्रेनर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम में शामिल हुए। वहाँ 10 दिनों में एक दूसरे के बहुत करीब आये।

बाद में दोनों ‘बाली’ इन्डोनेशिया में एथ्नी रोबिन्स के 6 दिनों के ‘Date with Destiny’ प्रोग्राम में भाग लेने साथ में गये और इसी परिचय की वजह से ही इस पुस्तक का जन्म हुआ और वर्कशॉप करने का निर्णय लिया। हमारे इसी तरह के प्रयत्न, कामयाबी और धन को सहज खींच लाते हैं।

2. मुझे मेरे हालातों ने धनवान नहीं बनने दिया

ऐसे लोग भी होते हैं कि जिन्हें आप पूछें कि तुम धनवान क्यों नहीं बन पाये तो शीघ्र ही उत्तर देंगे कि मेरे हालात ही ऐसे थे और आज़ भी ऐसे हैं, जिसकी वजह से मैं धनवान नहीं बन पाया। इन हालात यानि कि बचपन की गरीबी, शैक्षणिक अभाव, माता-पिता का स्वभाव, घरेलू झगड़े, मार्गदर्शन का अभाव, शारीरिक कमजोरी ऐसे कई सारे कारण अधिकतर लोग देते हैं।

यदि आप धनवान लोगों की जीवनकथा पढ़ेंगे तो आपको मालूम पड़ेगा कि इनमें से अधिकतर लोगों ने ऐसी कठिन परिस्थितियों का सामना, अपने जीवन में कभी न कभी तो किया था। मिसाल के तौर पर धीरुभाई अंबाणी की पढ़ाई कम थी। स्टीफन होकिन्स को शारीरिक पंगुता इतनी है कि आँख के अलावा उनके शरीर में कोई भी अंग काम नहीं कर रहा है। अब्राहम लिंकन की पत्नी खूब झगड़ालू थी और उनको बहुत सताती थी। लता मंगेशकर सिर्फ एक दिन के लिए ही स्कूल में गई थी। वॉरन बफेट को उम्र कम होने के कारण हावर्ड युनिवर्सिटी ने प्रवेश देने से इन्कार कर दिया था।

हम दोनों लेखक भी प्रतिकूल हालातों में से ही आगे बढ़कर सफल हुए हैं और धनवान बनें हैं। सचमुच तो प्रतिकूल हालातों से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए, कि यदि मैं धनवान बनूंगा तो मेरे बच्चों को ऐसे हालातों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

3. मुझ में आत्मविश्वास का अभाव है

लोगों को ऐसी बात करते हुए हमने सुना है कि धनवान बनने के लिए बड़ा उद्योग या व्यवसाय करना पड़ता है। बड़ा साहस करना पड़ता है। इतना बड़ा साहस करने का आत्मविश्वास मुझ में नहीं है, इसलिए मैं धनवान नहीं बन सकता।

दोस्तों, हम दोनों में भी बचपन में आत्मविश्वास का अभाव था। लेकिन जीवन में सफल होने की और ‘धनवान बनने की तीव्र इच्छा ने हमें ऐसे रास्ते

दिखाये कि हमने हमारा खोया हुआ आत्मविश्वास वापस पा लिया। आप में अभी आत्मविश्वास का अभाव है, यह एक हक्कीकत है परंतु खोया हुआ आत्मविश्वास फिर से हासिल किया जा सकता है और बढ़ाया जा सकता है यह भी एक हक्कीकत है।

आत्मविश्वास बढ़ाने की टेक्नीक एन.एल.पी. (न्युरो लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग) में है जिसे 'सर्कल ऑफ कोम्पिउटेंस' कहते हैं यह टेक्नीक जब हम अपने माइक्रो पॉवर वर्कशॉप में सिखाते हैं तब लोगों का आत्मविश्वास बहुत बढ़ जाता है। जिसे कराने के बाद लोगों को हम काँच के टुकड़ों पर या अग्नि पर खुल्ले पर चलाते हैं। जिस पर सभी लोग हिम्मत से चलते हैं। इस वर्कशॉप को करने के कुछ समय के बाद जब लोग हमें मिलते हैं तब बताते हैं कि सर, आपका प्रोग्राम करने के बाद जो हमारा आत्मविश्वास बढ़ा है वो हमें जिदगी के हर कदम पर काम आता है।

4. धनवान बनने के लिए अब बहुत देर हो चुकी है

हमने ऐसे लोगों को भी देखा है जो कहते हैं कि सर, मेरी आधी जिंदगी खत्म हो गई। धनवान बनने का समय अब निकल चुका। अब मैं क्या कर सकता हूँ?

दोस्तों, आप 'KFC' यानि कि केन्टुकी फ्राईड चिकन वाले कोलेनल सेन्डर्स के बारे में जानते हो? उनकी तस्वीर हर KFC के रेस्टोरेंट के ऊपर होती है। उनकी धनवान बनने कि शुरुआत 65 साल के बाद हुई थी। उनकी KFC की फ्रेन्चाईजी देने के लिए उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि फ्रेन्चाईजी नहीं बेचूँगा तब तक मैं घर पर लौटूँगा नहीं। उन्होंने 65 साल की उस में अपनी रेसिपी लेकर अमेरिका के हर रेस्टोरेंट के मालिक को मिलना शुरू किया। 999 लोगों ने इन्कार किया फिर भी ना तो वे हिम्मत हारे ना उनको थकान लगी। अपने प्रयत्न उन्होंने जारी रखे। बाद में उनको प्रथम बार सफलता मिली और पूरे विश्व में वे छा गये और धनवान भी बन गये। दोस्तों, यह बात याद रखिये कि उनको प्रथम सफलता 65 साल के बाद मिली थी। यह इस बात का प्रमाण है कि धनवान बनने के लिए हम किसी भी उम्र में प्रयत्न कर सकते हैं।

5. मैं असफलता से डरता हूँ

उपर हमने देखा कि KFC के मालिक कोलेनल सेन्डर्स को कई असफलताओं के बाद सफलता मिली थी। थोमस ऑल्वा एडिसन ने कितनी असफलता के बाद बिजली के बल्ब की खोज की थी, वो आप सब जानते ही हैं।

हेनरी फोर्ड को कितनी असफलता के बाद गाड़ी के “T” मोड़ेल द्वारा सफलता मिली, वो आपको भी पता है। ठीक उसी तरह अब्राहम लिंकन कई बार पराजित होने के बाद ही चुनाव जीते थे, वो बात भी इतनी ही जगप्रसिद्ध है।

दोस्तों, आपने कहावत तो सुनी होगी कि, ‘डर के आगे जीत है।’ डर भी मन का एक प्रोग्रामिंग है जिसे हम बदल सकते हैं। थोड़ा बहुत डर तो जरूरी है लेकिन वो डर जब हमारे सकारात्मक अभिगम का विरोध करें तब उसे जीतना बहुत आवश्यक है। वही इन्सान हीरो बन सकता है जो डर लगने के बावजूद भी आगे कदम बढ़ाता है और जीत के दिखाता है।

6. मेरे पास समय नहीं है

हाल में बाज़ार में स्व-विकास की जितनी किताबें बिकती हैं, उसमें सबसे अधिक शायद ‘धनवान कैसे बनें?’, उसके बारे में ही होती है। हमारे दृष्टिकोण से तो यह सभी किताबें हमें धनवान बनने के लिए काफ़ी मार्गदर्शन देने के लिए पर्याप्त हैं। उसके अलावा धनवान बनने के लिए कई सारे सेमिनार और वर्कशॉप का आयोजन भी हर एक शहर में किया जाता है।

हमारे धनवान बनने के वर्कशॉप में जब हम लोगों से पूछते हैं कि, “आपने ‘रिच डेड, पुअर डेड’ या तो ‘सोचिये और धनवान बनिये’ यह किताबें पढ़ी हैं?” तो अधिकतर लोग इन्कार करते हैं और नहीं पढ़ने का एक ही कारण देते हैं कि पुस्तक पढ़ने का हमारे पास समय ही नहीं है।

हम जब हमारे रिश्तेदारों को या मित्रों को हमारे वर्कशॉप में फ्री आने का आमंत्रण देते हैं तो वे आते ही नहीं और जब न आने का कारण पूछा जाता है, तो उनका एक ही स्टैन्डर्ड सा ज़्याब रहता है, समय का अभाव।

दोस्तों, समय के अभाव के कारण आप पढ़ नहीं सकते या सीख नहीं पाते यह आपकी एक गलत मान्यता है। यदि भारत के हाल के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रमार्ड मोदी पढ़ने के लिए समय निकाल सकते हैं, श्री नारायण मूर्ति को यदि पढ़ने के लिए समय मिलता है, डॉ. ए.पी.जे, अब्दुल कलाम यदि पढ़ने के लिए टाइम निकाल सकते हैं तो क्या आप इन सबसे भी अधिक व्यस्त हैं कि आप पढ़ने के लिए समय ना निकाल सकें?

क्या आपने ‘जीप’ वाले आनंद महेन्द्र का नाम सुना है? वे 50 से भी ज्यादा कंपनियाँ चलाते हैं फिर भी मैरेथोन दौड़ के लिए समय निकालते हैं। यह बात साबित करती है कि लोगों के पास हक्कीकत में समय की कमी नहीं होती, संकल्प का अभाव रहता है। यदि आपका धनवान बनने का इरादा दृढ़ होगा या आपने यह बात ठान ली होगी तो आपको पढ़ाई और ट्रेनिंग प्रोग्राम के लिए समय मिलेगा ही।

7. ऐसी परिस्थिति में, मैं कैसे धनवान बन सकूँगा?

कुछ लोग कहते हैं कि आजकल अच्छे लोगों का जमाना ही नहीं रहा। चारों और प्रष्टाचार और रिश्वत का ही माहौल है। बाज़ार में बहुत मंदी है, सरकार के नियम भी कुछ ऐसे हैं, बेशुमार प्रतियोगिताएँ हैं, डुप्लिकेट का जमाना है, चाईना माल की बोलबाला है। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति कैसे नया साहस करके धनवान बन सकेगा. . . ?

दोस्तों, बायोकोन इन्डिया कि डॉ. किरण मजुमदार को याद कीजिए। कितनी विकट परिस्थितियों का सामना करके उन्होंने अपना उद्योग साम्राज्य खड़ा किया और धनवान बनीं, यह आप आगे पढ़ चुके हैं। इसके लिए आपको अपनी मान्यता बदलनी ही पड़ेगी।

धीरुभाई अंबाणी ने इस परिस्थिति के बीच में रहकर ही अपना औद्योगिक साम्राज्य खड़ा किया था। ठीक वैसे ही प्रेम गणपति की जीवनयात्रा भी हमें इसी बात का ज्वलंत उदाहरण दे रही है।

8. मैं सब कुछ जानता हूँ

हम ऐसे कई लोगों को मिले हैं, जो कहते हैं कि, “धनवान कैसे बनना, वो आपसे ज्यादा हम अच्छी तरह से जानते हैं।” लेकिन वे खुद धनवान नहीं होते। यदि उनको सचमुच धनवान बनने के हर रास्ते का पता है तो उन्हें धनवान बनने के लिए कौन रोकता है? क्या उनको धनवान बनने की इच्छा नहीं है?

दोस्तों, हक्कीकत तो यह है कि धनवान बनने की उनके पास जो ज्ञानकारी है उस ज्ञानकारी के अनुसार ही जिंदगी जीकर वे अपनी परिस्थिति पर पहुँचे हैं। लेकिन उनको आगे कुछ सीखने की इच्छा न होने के कारण वे ऐसा एटिट्युड रखते हैं कि मैं सब कुछ जानता हूँ। जिसकी वजह से वे अधिक धन नहीं कमा सकते।

C. धनवान बनने के लिए जितनी मेहनत की आवश्यता हो उतनी मेहनत करने के लिए तैयार नहीं है

आगे दर्शाई गई धनवानों की सूची में से किसी भी व्यक्ति की जीवनकथा यदि आप पढ़ेंगे तो आप एक समानता जरूर देख पाएँगे कि उन्होंने रोजाना 16 से 18 घंटों तक मेहनत की थी। उनमें से कोई एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सुबह के 10 बजे से शाम 6 बजे तक की नौकरी करके धनवान बने हो।

दरअसल उनकी धनवान बनने की मेहनत, जब अधिकतर लोगों के काम की अवधि खत्म होती है, तब शुरू होती है, यानि कि शाम के 6 बजे के बाद ही।

इतने साल के अनुभव को ध्यान में रखकर हमने यही जाना है कि जो लोग धनवान बनना चाहते हैं और कड़ी मेहनत नहीं करना चाहते, वे लोग कभी धनवान नहीं बनते।

आप अपने आप से प्रश्न पूछिये कि आप धनवान बनने के लिए रोज़ कितनी मेहनत करते हैं? कौन सी दिशा में करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर आपको, आपके जीवन की वर्तमान आर्थिक परिस्थिति का कारण बता देगा।

D. धनवान बनने के लिए आवश्यक वैज्ञानिक नियमों के ज्ञान का अभाव

आपने अपने आसपास के कई लोगों को हर रोज 15-16 घंटे तक कड़ी मेहनत करते हुए देखा होगा फिर भी वे आर्थिकरूप से मजबूत नहीं बन पाते। उनके सामने उतनी ही मेहनत करने वाला कोई अन्य व्यक्ति करोड़ों रुपये कमाता होगा। क्या फर्क है इन दोनों की मेहनत में?

प्रथम ग्रुप के लोग बिना सोचे-समझे सिर्फ मेहनत करते हैं। पैसों का विज्ञान वे नहीं जानते। उनके जीवन का सिर्फ एक ही सूत्र है, पैसे कमाने के लिए खूब मेहनत करो।

जब की दूसरे ग्रुप के लोग भी इतनी मेहनत करते हैं लेकिन उनकी मेहनत योग्य रीत के साथ-साथ योग्य दिशा की भी होती है और जाने अनजाने में वे धनवान बनने के नियमों का पालन करते हैं।

क्या आप इन नियमों को जानते हैं? यदि नहीं जानते तो क्या आपने यह नियमों को ज्ञानने कि कोशिश की है? इन सभी सवालों का जवाब आपको अपने आप से मिल जाएगा।

E. धन निवेश के ज्ञान का अभाव

इस पुस्तक के लेखक डॉ. जितेन्द्र अद्धिया ने 1985 से 1991 तक साउदी अरेबिया में सरकारी अस्पताल में डॉक्टर के तौर पर सेवा दी है। 6 साल की उनकी नौकरी के अंतर्गत उन्होंने बहुत पैसे कमाये और बाद में भारत लौटकर, 1991 में अहमदाबाद में स्थायी हो गये। उस समय उनके पास करीब 30 लाख रुपये की पूँजी जमा हुई थी।

यह पैसा यदि अमहदाबाद के अच्छे विस्तार की जमीन में लगाते तो आज उसकी कीमत शायद 100 करोड़ रुपये हो गई होती। लेकिन डॉ. अद्धियाने उस समय शेयर मार्केट में लगाये। तब हर्षद महेता वाली तेज़ी चल रही थी, और उस तेज़ी के दौरान खरीदे हुए शेयर की कीमत एक साल में ही 3 लाख रुपये हो गई। ऐसा क्यों हुआ?

डॉ. अद्धिया के पास मेडिकल ज्ञान तो बहुत था, लेकिन यह मेडिकल ज्ञान द्वारा कमाई हुई धनराशि को कहाँ और कैसे निवेश करें वह ज्ञान बिलकुल नहीं था। उसकी वज़ह से उनके मेहनत से कमाये 30 लाख रुपये के 3 लाख हो गये।

यदि उस समय उनके पास पैसों के निवेश का ज्ञान होता तो शायद आज वे 100 करोड़ के मालिक होते।

डॉ. अदिया के जैसे दुनिया में कई व्यावसायिक लोग हैं जो अपने व्यवसाय से हर महीने अच्छा खासा कमा लेते हैं लेकिन धन के निवेश के ज्ञान के अभाव के कारण वे अपने धन की उतनी वृद्धि नहीं कर पाते जितनी होनी चाहिए।

इसके लिए हर किसी व्यक्ति को यह ज्ञान पाना जरूरी है, जो पुस्तकें और सेमिनार के माध्यम से मिल सकता है।

2. धनवान बनने के लाभ

ईश्वर ने हर एक मनुष्य के भीतर जो इच्छा नाम की चीज रखी है वह मनुष्य के लिए चालक बल का काम करती है, और वो ही मनुष्य को जानवर से अलग पहचान देती है। आप भी याद कीजिए बचपन से लेकर आपने कितनी इच्छाएँ की होगी?

- बहुत पढ़ाई करके बड़ी उपाधि हासिल करूंगा।
- मेरे सपनों का घर बनाऊँगा।
- बहुत बड़ा बिज़नेस / नौकरी करूंगा।
- पूरी दुनिया की सैर करूंगा।
- मेरे पास मेरी पसंद की गाड़ी होगी।
- समाज में खूब नाम और इज्जत कमाऊँगा।
- मेरे माता-पिता को सबसे अच्छी तीर्थ यात्रा कराऊँगा।
- मेरे परिवार और दोस्तों को सदा खुश रखूँगा।
- बड़ी धूमधाम से मेरी शादी करूंगा।
- मेरे जीवनसाथी की हर एक इच्छा पूरी करूंगा।
- मेरे बच्चों को सबसे अच्छी स्कूल और कॉलेज में पढ़ाऊँगा। उनको विदेश में पढ़ाई के लिए भेजूँगा।

उपर्युक्त इच्छाओं की जो सूची है वह प्रायः अधिकतर लोगों के लिए सामान्य है।

इस इच्छाओं का आपने भी अनुभव किया होगा। मतलब, आपकी सोच में भी यही सब इच्छाएँ रही होगी?

अब सोचिये कि यह सभी इच्छाएँ पूरी करने के लिए एक सबसे महत्वपूर्ण चीज कौन सी है, जो अनिवार्य है?

मिल गया ज़्याब आपको?

उस चीज़ का नाम है, धन। उपर्युक्त इच्छाओं के अलावा दिनभर हमें छोटी - मोटी कई सारी इच्छाएँ होती हैं। उन सभी इच्छाओं को पूरी करने के लिए हमको धन की आवश्यकता है।

इस पुस्तक को खरीदने के लिए भी आपको धन की जरूरत पड़ी होगी। हमारे धन विषयक परिसंवाद (सेमिनार) या वर्कशॉप अटेन्ड करने के लिए फिर से आपको धन की जरूरत पड़ेगी।

अब तो आप समझ ही गये होंगे, कि हमारे जीवन में धन का क्या महत्व है और आपको क्यों धनवान बनना ही चाहिए।

लोग कहते हैं धन से सब कुछ नहीं होता है।
मगर हम कहते हैं कि धन से बहुत कुछ होता है।

3. धनवान बनने की पात्रता

यदि आपको डॉक्टर बनना हो तो आपको बारहवीं कक्षा सायन्स में निश्चित नम्बर लाने पड़ते हैं। अच्छी नौकरी पाने के लिए योग्य उपाधि या पात्रता की आवश्यकता चाहिए। ठीक उसी तरह धनवान बनने के लिए व्यक्ति में योग्य प्रकार की पात्रता होनी चाहिए।

आइए, देखें कि वह पात्रता क्या है:

- A धनवान बनने की अदम्य इच्छा। - Burning Desire
- B धनवान विषयक सकारात्मक मान्यताएँ।
- C धनवान बनने के लिए परिश्रम करने की तैयारी।
- D धनवान बनने के लिए आवश्यक सिद्धांतों और नियमों का ज्ञान।
- E सकारात्मक मानसिक अभिगम (पोजिटिव मेन्टल एटिट्युड)

चलिए इन सब को सविस्तार समझते हैं.....

A. धनवान बनने की अदम्य इच्छा

पिछले प्रकरणों में हमने देखा कि सामान्य इच्छा और अदम्य इच्छा (ओर्डिनरी इच्छा और बर्निंग डिज़ायर) में बहुत फर्क है। जो लोग अपने बल बूते पर धनवान बने हैं, मतलब, ज़ीरो से हीरो बने हैं, उन सभी लोगों में एक बात कॉमन थी। सब लोगों ने धनवान बनने की अदम्य इच्छा अपने भीतर पैदा की थी। आप अपने आप से पूछिये कि आपको धनवान बनने की सिर्फ सामान्य इच्छा है, या वह इच्छा, अदम्य इच्छा के स्तर तक पहुँच गई है।

B. धनवान विषयक सकारात्मक मान्यताएँ

विश्व में जितने भी लोग धनवान बने हैं, उनमें से कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं मानता कि, ‘धन हाथ का मैल है’ या ‘धन की वजह से दुर्गुण आते हैं।’ आगे दी गई नकारात्मक मान्यता की सूची में से एक भी मान्यता के धारक वे नहीं थे। धनवान बनने के लिए कैसी सकारात्मक मान्यता होनी चाहिए, चलिए हम देखते हैं:

- धनवान बनना पुण्य का काम है।

- धन ही सुख और शांति दे सकता है।
- धनवान भी गुणवान होते हैं।
- धन-दौलत से ही सच्ची समाजसेवा -देशसेवा हो सकती है।
- धन-दौलत अच्छे काम के लिए जरुरी है।
- पैसे के बिना कोई भी व्यवहार संभव नहीं है।
- धनवान बनना बहुत ही आसान है।
- मैं जितना चाहूँ, उतना धन कमा सकता हूँ।
- सारी विश्वशक्ति मुझे धनवान बनाने के लिए बेताब है।
- धनवान व्यक्ति ही सच्ची आध्यात्मिकता पा सकता है।
- कुदरत के सभी नियमों और सिद्धांतों का पालन करके हम धनवान बन सकते हैं।
 - धनवान बनने की मेरी बहुत प्राप्तता है।

उपर्युक्त सभी मान्यताएँ हमें धनवान बनने में काफी मदद करती हैं। आप जाँचिये कि आप में उपर्युक्त कौन सी मान्यताएँ हैं।

C. धनवान बनने के लिए परिश्रम करने की तैयारी

हमने पिछले प्रकरणों में देखा कि पैसे आसमान से नहीं टपकते, उसके लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। क्या आप धनवान बनने के लिए 12-14 घंटे काम करने के लिए तैयार हैं? यदि आप तैयार नहीं हो तो हमारा आपको यही सुझाव है कि धनवान बनने का विचार छोड़ दीजिये, क्योंकि कर्म का सिद्धांत है कि, ‘बिना किये कुछ नहीं मिलता और किया हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता।’

D. धनवान बनने के लिए आवश्यक सिद्धांतों और नियमों का ज्ञान

अंग्रेजी में एक कहावत है कि “You don’t have to re-invent a wheel”।

धनवान बनने के कुछ नियम और सिद्धांत हैं। आगे जो लोग धनवान बन चुके हैं उन्होंने अनायास ही उन्हें ढूँढ़ निकाले हैं। बस, उन नियमों और सिद्धांतों को आपको सीखना है और उसका पालन करना है।

आपने शायद अमिताभ बच्चन की मि. नटवरलाल फिल्म देखी होगी। जिसमें अमज्जद खान गाँव के लोगों को नियंत्रण में लेकर, एक जगह कैद करता है। उन्हें छुड़ाने के लिए अमिताभ बच्चन या कोई अन्य उन तक पहुँच ना पाये इस लिए रास्ते में वह सुरंगे बिछा देता है।

अमिताभ बच्चन अपनी ज्ञान की बाज़ी खेलकर अपनी समझ के मुताबिक कदम रखते हुए गाँव के लोगों तक पहुँच जाता है और सबको कैद से रिहा करता है। यह सभी लोग, लौटते समय, सुरंगों के डर से अमिताभ के नक्शे-कदम पर चलते हुए सुरक्षित बाहर आ जाते हैं।

ठीक उसी तरह हमारे पहले, काफ़ी धनवानों ने अपनी समझ से और अपने बलबूते पर धनवान बनने के रास्ते ढूँढ़ निकाले हैं। हमें उन्हीं रास्तों को जानकर धनवान बनना है। धनवान बनने के नये रास्ते नहीं ढूँढ़ने हैं।

E. सकारात्मक मानसिक अभिगम - पोज़िटिव मेन्टल एटिल्युड

हम अपनी रिसर्च के दौरान ऐसे दो भाईयों के संपर्क में आये, जिन दोनों के जीवन एक-दूसरे से बिलकुल विरुद्ध हैं।

एक भाई बहुत गरीब और गुनहगार है और वह बार-बार जेल में जाता है। जब कि दूसरा भाई बहुत धनवान और समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति है। इन दोनों को जब पूछा गया कि, “आपका जीवन ऐसा कैसे बन गया?” तब दोनों के कारण एक ही थे - उनके पिताजी।

गरीब और गुनहगार भाई ने कहा कि, “मैं जब छोटा था तब मेरे माँ-बाप गरीब थे। मेरे पिताजी को शराब की लत थी। मेरी माता को वे खूब पीटते थे और उसे भरपेट खाना भी नहीं देते थे। ऐसे माहौल में, मैं अच्छा आदमी कैसे बन पाता?”

दूसरे भाई को जब पूछा गया, तब उसने भी ऐसा ही कुछ कहा कि, “मैं जब छोटा था तब मेरे माँ-बाप गरीब थे। पिताजी को शराब की बुरी आदत थी। हमें खूब पीटते थे, और पेटभर खाना भी नहीं देते थे। तब मैंने तय कर लिया था कि मुझे गरीबी में नहीं जीना है। मैं धनवान बन कर मेरी पत्नी और बच्चों को अच्छी तरह से रखूँगा। मेरे घर का वातावरण बहुत सकारात्मक होगा। बस इसी वातावरण ने मुझ में धनवान और अच्छा आदमी बनने की अदम्य इच्छा जगाई। आज मैं जो भी हूँ वो बस मेरे भूतकाल की वजह से ही हूँ।”

दोनों भाईओं को एक ही प्रकार का वातावरण मिला, फिर भी जिंदगी में परिणाम अलग-अलग मिले। उसकी क्या वज़ह है? गरीब और गुनहगार भाई ने इस वातावरण का नकारात्मक अभिगम के साथ स्वीकार किया और उसे जिंदगी

में नकारात्मक परिणाम मिला। जब कि दूसरे भाई ने इस नकारात्मक वातावरण को जीवन में से दूर करने के लिए सकारात्मक विचार किया, तो उसका पूरा जीवन सकारात्मक बन गया।

हमारे जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ आती ही रहेगी। ताश के पत्तों की बाजी में मिले हुए पत्तों जैसे। तीन इक्के या तीन बाटशाह से तो हर कोई बाज़ी जीत सकता है लेकिन खराब पत्तों से बाज़ी जीते उसे ही बाज़ीगर कहते हैं।

आई हुई परिस्थिति को कैसे स्वीकार करना वो हमारे अभिगम (एटिथ्यूड) के ऊपर हैं। आगे धनवान लोगों के बारे में जब आप सीखेंगे और जानेंगे तब मालूम पड़ेगा, कि अधिकतर लोगों को कठिन हालातों का सामना करना पड़ा था, फिर भी उन्होंने उस हालात को सुधारकर अपनी ओर किया।

4. मन की प्रोग्रामिंग

आप किसी ऐसे इन्सान को याद कीजिए जिसका व्यवहार आपको बिलकुल अयोग्य लगता हो, या बिलकुल पसंद न हो। यदि वह व्यक्ति आपके करीबी होगी तो आपने इस प्रकार के व्यवहार के बारे में उससे शिकायत भी की होगी। उनको सुधारने का प्रयत्न भी आपने किया होगा। फिर भी वह व्यक्ति उस प्रकार का व्यवहार ही करता होगा। आप सोचिए कि ऐसा क्यों? वह व्यक्ति क्यों समझता नहीं और अपना व्यवहार बदलने का प्रयत्न क्यों नहीं करता? शायद वह व्यक्ति भी समझ गया होगा कि उसका वह व्यवहार अयोग्य है और उसे बदलना जरूरी है फिर भी वह ऐसा ही व्यवहार बार-बार करता होगा। क्या वज़ह है उसकी?

इसकी वज़ह यह है कि हम दैनिक जीवन में जो व्यवहार करते हैं उस व्यवहार की ब्ल्यु प्रिंट हमारे मन में अंकित है और वह जीवन भर रहती है। इस ब्ल्यु प्रिंट का असर इतना गहरा होता है कि उससे छुटना लागभग नामुमकिन होता है।

कम्प्यूटर की भाषा में ब्ल्यु प्रिंट का मतलब होता है मन की प्रोग्रामिंग। यह ब्ल्यु प्रिंट जन्मजात होती है और जीवन भर चालू रहती है। शुरू में हमारी प्रोग्रामिंग हमारे घर के सदस्य, हमारे गुरु, हमारे रिश्तेदार, हमारे पड़ोसी, हमारे राजकीय नेता, धार्मिक नेता, फिल्म स्टार्स इत्यादि द्वारा होती है। लेकिन पुख्त आयु पर पहुँचने के बाद हमारे इस प्रोग्रामिंग में थोड़े बदलाव आते हैं। यह सब हमारे जीवन में अनजान रूप से चलता ही रहता है।

हमारा दैनिक व्यवहार इस प्रोग्रामिंग का ही परिणाम है। यह व्यवहार ही हमारी जिंदगी में परिणाम देता है। आप अपनी जिंदगी का परिणाम जाँचिये। आप अपने व्यवसाय में, पारिवारिक संबंधों में, अपने स्वास्थ्य के बारे में कितने सफल हैं? आपके सारे सपनें पूरे हुए हैं या नहीं? यह सब परिणाम यदि अच्छा है तो आपके मन की प्रोग्रामिंग जरूर अच्छी हुई है।

लेकिन इन सभी परिणामों से यदि आप संतुष्ट नहीं हो तो आपके मन की प्रोग्रामिंग में या आपकी ब्ल्यु प्रिंट में समस्या है। उसमें कहीं कुछ कमी रह गई है या कुछ गलती हो गई है। आपको अब अपनी इस ब्ल्यु प्रिंट को जाननी पड़ेगी। उसे जान कर और समझकर उसमें सुधार करना पड़ेगा।

प्रोग्रामिंग शब्द वैसे तो कम्प्यूटर की साक्षरता की वजह से काफ़ी प्रचलित है। फिर भी आइए, उसके बारे में प्राथमिक जानकारी देखें। कम्प्यूटर अपने आप कुछ भी नहीं कर सकता। वह जो कुछ भी करता है वह उसके प्रोग्रामिंग के अधीन होता है। यह प्रोग्रामिंग किसी व्यक्ति का किया हुआ रहता है, जिसे

कम्प्यूटर प्रोग्रामर कहते हैं। प्रोग्राम यानि कि Set of commands अर्थात् आज्ञाओं का समूह। कम्प्यूटर को एक निश्चित तरीके से बताया जाता है कि उसे कमान्ड के मुताबिक ही कार्य करना है। वह कमान्ड से बाहर का कोई भी कार्य नहीं कर पाता। यह कमान्ड माईक्रो चिप में डाल दिया जाता है।

एक बार सभी कमान्ड कम्प्यूटर चिप में डालने के बाद वह कम्प्यूटर, प्रोग्रामिंग के अनुसार काम करता है। यदि कमान्ड देने में छोटी सी भी गलती हो जाये, तो कम्प्यूटर अपनी इच्छा से यह गलती सुधार नहीं सकता और यह गलतियों के कारण वह ठीक से काम नहीं कर पाता। उसका फिर से प्रोग्रामिंग करना पड़ता है। उस समय उसकी सभी गलतियाँ ठीक कर दी जाती हैं और कम्प्यूटर फिर से कार्यरत हो जाता है।

मनुष्य का मन भी अत्यंत आधुनिक प्रोग्रामेबल कम्प्यूटर जैसा है। उसका प्रोग्रामिंग अच्छी तरह से हो जाय तो हम जिंदगी में अच्छे परिणाम पा सकते हैं और प्रोग्रामिंग में यदि कोई गलती हो तो किसी अयोग्य व्यवहार द्वारा जिंदगी के परिणाम पाने में गड़बड़ी पैदा होती है। मनुष्य के बनाये हुए कम्प्यूटर में वह खुद प्रोग्रामिंग बदल नहीं सकता। लेकिन कुदरत के बनाए हुए, मानव नामक कम्प्यूटर में यह सुविधा खास रखी गई है। आइए, इसी बात को समझने के लिए अपने मन को अधिक गहराई से समझते हैं।

हमारे पास दो मन हैं। जागृत मन और अर्धजागृत मन। जागृत मन कम्प्यूटर प्रोग्रामर का रोल अदा कर सकता है। जब की अर्धजागृत मन प्रोग्रामेबल माईक्रोचिप का रोल अदा करता है। जन्म के समय जागृत मन अत्यधिक विकसित अवस्था में होता है। लेकिन इस दुनिया में आते ही उसे ऐसा वातावरण मिलता है कि जिससे उसका विकास होता है।

जागृत मन के पास विचारशक्ति, तर्कशक्ति, पृथक्करणशक्ति, अर्थधटनशक्ति, गणित गिनने की शक्ति, निर्णय-शक्ति, बुद्धिशक्ति, इच्छाशक्ति, ऐसी कई सारी शक्तियाँ ईश्वर ने दी हुई हैं, जो प्रोग्रामिंग करने के लिए जरूरी हैं। इसलिए ही जागृत मन प्रोग्रामर का रोल अदा कर सकता है। यह शक्तियाँ शिक्षण और अनुभव से, समयानुसार विकसित होती हैं। आसपास के वातावरण का भी इन शक्तियों के विकास के ऊपर सकारात्मक या नकारात्मक असर होता है।

हमारा अर्धजागृत मन के पास अलग सी शक्तियाँ हैं। उसकी अपनी मर्यादाएँ हैं। उसके पास जागृत मन की एक भी शक्ति नहीं होने के कारण वह अपना प्रोग्राम बदल नहि सकता और न जाँच सकता है। वह सिर्फ प्रोग्रामेबल चिप का रोल निभाता है। वह अपने प्रोग्राम के अनुसार परिणाम देना जारी रखता है।

अर्धजागृत मन की शक्तियों में जानकारियों का संग्रह करने की ताकत (मेरमी स्टोरेज) टेलीपथी, वातावरण पर असर करने की शक्ति, शरीर का

संचालन करने की शक्ति, इच्छित वस्तुओं को खींचने की चुंबकीय शक्ति, मौके को अपनी ओर खींचने की शक्ति, अपने जीवन की समस्याओं को हल करने की शक्ति, ऐसी असंख्य शक्तियाँ हैं। वह एक अच्छे से अच्छे गार्ड का कार्य कर सकता है। उसके पास अतिन्द्रिय शक्ति होने के कारण भविष्य में होनेवाली घटनाओं का संकेत भी दे सकता है। हमारे जीवन में यदि हम कुछ गलत करते हैं तब वह चेतावनी देने का कार्य करता है। इस तरह हमें अच्छे मानव या महामानव बनाने की क्षमता भी अर्धजागृत मन के पास है।

मानव का मन अनगिनत संभावनाओं से भरा हुआ है। लेकिन उन संभावनाओं को हक्कीकत में बदलने के लिए बेहतरीन प्रोग्रामर की आवश्यकता है। हमने पिछले प्रकरणों में देखा कि हमारे मन की प्रोग्रामिंग शुरू में किन्हीं अन्य व्यक्तियों द्वारा होती है। वह प्रोग्रामिंग कैसी होती है उसका आधार प्रोग्रामर की योग्यता या अयोग्यता के ऊपर आधारित है।

लेकिन इसमें एक अच्छी खबर है कि ईश्वर ने सिर्फ मनुष्य को एक विशिष्ट शक्ति प्रदान की है वह अपना प्रोग्रामिंग जाँच सकता है, और तय करें तो बदल भी सकता है। यह रोल हमारे जागृत मन को करना है। इसलिए हमारे जागृत मन को हमें खास प्रकार से तैयार करना है और उसे श्रेष्ठ और बेहतरीन प्रोग्रामर या री-प्रोग्रामर की तालीम देनी है।

इससे दो लाभ होंगे। हम अपना प्रोग्रामिंग जाँच सकेंगे और जरुरत पड़ी तो बदल भी पाएंगे। दूसरा, जब हम आगे चलकर (भविष्य में) अपने संतानों के प्रोग्रामर का रोल निभाते होंगे तब अनजाने में हम उसका गलत प्रोग्रामिंग न कर बैठे उस बात की सावधानी रख पाएंगे और हम उसका श्रेष्ठ प्रोग्रामिंग करके उन्हें अच्छे इन्सान बनने में मदद कर सकेंगे।

आजकल मन की प्रोग्रामिंग और धन-दौलत के बारे में एक अच्छी सी - पुस्तक मार्केट में है, 'स्चिं डेड-पुअर डेड'। जिसमें यह समझाया गया है कि गरीब लोगों के माइन्ड का प्रोग्रामिंग कैसा होता है। वे अपने बच्चों का धन विषयक प्रोग्रामिंग सलाह-सूचन द्वारा करते हैं। जब की धनवान लोगों के मन की प्रोग्रामिंग कैसी होती है और वे लोग अपने बच्चों की प्रोग्रामिंग कैसे करते हैं?

मिसाल के तौर पर देखें तो गरीब माँ-बाप अपने बच्चों से कहेंगे कि 'बेटा खूब मेहनत करके तुम अच्छा रिजल्ट लेकर आओ, जिससे तुम्हे अच्छी और ऊँची तनख्वाह की नौकरी मिल सके।' 'धनवान माँ-बाप अपने बच्चों को सलाह देंगे कि' बेटा खूब मेहनत कर, जिससे तुझे अच्छी डिग्री मिले और तुम बड़े उद्योगपति बनकर लाखों लोगों के लिए नौकरी का निर्माण कर सको। धीरुभाई अंबाणी ने मुकेश अंबाणी को जब अमेरिका की विश्व विख्यात हार्वर्ड युनिवर्सिटी में पढ़ाई के लिए भेजा तब उनका इरादा यह नहीं था कि अपने बेटे को किसी बड़ी कंपनी में नौकरी मिल जाय। लेकिन उनका यह इरादा था कि

वहाँ से बिज़नेस का आधुनिक ज्ञान लेके भारत आकर बड़ा उद्योग या बिज़नेस कर सके।

जो लोग गरीबी या मध्यम वर्ग में जी रहे हैं, उनके मन की प्रोग्रामिंग उस तरह जीने के लिए ही हुई है। धीरुभाई अंबाणी का मूलभूत प्रोग्रामिंग कुछ ऐसा ही था, लेकिन उन्होंने स्वयं बदल डाला। जिसकी वज़ह से उनकी जिंदगी का परिणाम बदल गया।

आप अपनी जिंदगी की धन-दौलत विषयक प्रोग्रामिंग जाँचिये। यदि वह गलत हो, तो क्या आप उसे बदलने के लिए तैयार हैं?

5. धनवान बनने के सिद्धांत

आज से करीब 80 साल पहले अमेरिका में फौलाद उद्योग की नींव डालने वाले एन्डु कार्नेंगी विश्व के सबसे प्रथम अरबपति बने थे। अंग्रेजी में जिसे ‘Rag to Riches’ कहते हैं वैसी कहानी उनके जीवन की है। अपनी भाषा में उसे हम ‘ज़ीरो से हीरो’ कहते हैं। उन्होंने यू. एस. स्टील कोर्पोरेशन की स्थापना की और वे अमेरिका के जमशेदजी टाटा कहलाये गये।

वे सिर्फ स्वयं अरबपति बन कर बैठे नहीं रहे बल्कि दूसरे कई अनगिनत लोगों के अरबपति बनाने का कारण बने। उन्होंने सोचा कि मुझे मेरी तरह अनेक लोगों को धनवान बनाना है। लेकिन धनवान कैसे बना जाय, उसका निश्चित ज्ञान उनके पास नहीं होगा, तो क्या मैं उसे मदद नहीं कर सकता? इस विचार ने एक बिलकुल नये प्रोजेक्ट को आकार दिया। जो प्रोजेक्ट आज इस क्षेत्र में इतिहास बन गया है।

उन्होंने अपनी कंपनी में काम करने वाले ‘नेपोलियन हिल’ नामक उत्साही नवयुवक के सामने प्रस्ताव रखा कि लोग धनवान कैसे बनते हैं उसका यदि तुम रिसर्च करने के लिए तैयार हो तो मैं तुम्हें मदद करने को तैयार हूँ। उस बात को नेपोलियन ने सहर्ष स्वीकार किया। यह प्रोजेक्ट तीस साल तक चलता रहा। इस प्रोजेक्ट में मेहनत नेपोलियन हील की थी और आर्थिक और अन्य सहायता एन्डु कार्नेंगी की थी।

इस प्रोजेक्ट में एन्डु कार्नेंगी की मदद से नेपोलियन हिलने 500 धनवान लोगों का अभ्यास किया। जो लोग जीवित थे, उन्हें प्रत्यक्ष मिलकर उनसे धनवान बनने के रहस्य के बारे में पूछताछ की और जो जीवित नहीं थे उनके बारे में साहित्य इकट्ठा करके अध्यन किया, कि वे लोग कैसे धनवान बने थे। यह रिसर्च स्टडी पूरा करने के बाद नेपोलियन हिल ने ‘सोचिये और धनवान बनिये।’ (Think & Grow Rich) पुस्तक बाज़ार में रखी, जो आज पूरे विश्व में बेस्ट सेलर बन चुकी है। उसके अलावा विश्व की अनेक भाषाओं में उसका अनुवाद किया गया है।

नेपोलियन हील ने उस अभ्यास के दौरान देखा की प्रत्येक धनवान और सफल व्यक्तियों में कुछ समान गुण है। उन लोगों ने कुछ मूलभूत सिद्धांतों का जाने-अनजाने में अमल किया था। साथ में यह भी ढूँढ़ निकाला कि जिसे भी धनवान बनना है, वह धनवान बनने का दृढ़ संकल्प करके अपनी मूलभूत पात्रता हासिल करके धनवान बनने के नियमों का सोच-समझकर अमल करें तो वह जरूर धनवान बन सकता है।

आइए इन सभी सिद्धांतों को क्रमशः समझते हैं:

- A. बड़े सपनें देखना
- B. सपने पूरे करने के लिए स्व-विकास करना
- C. नये-नये विचार करना (Think out of the box)
- D. विचारों को लगन की हद तक ले जाना
- E. नये मौके को पहचाना
- F. विचारों का अमल करने के लिए साहस करना
- G. मुसीबतों का दृढ़ता से मुकाबला करना
- H. दीर्घदृष्टा बनना
- I. नीति-नियमों का पालन करना
- J. अंतर्मानवीय संबंधों का विकास करना
- K. शैक को व्यवसाय बनाना

A. बड़े सपनें देखना

यदि आप किसी दुकान या कंपनी में नौकरी करते होंगे तो, उस दौरान आपको अच्छा जीवन जीने की तमन्ना रहती होगी, या फिर उस दुकान या कंपनी के मालिक बनने की तमन्ना रहती होगी। लेकिन धीरुभाई अंबाणी उनमें से नहीं थे। एडन में पैट्रोल पंप पर पैट्रोल भरने की और क्लर्क की नौकरी के दौरान उन्होंने पैट्रोल पंप के मालिक बनने का सपना नहीं देखा परंतु उन्होंने विश्व की नंबर 1 रिफाइनरी के मालिक बनने का सपना देखा था।

इस दुनिया में लाखों पेट्रोल-पंप हैं। जिसमें करोड़ों लोग काम करते हैं। लेकिन उनमें से धीरुभाई अंबाणी एक ही बन पाये। उसका एक कारण है, ‘धीरुभाई को बड़े सपनें देखने की आदत थी।’

हेनरी फोर्ड, जो मोटर उद्योग के भीष्म पितामह माने जाते हैं उन्होंने भी इतना बड़ा सपना देखा था कि अमेरिका के हर एक नागरिक के पास मेरी बनाई हुई कार हो और मैं इतनी कार बनाऊँ कि जिसे कतार में रखी जाय तो समग्र पृथ्वी को घेर ले। उसी सपनों की वज़ह से वे ‘T’ मॉडल की खोज कर सके। ‘T’ मॉडल की पाँच लाख कार उन्होंने बेची थी और विश्व के सबसे बड़े अरबपति और उद्योगपति बने थे।

किरण मजुमदार जब ओस्ट्रेलिया की कंपनी में काम करती थी तब उन्होंने एक बड़ा सपना देखा था। भारत में लौटकर भारत की प्रथम और सबसे बड़ी बायोटैक्नोलॉजी की कंपनी बनाने का। यह वह समय था, जब बायोटैक्नोलॉजी के तौर पर या बिज़नेस वुमन के तौर पर कल्पना करना या

स्वीकारना लोगों की सोच के बाहर था। लेकिन डॉ. किरण मजुमदार के बड़े सपनों ने इन सभी मुसीबतों को पार करके उन्हें अपने लक्ष्य तक पहुँचाया।

स्टीव जोब्स ने अपने दोस्त के साथ जब कम्प्यूटर कंपनी बनाने का निश्चय किया तब विश्व में कम्प्यूटर के बारे में जागरूकता बिलकुल नहीं थी। आई. बी. एम. कंपनी के किसी विशेषज्ञ ने ऐसी कमेन्ट की हुई थी, कि एक दर्जन से ज्यादा कम्प्यूटर नहीं बिकेंगे। उस समय स्टीव जोब्स ने कम्प्यूटर उद्योग की नींव डाली और वह भी इतने बड़े सपनों के साथ कि मेरे बनाये हुए कम्प्यूटर को पूरी दुनिया जानेगी, पहचानेगी और उसकी तारीफ भी करेगी। आज स्टीव जोब्स के बनाये हुए एप्पल कम्प्यूटर के बारे में कौन नहीं जानता?

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही है कि, “सपने वो नहीं जो आप नींद में देखें, लेकिन सपनें तो वो हैं जो आपकी नींद उड़ा दे।” जितना आपका सपना बड़ा, उतनी आपकी नींद कम। कुछ दिन पहले हमें किसी ने एक मोटिवेशनल एस. एम. एस. भेजा था कि, “रोज सुबह उठ के फोर्ब्स की धनवानों की सूची जाँचिये और उसमें यदि आपका नाम नहीं हो तो उठिये और काम पर लग जाइये।” क्या आप ऐसा करने के लिए तैयार हैं?

बड़े सपने देखना यानि कि खूब बड़ा कार्य करने का लक्ष्य तय करना और उस कार्य के द्वारा परिणाम पाने का दृढ़ संकल्प। आपके मन में लगातार जो विचार आते रहते हैं और आप के मन में जो विचार दिन-रात चलते रहते हैं वे विचार हमारे मन में तस्वीरें पैदा करते हैं, यानि कि हम उनका ऑटोमेटिक विज्युअलाईजेशन करते हैं। जो हमारे अर्धजागृत मन रूपी जीनी के पास ऑर्डर के स्वरूप में पहुँच जाते हैं और हमारा बहुत ही शक्तिशाली अर्धजागृत मन विश्व शक्ति की मदद से उन सपनों को पूरा करने के लिए कार्यरत हो जाता है।

B. सपने पूरे करने के लिए स्व-विकास करना

किसी ने सच ही कहा है कि, “आप जिस तरह से सोचते हो ठीक उसी तरह सोचते रहोगे तो आपको जो नतीजा मिलता था वो ही मिलेगा। यदि आपको अलग नतीजा चाहिए तो अलग सोचो।”

आप अब तक जिस तरह से कार्य करते हैं उसी तरह से यदि कार्य करना जारी रखेंगे तो उतनी ही कमाई होगी, जितनी इस समय हो रही हैं। लेकिन यदि आपको ज्यादा धन कमाना हो तो आपकी अपनी कार्यपद्धति बदलनी होगी और नया तरीका कौन सा है यह सीखना पड़ेगा। मतलब कि आपको स्व-विकास करना पड़ेगा।

प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर ने कुछ कम शक्ति दी है तो कुछ ज्यादा शक्ति दी है। हम में जो शक्ति कम हो, उस शक्ति का नियमित रूप से हम विकास कर सकते हैं। यहीं तो फर्क है इन्सान और ज्ञानवर में। सिर्फ मनुष्य ही स्वयं तय करके अपने स्व-विकास द्वारा जीवन को उन्नत बना सकता है।

धनवान बनने के लिए भी कुछ पात्रता की जरूरत होती है। जरूरी नहीं है कि हर किसी में यह पात्रता हो। लेकिन जिन्होंने धनवान बनने की ठान ली है, जिन्होंने बड़े सपने देखना शुरू कर दिया है, वे अपने स्व-विकास के कार्य में जुट जाते हैं और वह काबिलियत पाकर ही रहते हैं, जो उसके धनवान बनने के लिए जरूरी है।

प्रेम गणपति 17 साल की उम्र में, एक भी पैसा लिए बिना, किसी के भरोसे मुंबई सिर्फ तमिल भाषा के जान के साथ और बड़े सपनों के साथ आए थे। तब उनके पास धनवान बनने की काबिलियत की कमी थी। मुंबई में हिन्दी भाषा बोलते हैं जो वे बोलना नहीं जानते थे। डोसा बनाना नहीं आता था। कम्प्यूटर भी नहीं आता था। मार्केटिंग या व्यवसाय का ब्रांडिंग करना भी नहीं आता था, लेकिन धनवान बनने की उनकी प्रबल इच्छा ने उन्हें वह सब कुछ सीखा दिया। उन्हें स्व-विकास की सीढ़ी पर चढ़ा दिया, और वे अपने व्यवसाय में श्रेष्ठ व्यक्ति बन गये।

इन दोनों लेखकों में से एक डॉ. जितेन्द्र अदिया भी डॉक्टर बने तब दुबले-पतले और सांवले थे। गुजराती माध्यम में पढ़े हुए थे। एम. बी. बी. एस. की डिग्री होने के बावजूद भी अंग्रेजी का एक वाक्य भी गलती के बिना बोल नहीं पाते थे। कपड़े पसंद करना नहीं आता था।

आत्मविश्वास का अभाव था। दो व्यक्तियों के सामने खड़े होकर बोल नहीं पाते थे। 24 साल की उम्र तक उनकी यही हालत थी।

उन्होंने 1976 में बड़ा इन्सान बनने के सपनों के साथ मुंबई में नयी जिंदगी की शुरुआत की, उसके साथ ही खुद की त्रुटियों को ढूँढ निकाला। वे आहिस्ता-आहिस्ता दृढ़ता से नया सीखने लगे और अपने आपको बदलने लगे। व्यायाम से शरीर सुदृढ़ बनाया। अंग्रेजी भाषा बोलने के लिए जरूरी पुस्तकें पढ़ी। लोगों के साथ अंग्रेजी में बात करना शुरू किया और अंग्रेजी बोलने लगे। सार्वजनिक स्थानों पर लोगों के सामने बोलने के प्रशिक्षण लेकर लोगों के सामने बोलना सीखा। जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा। अपने स्व-विकास के लिए वे पुस्तकें पढ़ते गये। स्व-विकास के प्रोग्राम में हाजिर रहते गये और इस तरह से ही वे नये जितेन्द्र अदिया बन गये। साथ में धनवान बनने का विज्ञान सीखे और धनवान भी बन गये।

C. नये नये विचार करना – Think out of the box

आप सबको पता है कि हमारे पूर्वज पेड़ के पत्तों के वस्त्र पहनकर जंगल की गुफाओं में जिंदगी जीते थे। लेकिन आज का मानव हवा में उड़ सकता है। विश्व की किसी भी व्यक्ति के साथ अपनी मर्जी से फेस-टू-फेस बात भी कर सकता है। कभी सोचा भी न हो ऐसी समृद्धि से भरी जिंदगी जी सकता है। यह सब मुमुक्षिन हुआ उन लोगों की वजह से जो नया सोचने की आदत वाले थे।

जब हेनरी फोर्ड पहली बार कार बनाने की मेहनत कर रहे थे तब सभी लोग उनका मज़ाक उड़ाते थे और उन्हें कहते थे कि यह गाड़ी घोड़े खींचते हैं, इतने में संतोष मानिये। मगर हेनरी फोर्ड अलग मिट्टी के इन्सान थे। उन्हें यकीन था कि बिना घोड़े चल सके वैसी गाड़ी बन सकती है और वह भी आम आदमी की पहुंच के अंदर। ऐसी उनकी सोच ने उनको 'T' मोडेल बनाने की प्रेरणा दी और उन्होंने वाहन व्यवहार जगत का इतिहास बदल डाला।

राईट्स बंधुओं ने ऐसा सोचा कि हमें ऐसी मशीन बनानी है जो हवा में उड़ सके तब लोग उन पर हँसते थे उनका मज़ाक उड़ाते थे। वहाँ तक कि जब राईट्स बंधुओं ने पहली बार हवाई जहाज उड़ाया तब उसके साक्षी के रूप में मीडिया वाले भी बुलाये गये थे लेकिन मीडिया में से एक भी व्यक्ति उपस्थित नहीं था। क्योंकि वे लोग सोचते थे कि यह आदमी तो पागल है। ऐसा मुमकिन ही नहीं। लेकिन राईट्स बंधुओं ने मानवजात को हवा में उड़ाना संभव कर दिखाया।

जब कम्प्यूटर की खोज हुई तब उसका माप हाथी जितना था। एक कम्प्यूटर पूरा एक कमरा रोकता था और उस समय वह सिर्फ गिनती का कार्य ही कर सकता था। कम्प्यूटर सिर्फ आई. बी. एम. कंपनी ही बनाती थी। आई. बी. एम. के मालिकों को भी कम्प्यूटर के भविष्य के बारे में चिंता थी। उस समय स्टीव जोब्स ने मेज पर रखा जा सके और गिनती के अलावा और भी कई काम कर सके वैसा कम्प्यूटर बनाने का सोचा और सिर्फ सोचा ही नहीं लेकिन ऐसा कम्प्यूटर बनाने के लिए अपने गैरेज में चंद पैसों से काम शुरू कर दिया और पर्सनल कम्प्यूटर की नींव डाली।

जब समग्र विश्व के कार उत्पादक मंहगी बड़ी कार बनाने की चिंता करते थे तब रतन टाटा ने आम आदमी भी खरीद सके वैसी नेनो कार बाज़ार में रखने का सोचा।

टेड टर्नर ने जब केबल समाचार चैनल शुरू करने का सोचा, जिस पर 24 घंटों तक सिर्फ समाचार ही आता रहे, तब उसके इस पागलपन पर सब हँस रहे थे। आज CNN बहुत ही लोकप्रिय चैनल है। उसकी शुरुआत उन्होंने 1980 में की थी। अब वे विश्व के 26 देशों में अनेक भाषाओं में अपना नेटवर्क चलाते हैं।

सबीर भाटिया को विचार आया कि लोगों को मुफ्त में इन्टरनेट के जरीये ई-मेल की सेवा मिले तो अच्छा है, इसी सोच ने ही होट-मेल की शुरुआत की और उसमें से वे अरबपति बन गये।

जब लोग बिजली बनाने के लिए पानी या कोयले का उपयोग करते थे तब सौराष्ट्र के सपूत्र तुलसी तंती के मन में विचार आया कि पवन से बिजली सस्ते में बन सकती है। इस विचार ने ही उन्हें सुज़लोन कंपनी की स्थापना करने की प्रेरणा दी और जिस से वे धनी बन गये।

जब सारी दुनिया कम्प्यूटर के हार्डवेयर बनाने की चिंता में थी, तब बिल गेट्स को माईक्रोसोफ्ट बनाने का विचार आया और वे सोफ्टवेर कंपनी बना के दुनिया के अति धनवान व्यक्ति बन गये।

D. विचारों को लगन की हड़तक ले जाना

हेनरी फोर्ड को जब 'T' मोड़ेल और दुनिया की सबसे सस्ती कार बनाने का विचार आया, तब लोग इस इन्सान को धूनी कहते थे। हेनरी फोर्ड ने अपनी अन्वेषण क्षेत्र के अभियंता को बुला के समझाया कि मुझे यह 'T' आकार का एन्जिन बनाकर दीजिए। आप उस पर रिसर्च करके बना दो। उनके अभियंताओं ने उनको स्पष्ट मना कर दिया कि ऐसा इंजन बन ही नहीं सकता। फिर भी फोर्ड ने कहा कि भले ना बन पाये फिर भी आप उस पर अन्वेषण जारी रखें। 6 महीने के बाद अभियंता फिर से हेनरी फोर्ड के पास आये और कहने लगे कि यह संभव नहीं है। लेकिन उनके धूनी मालिक हेनरी फोर्ड ने उन्हें आदेश दिया कि फिर भी प्रयास जारी रखें। इस तरह पांच बार यह घटना घटी।

अंत में हेनरी फोर्ड की जीत हुई। 'T' मॉडल बन गया। समग्र विश्व ने उसकी तारीफ की और उसकी बिक्री हुई। इस विचार ने हेनरी फोर्ड को अरबपति और दुनिया में अमर बना दिया। हेनरी फोर्ड ने इस 'T' मॉडल के विचार को पागलपन की हड़तक पहुँचाया ना होता तो, मोटरकार का इतिहास कुछ अलग ही होता। रतन टाटा को एक लाख की कार बनाकर बाज़ार में रखने की लगन थी, जिस की वजह से 'नेनो कार' का जन्म हुआ।

भारत में हिन्दुस्तान लीवर के 'सर्फ' डिटरजन्ट पाउडर का जब बोलबाला था और 'सर्फ' के विज्ञापन के पीछे हिन्दुस्तान लीवर कंपनी करोड़ों रुपयों का खर्च करती थी उस समय गुजरात के एक किसान पुत्र श्री करसनभाई पटेल को विचार आया, '9 रुपये किलो सर्फ के सामने 3 रुपये किलो का निरमा वॉशिंग पाउडर रखने का।' सचमुच देखा जाए तो यह विचार हाथी के सामने चींटी की स्पर्धा जैसा था। लेकिन करसनभाई पटेल ने इस विचार को इतना दृढ़ बना दिया, कि यह विचार उनकी लगन बन गई और निरमा कंपनी की उनके घर से शुरूआत हुई। घर से शुरू हुई यह कंपनी आज 3500 करोड़ का बिज़नेस चलाती है और करसनभाई पटेल हर एक गुजराती के दिल में बस गये हैं।

आप सोचेंगे कि यह लगन क्या है?

इस के लिए अनूप जलोटा के भजन की पंक्ति याद आती है,
'ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन।'

इस भजन में जो बात कही गई है उसमें मीरां जिस तरह कृष्ण में मग्न हो गई थी, और मीरा को कृष्ण के अलावा कुछ दिखता ही नहीं था ठीक उसी तरह हम दिनभर लगातार जो विचार करते रहते हैं उसे लगन कहते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने ढूँढ़ निकाला है कि अंशतः मानव के मन में प्रतिदिन 60 हजार विचार आते हैं। विचार तो आते-जाते रहते हैं लेकिन जो विचार हमारे दिल को छू जाता है और दिल जिसे थाम लेता है उस विचार को हम दिनभर याद करते रहते हैं और यह विचार अपनी लगन बन जाती है। जो विचार लगन बन जाती है और उस विचार के ऊपर जब हम कार्य शुरू करते हैं, तब हमें किसी की राय या मज़ाक सुनाई नहीं देता और हम अपनी लगन में ही कार्य करते रहते हैं। लगन के लिए अंग्रेजी में शब्द है **Passion**। आप अपने भीतर देखिये। क्या आपके भीतर ऐसा कोई विचार है जिसे आपने लगन में बदल दिया है? या आप उसे लगन में बदलना चाहते हो?

E. नये मौके को पहचानना

व्यवसाय या जीवन में सफल होने के लिए हमारे सामने कई सारे मौके आते हैं। उनमें से यदि योग्य मौके को पहचाने और उस मौके का उपयोग करें तो हम धनवान बन सकते हैं और जीवन में सुख पा सकते हैं। 1979 में जब आई. बी. एम. को भारत से निकाला गया, तब अजीम प्रेमजी ने इस परिस्थिति को एक मौका समझकर उस मौके को पकड़ लिया और कम्प्यूटर हार्डवेयर कंपनी शुरू की और उन्होंने यह अपनी ‘विप्रो’ कंपनी को सबसे समृद्ध कंपनी बना दिया।

जब सारी कम्प्यूटर कंपनियाँ हार्डवेयर बनाने का विचार कर रही थी, तब बिल गेट्स ने सोचा कि इन सब कम्प्यूटर में एक अच्छी ऑपरेटिंग सिस्टम की जरूरत पड़ेगी। इसलिए उन्होंने माईक्रोसोफ्ट की ‘विंडोज़’ ऑपरेटिंग सिस्टम बनाकर बाजार में रखकर इतिहास बना दिया।

रसेल कोनवेल नामक एक व्यक्ति ने आज से 100 साल पहले एक विष्यात प्रवचन ‘एकर्स ऑफ डायमन्ड’ दिया था। जो विश्व में 6000 बार देकर अपना रेकोर्ड बना दिया था। उस व्याख्यान में खास यही सूचन था कि हमारे आसपास धनवान बनने के कई मौके रहते हैं बस, जरूरत है आपको उस मौके को पहचानने की। हमें हीरे ढूँढ़ने के लिए दूर तक कहीं भी जाने की जरूरत नहीं है। ‘एकर्स ऑफ डायमन्ड’ हमारे आसपास ही फैला हुआ है। उसे पहचानने की कोशिश करें।

अमेरिका में जब ‘पिज्जा हट’ की लोकप्रियता थी और उसकी शाखाएँ पूरे अमेरिका में फैली हुई थी, तब टॉम मोनाहन नामक व्यक्ति ने ‘डोमिनोज़’ नामक एक कंपनी शुरू की। उस समय पिज्जा बेचने के लिए ‘होम डिलीवरी’ का विचार अमल में लाए। उन्होंने ऐसा महसूस किया कि लोगों को पिज्जा लेने के लिए रेस्टोरेन्ट तक आना पड़ता है, लेकिन यदि मैं इससे कुछ बेहतर और ज्यादा दूर पिज्जा घर तक पहुँचाऊं तो लोग मेरे पिज्जा खरीदेंगे ही। इसी विचार

ने 'डोमिनोज़' को लोगों में ख्याति दिलवाई और उनका व्यवसाय पुरज्जोश में चलने लगा और टॉम मोनाहन बहुत ही धनी बन गये।

F. विचारों का अमल करने के लिए साहस करना

हमारे ट्रेनिंग प्रोग्राम के दौरान हम कई सारे लोगों से मिलते हैं जिन्हें नये विचार आते हैं और आगे बढ़ने का मौका भी दिखता है। फिर भी वे उस दिशा में आगे नहीं बढ़ पाते। उसका कारण साहसवृत्ति का अभाव है। आपको पता होगा, कि पैसों का निवेश करने का उसूल है 'हाई रिस्क - हाई रिटर्न'। यदि आप रिस्क लेना नहीं चाहते तो कमाये हुए रूपयों को फिक्स डिपोजिट में रख दीजिए। जिसका रीटर्न साल में 9 से 10 प्रतिशत तक मिल सकते। यदि इस रूपये को आप शेयर मार्केट में लगाओगे तो 20 से 200 प्रतिशत का रिटर्न भी मिल सकता है। लेकिन उसके सामने नुकसानी का रिस्क भी इतना ही बढ़ जाता है।

विश्व के धनपतियों के अभ्यास से यह निष्कर्ष आया है कि अधिकतर लोग व्यवसाय में ही अरबपति बने हैं। नौकरी करके आप अरबपति कभी नहीं बन पायेंगे। हमारा तो यह मानना है, कि नौकरी तो सिर्फ जिनके पास साहस नहीं है वे लोग ही करते हैं। डॉ. अद्विया ने साहस करके सरकारी पेन्शन वाली नौकरी छोड़ दी और धनवान बनने की शुरुआत की। उन्होंने आये हुए मौके के लिए नौकरी छोड़ी तब ही वे धनवान बन पाये। दीपक धाबलिया भी 1990 में प्रतिमास 350 रूपये में नौकरी करते थे। उन्होंने उस नौकरी को छोड़ने का साहस किया और धनवान बन गये।

थॉमस आल्वा एडिसन् ने बिजली के बल्ब की खोज की। उस बल्ब को लोगों तक पहुँचाने के लिए उन्हें बिजली के नेटवर्क की जरूरत थी। उस व्यवस्था के लिए उन्होंने बैंकों और जमीदारों से लोन की माँग की थी, लेकिन किसी भी बैंक ऐसे खतरे वाले कार्य में लोन देने के लिए तैयार नहीं हुई। थॉमस आल्वा एडिसन् हिम्मत नहीं हारे और 90 प्रतिशत पूँजी स्वयं अपने पास से निकाल कर, विद्युत उद्योग की नींव डाली।

टेड टर्नर को जब CNN शुरू करनी थी, तब बहुत सारे पैसों की जरूरत थी और लोगों ने ऐसा न्यूज़ चैनल का पागलपन न करने के लिए समझाया था। फिर भी उन्होंने अपनी 10 करोड़ की पूँजी दाव पर लगाकर इतिहास बना दिया।

स्टीव जोब्स ने जब अपना प्रथम कम्प्यूटर बनाया था तब उनके पास पैसे नहीं थे। दुकान किराये पर लेने के भी पैसे नहीं थे। तो उन्होंने अपने गैरेज में कम्प्यूटर बनाना शुरू किया और पैसों की व्यवस्था करने के लिए उन्होंने अपनी वोक्स वेगन मीनी बस और अपना एच.पी. केल्क्यूलेटर बेचकर उसमें से 1300 डॉलर की व्यवस्था की और अपना प्रथम 'एप्पल कम्प्यूटर' बनाया। उनके एक भी कम्प्यूटर को कोई बड़ी कंपनी खरीदने के लिए तैयार नहीं थी। इसलिए उसे

बेचने के लिए उन्होंने हर दुकान पर जाना शुरू किया। बहुत ना सुनने के बाद एक दुकान वाले ने 50 कम्प्यूटर का ऑर्डर दिया। इस ऑर्डर वाले कम्प्यूटर को बनाने के लिए उन्होंने 25,000 डॉलर का सामान उधार लिया और अपने गैरेज में बैठकर 50 कम्प्यूटर बनाये और समय पर डिलिवरी दी। इस प्रकार पर्सनल कम्प्यूटर उद्योग की नींव डाली।

G. मुसीबतों का दृढ़ता से मुकाबला करना

मुसीबतें तो हर एक इन्सान के जीवन का अविभाज्य अंग है। जिसके जीवन में एक भी मुसीबत नहीं आई हो ऐसा इन्सान ढूँढ़ने पर भी आपको मिलेगा नहीं। इन्सान की बात छोड़िये, हमारे हिन्दू धर्म के देवी-देवता या भगवान को भी कितनी मुसीबतें आई हैं वह आप को मालूम ही होगा। भगवान श्री राम का जब राज्याभिषेक होने वाला था, उसी दिन उनको राज्य छोड़कर 14 साल के लिए जंगल में जाना पड़ा। जंगल में कठिनाईयों के बीच रहते थे कि सीताजी का अपहरण किया गया। लंका के रावण से युद्ध करके सीताजी को छुड़ाकर लाये तो उसके बाद सीताजी को गर्भावस्था में जंगल में भेजना पड़ा। भगवान शंकर ने गुस्से में आकर अपने बेटे का सिर काट दिया और फिर हाथी का मस्तक लगाना पड़ा। कृष्ण भगवान को तो पैदा होते ही मुसीबतों का सामना करना पड़ा था। कारागृह में जन्म होने के बाद तुरंत ही अपने माँ-बाप से अलग होना पड़ा था।

जब हम कोई उद्योग या व्यवसाय शुरू करेंगे तब मुसीबतें तो आयेगी ही। आप जब किसी छोटे-मोटे उद्योग या बिज़नेस करने वाले व्यक्ति से मिलेंगे तो, पता चलेगा कि उनके जीवन में उस व्यवसाय के चलते मुसीबतें जरूर आई होंगी। लेकिन यदि आप बड़े धनवान या किसी बड़े उद्योगपति के जीवन के बारे में पढ़ोगे तो मालूम पड़ेगा कि उन्होंने भी मुसीबतों का सामना किया था।

थॉमस आल्वा एडिसन् जब स्कूल में पढ़ने बैठते थे, तब उनका मन भटकता रहता था। उनके शिक्षक ने ऐसी कमेन्ट की थी कि इस बालक का ध्यान पढ़ाई में कम है, उसकी वजह से वह ज्यादा नहीं पढ़ सकेगा। यह बात सुनकर उनके माता-पिता ने उनकी स्कूल छुड़वा कर घर में पढ़ाई करवाना शुरू किया। बचपन में ‘स्कारलेट फीवर’ नामक बीमारी की वजह से उनका कान पक जाता था और सुनने में भी तकलीफ पड़ती थी। बचपन में उन्होंने रेलगाड़ी में समाचार पत्र और कैन्डी बेचने का काम भी किया था और साथ में तरकारी भी बेचते थे। ऐसी तो कई मुसीबतों का सामना करके थॉमस आल्वा एडिसन ने दुनिया के सबसे धनवान वैज्ञानिक बनने का मान पाया।

‘एप्पल कम्प्यूटर’ के स्थापक स्टीव जॉब्स ने अपनी कंपनी शुरू की और दस साल में उसे बहुत ऊँचाई पर ले गये। लेकिन नसीब की बलिहारी देखें, कि उनकी अपनी कंपनी के स्टॉफ ने खड़ी की हुई परिस्थिति की वजह से उनको अपनी खुद की कंपनी छोड़ कर जाना पड़ा। उसके बाद उन्होंने दूसरी कंपनी

बनाई जिसमें कम्प्यूटर एनिमेशन को मुख्य उत्पाद बनाया। उस कंपनी को वे श्रेष्ठतम स्थान पर ले गये और उस कंपनी के बलबूते पर ‘एप्पल कंपनी’ का कब्जा कर लिया। 2006 में उन्हें पाचकर्गण्ठि का केन्सर हो गया, जिसमें डॉक्टर ने उन्हें चेतावनी दी की आप ज्यादा दिन तक नहीं जी पाएंगे। फिर भी इन सभी कठिनाईओं के साथ उन्होंने कार्य करना जारी रखा और आईपोड, आईपेड, आईफोन इत्यादि बाज़ार में रखे। पांच साल कैन्सर से लड़ने के बाद अक्टूबर, 2011 में उनका देहांत हो गया।

यदि इतनी कठिनाईओं के बावजूद भी मनुष्य इतनी प्रगति कर सकता है तो इससे क्या संदेश मिलता है? यह इस बात का प्रमाण है कि जीवन में कोई भी कठिनाई हमेशा नहीं रहती। मनुष्य मुसीबतों का सामना करके महान कार्य कर सकता है तथा नाम और पैसा कमा सकता है।

H. दीर्घदृष्टा बनना

जब दुनिया के अधिकतर लोग कम्प्यूटर का ‘क’ भी नहीं जानते थे, तब बिल गेट्स को कम्प्यूटर के भविष्य का पूरा ख्याल आ गया था। उन्होंने कम्प्यूटर लाइन में ही अपनी केरीयर बनाने का निश्चय किया था। उनको मन ही मन यकीन था कि, आज से तीस-चालीस साल के बाद हर एक व्यक्ति को कम्प्यूटर की जरूरत पड़ने वाली है। इस बात का उन्होंने 1995 में ‘रोड़ अहेड़’ नामक किताब में अच्छी तरह से जिक्र किया है। बिल गेट्स की इस दूरदेशी ने उन्हें दुनिया का अति धनवान व्यक्ति बनने में बहुत मदद की।

आज से बीस साल पहले 1991 में इन दोनों लेखकों में से एक लेखक डॉ. जितेन्द्र अद्विया ने जब ‘मन की शक्ति’ के ऊपर कार्यक्रम देना शुरू किया तब लोग उनकी बातें सुनकर हँसते थे। लेकिन डॉ. अद्विया को यकीन था कि माइन्ड पॉवर के विज्ञान की दुनिया के सभी लोगों को जरूर पढ़ेगी और उसे सीखने के लिए लोग मुँह माँगे दाम भी देंगे। आज उनकी यह बात सच साबित हुई है। उसी वजह से उनकी पहली पुस्तक ‘प्रेरणा का झरना’ बेस्ट सेलर बन गई।

आपको जिस उद्योग या व्यवसाय के जरिये धनवान बनना है उसका भविष्य आज से बीस या तीस साल के बाद कैसा होगा वो दूरदर्शिता आपके अंदर होनी चाहिए। लेकिन ऐसी दूरदर्शिता हर किसी के पास नहीं होती। उदाहरण के तौर पर वाल्ट डिज्नी जब डिज्नी लैन्ड बना रहे थे तब उनका यह विचार लोगों को पागलपल लग रहा था। अमेरिका का डाक विभाग ओवर नाईट डिलीवरी को नहीं देख पाया लेकिन फ्रेड स्मिथ नामक व्यक्ति ने इस संभावना को पहचान लिया और फेडएक्स- FedEx बनाकर अपना भविष्य बना लिया। पिज्जा हट जैसी बड़ी कंपनी वाले भी होम डिलिवरी का महत्व समझ नहीं पाये, उस महत्व को डोमिनोज़ के टॉम मोनाहन समझे और सारे संसार में अपना नाम कायम कर दिया।

आई. बी. एम. बड़े हाथी जैसे कम्प्यूटर बनाकर बिज़नेस कर रही थी। उनके विशेषज्ञ भी पर्सनल कम्प्यूटर को देख नहीं पाये। स्टीव जोब्स ने पर्सनल कम्प्यूटर की संभावना देखकर एप्पल कंपनी की स्थापना की और आई.बी.एम. से आगे निकल गए। जेरोक्स कम्प्यूटर्स के रिसर्च डिपार्टमेन्ट ने भी पर्सनल कम्प्यूटर तैयार किया था, पर उनके सेल्स डिपार्टमेन्ट को उसमें भविष्य नहीं दिखाई दिया और वे कम्प्यूटर बिज़नेस नहीं कर पाये।

भारत देश पैट्रोलियम प्रोडक्ट के लिए सालों से अन्य देशों पर निर्भर था। उस समय धीरुभाई अंबाणी ने भारत में पैट्रोलियम उद्योग का भविष्य देख लिया और दुनिया की सबसे बड़ी पैट्रोलियम रिफाईनरी की जामनगर में स्थापना करके इतिहास बना दिया।

I. नीति-नियमों का पालन करना

अज्ञीम प्रेमजी की कंपनी का खास नियम है कि व्यवसाय के विकास में कभी रिश्वत लेनी या देनी नहीं। वे इस नियम के साथ पिछले तीस सालों से लगातार अपनी ‘विप्रो’ कंपनी के स्तर को दिन-प्रतिदिन ऊपर ले जा रहे हैं।

वॉरन बफेट के पास अरबों डॉलर होने के बावजूद भी वे सामान्य अपार्टमेन्ट में रहते हैं और अपना खुद का हवाई जहाज भी नहीं रखते, जब कि वे खुद एक ऐरलाइन्स कंपनी के मालिक हैं। मितव्ययता (कमखर्ची) और सादगी उनके उसूल हैं।

सौ साल पहले हिन्दुस्तान में एवियेशन उद्योग की स्थापना करने वाले टाटा ग्रुप का भी यही सिद्धांत है कि रिश्वत लेनी या देनी नहीं। भारत सरकार ने जब हवाई उद्योग में निजीकरण करने की घोषणा की तब कई सारी कंपनियों ने अपनी निजी हवाई सेवा शुरू करने का अपना इरादा जताया था और उसके लिए आवेदन पत्र भी भेजा था। सबसे प्रथम आवेदन पत्र टाटा का ही था। हाल में भारत में कई सारी कंपनियों ने अपनी एयरलाइन्स शुरू की है लेकिन टाटा की एयरलाइन्स अब तक शुरू नहीं हुई। उसका कारण हमें अंदर से मालूम पड़ा है कि टाटा ने एयरलाइन्स शुरू करने के लिए दिल्ली लेवल पर जो रिश्वत देनी पड़ती है उससे इन्कार किया है।

J. अंतर्मानवीय संबंधों का विकास करना

‘निरमा’ के श्री करसनभाई पटेल, ‘श्रीतल गृप और किया डायमंड’ के मालिक श्री गोविंदभाई काकडिया, ‘श्री रामकृष्ण एक्सपोर्ट’ के मालिक श्री गोविंदभाई घोलकिया, श्री दीपचंद गाड़ी, ‘मितल स्टील कंपनी’ के मालिक श्री लक्ष्मी मितल, ‘अदाणी पोर्ट’ के मालिक श्री गौतम अदाणी, युगान्डा के श्री सुधीर रूपारेलिया, इन सभी लोगों को डॉ. अद्विया स्वयं मिले हैं और उनके साथ खूब बातें भी की हैं। उनमें से कुछ लोगों के साथ उनके घरेलू संबंध हैं। इन

सभी लोगों का उन्होंने निरीक्षण किया है कि यह सभी लोग अंतर्मानवीय संबंध निभाने में निष्पात हैं।

हम अगर अधिक लोगों के साथ संबंध रखें, उनके घर आने -जाने का या, किसी शादी - ब्याह के प्रसंग पर बुलाने का, तो उस संबंध के द्वारा हमें एक अच्छा सा मौका मिलने की संभावना छिपी हुई होती हैं और उन लोगों के सहकार या निर्देश से हमारे व्यवसाय का विकास कर सकते हैं।

K. शौक को व्यवसाय बनाना

किसी भी उद्योग या व्यवसाय में सफलता पाने के लिए व्यक्ति को बहुत काम करना पड़ता है एवं अच्छा काम करना पड़ता है। यह बात तब मुमकिन बन सकती है, जब उस व्यक्ति को उस कार्य में रुचि हो और कार्य तब अच्छा लगेगा जब उनका शौक ही उसका व्यवसाय हो। दुनिया के कई सारे सफल और धनवान लोगों ने अपने शौक को ही अपना व्यवसाय बनाया है। इस पुस्तक के दोनों लेखकों में से एक डॉ. अद्विया मेडिकल डॉक्टर हैं लेकिन अब वे माइन्ड ट्रेनर के रूप में कार्य करते हैं, क्योंकि माइन्ड पॉवर की ट्रेनिंग देना उनका शौक है।

मज़रुह सुल्तानपुरी व्यवसाय से एक डॉक्टर थे, मगर उन्हे गङ्गल लीखने का शौक था। वे अपनी मेडिकल प्रैक्टिस छोड़ कर गङ्गल लिखने मुंबई आ गये और फिल्म उद्योग में अपना नाम अमर कर दिया।

शेखर कपूर व्यवसाय से चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट है, वे लंडन में प्रैक्टिस करते थे। फिल्म बनाने के उनके शौक ने उन्हें चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट का कार्य बंद करके मुंबई आने पर मज़बूर कर दिया और सिनेमा जगत में इतिहास बना दिया।

जॉन अब्राहम और अमिताभ बच्चन एम. बी. ए. की पदवी वाले हैं। फिर भी उन्होंने मैनेजर की नौकरी करने के बजाय अपनी एकिंग के शौक को व्यवसाय बना दिया और यश और पैसे दोनों कमाये।

सचिन तेंदुलकर को भी पढ़ाई से ज्यादा क्रिकेट खेलना पसंद था, उसी शौक को व्यवसाय बना कर वे 'क्रिकेट के भगवान' बन गये।

तबलावादक श्री जाकिर हुसैन और सितारवादक श्री पंडित रविशंकर ने अपने शौक को व्यवसाय बनाकर खूब प्रसिद्धि हासिल की और पैसे भी कमाये।

माधुरी दीक्षित, एम. एफ. हुसैन, पंकज उधास, जगजीत सिंह जैसे कई लोगों की सफलता इस बात का प्रमाण है।

क्या आपने कभी इस तरह सोचा है कि आप भी अपने शौक को अपना व्यवसाय बना सकते हैं?

IV

धनवान कैसे बनें?

कोई भी व्यक्ति
धनवान बन सकता है।

धनवान बनने के लिए इतना कीजिए

हमें अब 100 प्रतिशत अहसास हो चुका है कि आपको धनवान बनने की इच्छा है। इसलिए आप अब तक के पृष्ठ पढ़ के यहाँ तक पहुँचे हो। यानि कि आपकी धनवान बनने की शुरुआत तो हो चुकी है। धनवान बनने का आपका दृढ़ निश्चय ही आपको धनवान बना सकता है। यह निश्चय जितना दृढ़ होगा उतना ही आपका आगे का कार्य आसान हो जायेगा।

चलिए अब जानते हैं धनवान कैसे बने:

1. धनवान बनने का दृढ़ निश्चय कीजिए

यह निश्चय को अधिक दृढ़ कैसे बनाया जाए, यह सवाल आपके मन में उठेगा ही। उसके लिए तीन रास्ते हैं:

A. धनवान लोगों के जीने का तरीका देखते रहिए

इसे दो तरह से देख सकते हैं। एक तरीका यह है कि आपके आस पास के धनवान लोगों का निरीक्षण कीजिए। धनवान लोग कितने अच्छे तरीके से जीवन जी रहे हैं। हाई-प्रोफाईल जीने के तरीके पर कई मैगज़ीन और टी.वी. प्रोग्राम्स आते हैं। उन्हें हमेशा देखते रहिये।

B. आप धनवान बनेंगे तो फिर जिंदगी में क्या फायदे होंगे उन फायदों की सूची बनाकर उसे रोज एक बार पढ़ लीजिये।

C. एक नोटबुक खरीदकर उसमें निम्नलिखित वाक्य रोज बार-बार लिखिये:

“मुझे धनवान बनना ही है।” यह वाक्य बार-बार अपने मन में रटते रहने से धनवान बनने का आपका निश्चय और दृढ़ बनता जायेगा।

2. धनवान बनने के बारे में अपनी मान्यताएं बदलिए

धन और धनवान लोगों के बारे में अपनी मान्यताओं को जाँचिये। आपको लगेगा कि आगे के प्रकरणों में दी गई कई सारी नकारात्मक मान्यताएं आपके अंदर हैं। इसके लिए, आपको शांतिपूर्वक बैठकर अपने भीतर झाँक कर ऐसी मान्यताओं को ढूँढ़कर बदलनी पड़ेगी। यह मान्यताएं किस तरह बदलेंगे?

प्रथम तो ऐसी मान्यताएं ढूँढ़ निकालिए कि जो नकारात्मक हैं।

मिसाल के तौर पर, ऐसी मान्यता हो कि, ‘गलत कार्य किये बिना धनवान बन ही नहीं सकते,’ तो आपको अपनी यह सोच बदलनी होगी।

इसके लिए एक टेक्नीक है, जिसका नाम है ‘9-3-9’ टेक्नीक।

जिसमें आपको अपनी अभी जो नकारात्मक मान्यता है, उससे विरुद्ध एक सकारात्मक मान्यता की लाइन तैयार करनी है। जैसे कि, ‘गलत कार्य किये बिना धनवान नहि बन सकते।’ उसके सामने, ‘सही कार्य करके धनवान बन सकते हैं।’ ऐसा वाक्य आप दाहिने हाथ से 9 बार लिखिये। बाद में कलम को बायें हाथ में लेकर यह वाक्य तीन बार लिखिये। फिर से हाथ बदलकर कलम दाहिने हाथ में लेकर फिर से 9 बार लिखिये। इस तरह $9 + 3 + 9 = 21$ बार लिखें। इस टेक्नीक को इसीलिए “9 - 3 - 9 टेक्नीक कहा जाता है। इस टेक्नीक में, कम से कम 21 दिन, 21 बार, एक भी दिन का ब्रेक लिए बिना, यह बात लिखनी है। ऐसा करने से आपकी पुरानी मान्यता बदल जायेगी और नई मान्यता आपके मन में बैठ जायेगी।

इस तरह से धन के बारे में आपकी जितनी भी नकारात्मक मान्याताएं हैं उन्हें सकारात्मक मान्यता में बदलने के लिए आपको मेहनत करनी पड़ेगी।

उसके अलावा आपको एक और नई मान्यता बनानी पड़ेगी। वह मान्यता है ‘मैं धनवान बनकर ही रहूँगा।’ उस मान्यता के लिए आपको निम्नलिखित वाक्य जब तक आप धनवान नहीं बन जाते तब तक लिखते रहना है।

वह वाक्य है, “मैं धनवान बनकर ही रहूँगा।”

3. आप का लक्ष्य निश्चित कीजिए

हर एक धनवान के पास जो धन या संपत्ति होती है उसकी मात्रा कम ज्यादा होती है। जैसे कि कालोंस स्लीम हेलु के पास 74 अरब डॉलर की संपत्ति है और डॉ. किरण मजुमदार के पास 1 अरब डॉलर की संपत्ति है। वे दोनों धनवानों की सूची में हैं। इसलिए आपको तय करना है कि आपको कितनी धन-दौलत चाहिए। मतलब कि आपको अपनी धन-दौलत का लक्ष्य तय करना है।

इसीलिए कुदरत ने जागृत मन को विचारशक्ति, तर्कशक्ति, बुद्धिशक्ति, पृथक्करणशक्ति, निर्णयशक्ति जैसी शक्तियाँ दी हैं। आपको इन सभी शक्तिओं का उपयोग करके अपना लक्ष्य निश्चित करना है। मिसाल के तौर पर, महीने की कितनी आमदनी, कितना बैंक बैलेन्स, कितनी कीमत का घर, कितनी कीमत की गाड़ियाँ, कितने हीरे-जवाहरात और अन्य मिलकतें, इत्यादि आपको निश्चित मात्रा में तय करना है।

दीपक उनके ग्राहकों के भविष्य की आवश्यकता के अनुसार पृथक्करण करके उनका निजी बोर्ड बनवाते हैं जिसमें सभी बातें निश्चित रूप से लिखी हुई रहती है। जैसे कि बच्चों के उच्च शिक्षा का खर्च, शादी का खर्च, विदेश घूमने का खर्च, वृद्धावस्था की आमदनी का आयोजन इत्यादि।

लक्ष्य निश्चित करते समय ख्याल रखिये कि आपको अंदर से विश्वास होना जरूरी है कि आप उस लक्ष्य तक पहुँच पाएँगे। उसकी समय मर्यादा व्यवहारिक

होनी चाहिए। इसके बारे में जानने के लिए हमारी पुस्तक ‘ध्येय निर्धार और प्राप्ति’ आपको उपयोगी होगी।

आपका लक्ष्य एक बार निश्चित रूप से तय हो जाये, उसके बाद आपको धन के बारे में विज्ञन बोर्ड बनाना है।

4. आपका धन विज्ञन बोर्ड बनाइए

यह ‘विज्ञन बोर्ड’ क्या है, इस बात का आपके मन में शायद सवाल उठेगा। विज्ञन बोर्ड यानि एक ऐसा बोर्ड जिसमें आपके धन संबंधित जो भी लक्ष्य हो उन सबके चित्र चिपकाये हों। आपकी मासिक आमदनी, आपका बैंक बैलेन्स, आपके सपनों का घर, सपनों की ऑफिस, सपनों की गाड़ी, हीरों का हार, जैसे आपके कोई भी लक्ष्य हो उनके चित्र इन्टरनेट या मैगज़ीन में से ढूँढ़ कर इस बोर्ड में चिपकाना है।

‘उदाहरण स्वरूप विज्ञन बोर्ड’ पेज नं. 100 पर दिया गया है और यदि आपको बड़ा कलरफुल विज्ञन बोर्ड चाहिए तो आप हमारी वेबसाईट www.mindtraininginstitute.net और www.ddrwm.com पर से डाउनलोड कर सकते हैं या फिर हमारे कार्यालय में संपर्क कर के खरीद सकते हैं:

Phone No. Ahmedabad : 079 2630 2660 / 4003 5153

Mumbai : 022 3268 1104/05.

विज्ञन बोर्ड तैयार हो जाने के बाद उसे अपने घर के बेडरूम में या ऑफिस में जहाँ पर उसे अधिक बार देख सकें, ऐसी जगह पर चिपका दीजिये और आते-जाते उस पर नजर डालते रहिये। अगर आप हर दम अपने साथ विज्ञन बोर्ड रख सकते हैं तो वह हर समय आपको अपने लक्ष्य की याद दिलाएगा।

मेरा धन विज्ञन बोर्ड					
नाम :					
मेरे सपनों का घर	मेरी मासिक आमदनी	मेरे सपनों की कार			
मेरे सपनों का ऑफिस	मेरा बैंक बैलेन्स	मेरा सोना-जवाहरात			

MY DHANVAAN VISION BOARD

NAME : DEEPAK DHABALIA



By Year: DEC 2015



By Year: DEC 2015



By Year: DEC 2014



By Year: Mar 2015



By Year: MAY 2015



By Year: DEC 2028



Dhanvan Toh Bhavvij Joly by Deepak Dhabalia
www.ddown.com



DD's Real Wealth Maximizer Pvt. Ltd.

Give wings to your dreams

www.ddown.com

5. अपने लक्ष्य को नियमित रूप से विज्युअलाईंज करे

एक बार धन-दौलत के बारे में अपना लक्ष्य निश्चित कर लेने के बाद इसे आपको अपने अर्धजागृत मन तक पहुंचाना है। क्योंकि ध्येय निर्धार करने का कार्य तो जागृत मन का है, लेकिन उसे हकीकित में बदलने की शक्तियाँ अर्धजागृत मन के पास हैं। अर्धजागृत मन स्वयं कोई लक्ष्य तय नहीं कर पाता। वह तो जागृत मन के दिये हुए चित्रों के ऊपर ही काम कर सकता है। जागृत मन द्वारा अर्धजागृत मन तक चित्र पहुंचाने की क्रिया को मनोचित्रण या विज्युअलाईंजेशन कहते हैं।

आपको इन चित्रों को अर्धजागृत मन तक पहुंचाना है। लेकिन ये चित्र आसानी से बिना किसी रुकावट के अर्धजागृत मन तक पहुंचे उसके लिए रिलेक्सेशन में बैठकर (मनकी शांत अवस्था में पहुंचकर) यानि कि आल्फा अवस्था में मनोचित्रण करना है। आसानी से रिलेक्सेशन करने के लिए आप हमारी रिलेक्सेशन की सी.डी. का उपयोग कर सकते हैं।

विज्युअलाईंजेशन हमेशा चालू वर्तमान काल में ही करना है। यानि कि यह धन-दौलत आपके पास आ गई है और अब आप उसका उपयोग कर रहे हो ऐसे चित्र आपको अपने अर्धजागृत मन को देने हैं। यह चित्र आपको खूब भावुक हो कर देखने हैं। जब आप के पास इतनी धन-दौलत आ जाएगी तब आपको जिस खुशी और रोमांच का अनुभव होगा वही खुशी और रोमांच का अनुभव आपको मनोचित्रण के समय करना है।

यह मनोचित्रण आपको रोज किसी एक निश्चित समय पर करना है। विज्युअलाईंजेशन को अधिक विस्तार से समझने और सीखने के लिए आप हमारी 'विज्युअलाईंजेशन' पुस्तक का उपयोग कर सकते हैं।

6. रोज ‘मनी-मंत्र’ का जाप कीजिए

आपका अर्धजागृत मन चित्र के अलावा शब्दों की भाषा भी खूब अच्छी तरह से समझ सकता है। इसलिए अब शब्दों द्वारा अर्धजागृत मन की प्रोग्रामिंग कैसे की जाये वह देखते हैं। इसे अंग्रेजी में एफरमेशन या ओटोसज्जेशन कहते हैं। हिन्दी में इसे ‘आत्म-सुझाव’ (खुद को दिये जाने वाले सुझाव) कहते हैं।

आपको पता ही है कि हर धर्म में कोई न कोई मंत्र होता है। जैसे कि ॐ नमः शिवाय मंत्र, गायत्री मंत्र, नवकार मंत्र, श्री कृष्णन् शरणं ममः, अल्ला हो अकबर, ‘The God is Great’, जैसे कई मंत्र हैं। ये सभी मंत्र आत्म-सुझाव के सिद्धांत के ऊपर काम करते हैं और हर कोई मंत्र हमारे जीवन में कुछ न कुछ शुभ परिणाम देता है। इस तरह हमने धनवान बनने का मंत्र बनाया है, जिसे हम ‘मनी-मंत्र’ कहेंगे।

यह मंत्र है

‘मैं पैसों का चुंबक हूँ’, इस मंत्र को रोज एक पृष्ठ पर लिखना शुरू करे। जैसे-जैसे दिन बीतते जायेंगे वैसे-वैसे इस मंत्र का असर आपकी आमदनी के ऊपर दिखाई देगा।

7. धनवान बन गये हैं ऐसा महसूस कीजिए

अंतिम रिसर्च के मुताबिक अर्धजागृत मन को सूचना देने की भाषा है – ‘फिलिंस की’, यानि की भावनाओं की भाषा।

इस भाषा का उपयोग आप कैसे करेंगे?

इस पुस्तक के एक लेखक डॉ. अद्विया जब 16 साल के थे (1967) तब पहली बार राजकोट से मुंबई घूमने के लिए गये थे। तब वे बहुत गरीब थे। लेकिन डॉ. अद्विया को धनवानों जैसा जीवन जीने की खूब तमन्ना थी।

उस समय उनके पिताजी ने उन्हें मुंबई में खर्च के लिए 10 रुपये दिये थे जो मुंबई के खर्च का पूरा बजट था। उस समय वे मुंबई की फेमस ‘होटल ताजमहल’ में 5 रुपये की चाय पीकर एक घंटे बैठे और धनवान जैसा महसूस किया था। वह महसूस उन्हें अब तक याद है कि जैसे वो कल की ही बात हो।

उस समय वे अर्धजागृत मन का विज्ञान नहीं जानते थे फिर भी उन्होंने अनायास ही ताजमहल होटल की प्रोग्रामिंग कर डाली थी और इसी प्रोग्रामिंग के परिणाम के ज़रिये ही उन्होंने ताजमहल होटल में माइन्ड पॉवर के कई सारे प्रोग्राम्स किये और वे उसी होटल में कई बार ठहरे हैं।

ऐसा ही दूसरा अनुभव उन्होंने अपनी दुबई की यात्रा के दौरान किया। वे अगस्त 2011 में छुट्टियों में जब दुबई गये थे तब वहां की फेमस ‘पाम जमुराह’ की चोटी पर बनी हुई ‘एटलान्टिस होटल’ में ठहरे थे। हेलिकॉप्टर राइड से पूरा

दुबई घूमें और वहाँ की फेमस होटल ‘बुर्ज-अल-अरब’ में डिनर लिया था। उस डिनर की कीमत 6000 रुपये थी।

एन्थनी रोबिस जो विश्व के सब से मंहगे वक्ता हैं उनका 6 दिन का “Date with Destiny” प्रोग्राम जब हम दोनों लेखक अटेन्ड कर रहे थे तब हमारे साथ विश्व के कई सारे धनवान लोग भी थे। वो प्रोग्राम बाली की ‘Seven Star Hotel’ में था। उस यात्रा के दौरान हम दोनों ने अति धनवान लोगों जैसा महसूस किया था।

दीपक धाबलिया 2010 में टोरन्टो शहर में अपनी पत्नी जिज्ञा के साथ ‘नायग्रा फॉल’ के सामने ‘शेरेटोन होटल’ में 30 वीं मंजिल पर ठहरे थे और उनके कमरे की खिड़कियों से ‘नायग्रा फॉल’ दिखता था। उस समय उन्होंने अति धनवान जैसा महसूस किया था।

इस प्रकार आप भी धनवान जैसा महसूस करना शुरू कीजिए। यदि आप साल में 10 जोड़ी कपड़े खरीदते हैं तो केवल तीन जोड़ी ही खरीदीये, मगर मंहगे और ब्रान्डेड कपड़े ही पहनने का नियम बनाइए।

आप छुट्टियों में साल में दो बार घूमने जाते हो तो चाहे एक बार ही जायें मगर ट्रेन में फर्स्ट ए.सी. से या हवाई जहाज में जायें और जहाँ आप जायें वहाँ कि श्रेष्ठ होटल में ठहरना पसंद करें।

धनवान मित्र बनाईये। उन के घर पर जायें। उनकी गाड़ी में जायें तो आपकी धनवान बनने की इच्छा और भी अदम्य बनती जायेगी। आपके अर्धजागृत मन की प्रोग्रामिंग इन धनवान बनने के भावों के जरीये आपको करनी है।

8. नियमित रूप से ‘धन की प्रार्थना’ करें

जैसे हर एक धर्म में प्रार्थना होती है और उससे इच्छित नतीजा भी मिलता है वैसे ही धन की इस प्रार्थना को नियमित रूप से करने पर आपके धन-दौलत में निश्चित वृद्धि होगी।

धन की प्रार्थना

धनवान बनना आध्यात्मिक कार्य है।

मेरा जन्म बहुत धनवान बनने के लिए ही हुआ है।

धन एक ऊर्जा का स्वरूप है।

समग्र ब्रह्मांड एक ऊर्जा ही है।

यह ऊर्जा बड़ी मात्रा में मेरे आस-पास बह रही है।
इस ऊर्जा को मैं आसानी से अपनी ओर आकर्षित करता हूँ।

धनवान बनना आध्यात्मिक कार्य है।
मेरा जन्म बहुत धनवान बनने के लिए ही हुआ है।

धनवान बनना बहुत आसान है।
मैंने धनवान बनने का दृढ़ निश्चय कर लिया है।

धनवान बनने का ज्ञान
मुझे चारों दिशाओं से मिल रहा है।
मेरे इस ज्ञान में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है।

धनवान बनना आध्यात्मिक कार्य है।
मेरा जन्म बहुत धनवान बनने के लिए ही हुआ है।

मेरे सामने धनवान बनने के
एक के बाद एक रास्ते खुल रहे हैं।
इन रास्तों पर चलकर मैं अवश्य धनवान बनूँगा।

योग्य दिशा में और
योग्य तरीके से मेहनत करके
मैं धन प्राप्त कर रहा हूँ।

धनवान बनना आध्यात्मिक कार्य है।
मेरा जन्म बहुत धनवान बनने के लिए ही हुआ है।

धनवान बनने के नियमों को
मैंने आत्मसात कर लिया है।

इन नियमों का, बिना रुके पालन करके
मैं अधिक से अधिक धनवान बन रहा हूँ।

मेरे पास आये हुए धन का मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ।
और इसके लिए मैं विश्वशक्ति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

धनवान बनना अध्यात्मिक कार्य है।
मेरा जन्म बहुत धनवान बनने के लिए ही हुआ है।

मेरे पास आया हुआ धन बहुत शुद्ध और पवित्र है।
इस धन का उपयोग
मैं अपने और दूसरों के सुख के लिए ही करता हूँ।

जैसे-जैसे धन बढ़ रहा है वैसे-वैसे औरों का भी
अधिक से अधिक कल्याण हो रहा है।

धनवान बनना बहुत कल्याणकारी है।
धनवान बनना अध्यात्मिक कार्य है।

मेरा जन्म बहुत धनवान बनने के लिए ही हुआ है।

9. धनवान बनने के मौके को पहचानें और पकड़ें

आगे बताया गया है जैसे-जैसे आप एक के बाद एक सीढ़ी चढ़ते जाओगे वैसे वैसे धनवान बनने की आपके अर्धजागृत मन की प्रोग्रामिंग होती जायेगी। आप जानते ही हो कि आपका अर्धजागृत मन अल्लादीन के ‘जादुई चिराग’ के ‘जिनी’ जैसा बहुत शक्तिशाली है। एक बार उसे निश्चित रूप से पता चल जाये कि आपको क्या चाहिए, फिर उस चीज़ को पाने के लिए वह अपनी सारी शक्तियाँ काम पर लगा देगा।

सब से पहले वह उसे पाने के लिए योजना बनायेगा। जिसे डिवाइन आयोजन कहते हैं और आपके लिए योग्य मौके का निर्माण करेगा। यदि आप सचेत होंगे तो आप उस मौके को तुरंत पहचानोगे और सचेत नहीं होंगे तो भी वह आपको मौका दिखाने की कोशिश करेगा। अर्धजागृत मन अपनी अनोखी भाषा, जैसे की स्वयं-स्फुरणा, सपनों की भाषा, हंचेस या झालक के द्वारा मौका दिखाने की कोशिश करेगा।

जब हम सुबह में अच्छे मूड में तरो-ताजा होते हैं तब या स्नान करते समय हमें जो नये-नये विचार आते हैं उन्हें ‘इन्च्यूशन या स्वयंस्फुरणा’ कहते हैं। अब आपको जब नये विचार आयें यानि कि ‘इन्च्यूशन या स्वयंस्फुरणा’ हो तब आप उसको बिना भूले नोट कर लें, क्योंकि इसी सोच में ही आपके धनवान बनने का मौका छिपा हुआ है। आपने ऐसा भी सुना होगा कि किसीने सपने में, जमीन में सोने से भरा घड़ा देखा और खोदकर देखा तो वहाँ से सचमुच सोने का घड़ा निकला। उसके अर्धजागृत मन ने सपनों के माध्यम से उसे इस मौके के बारे में जानकारी दी।

शायद ऐसा भी हो कि आपको कोई नया व्यवसाय करने के विचार आते ही रहें, आपके रोकने की कोशिश करने पर भी वे रुक न पाये। इन्हें 'कम्प्लसीव थोट्स या हंचीस' कहते हैं। इस हंचीस में आप के धनवान बनने के मौके का निर्देश हो सकता है। कभी ऐसा भी हो कि आप अपने कार्य में व्यस्त हों, लेकिन अचानक उसी समय कोई नया विचार या आईडिया आ जाए। अंग्रेजी में उसे 'फ्लेश' कहते हैं। इस तरह हंचीस या फ्लेश द्वारा आपका अर्धजागृत मन आपके आने वाले धनवान बनने के मौकों का संकेत देता है।

आपको अर्धजागृत मन द्वारा दिए जाने वाले संकेतों कि इस भाषा को ठीक से समझना पड़ेगा और उसके द्वारा धनवान बनने के कई मौकों में से किसी एक मौके को आपको पहचानना होगा।

जब आपके सामने ऐसा कोई मौका आ जाये तब आपको उसे पकड़ना है और उसके ऊपर योग्य कार्य करना है। आई. बी. एम. को जब 1979 में भारत में से प्रतिबंधित कर दिया गया तब अजीम प्रेमजी ने इस खबर को एक मौका समझकर उसे पहचाना और वह अपने वर्तमान व्यवसाय में विविधता लाकर कम्प्यूटर हार्डवेयर के व्यवसाय में कूद पड़े।

जब कम्प्यूटर उद्योग का प्रारंभ हुआ तब, बिल गेट्स ने इन सभी कम्प्यूटरों को सोफ्टवेयरों की जरूरत होगी, उस मौके को पहचान कर के माइक्रोसोफ्ट कंपनी के जरीये सोफ्टवेयर का बिज़नेस अपनाया।

जब हिन्दुस्तान लीवर की 'सर्फ' की 1 किलोग्राम की बैग 9 रुपये में मिलती थी तब गरीब और मध्यमवर्ग के लिए 3 रुपये किलो वाला पाउडर बनाकर बेचने का मौका करसनभाई पटेल ने पहचान लिया।

अधिकतर लोग सिर्फ विज्युअलाईजेशन करके बैठे रहते हैं। वे लोग धनवान नहीं बन सकते। धनवान बनने के लिए सख्त मेहनत के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। वह मेहनत योग्य दिशा में और सही रीत से कैसे की जाए यह हमारे से पहले जो लोग धनवान बन चुके हैं उनसे सीखने को मिलेगी।

10. धनवान बनने के सिद्धांतों का पालन करें

पिछले प्रकरणों में हमने धनवान लोगों के जो सिद्धांत क्रमशः समझाये हैं उन नियमों को ठीक से समझकर सीख लीजिए और उसका सच्चे दिल से इस्तमाल करें।

आपकी जानकारी के लिए फिर से एक बार हम उन सिद्धांतों को देखते हैं:

1. बड़े सपने देखना
2. सपनें पूरे करने के लिए स्व-विकास करना
3. नये-नये विचार करना (think out of the box)
4. विचारों को लगन की हद तक ले जाना

5. नये आने वाले मौकों को पहचानना
6. विचारों का अमल करने के लिए साहस करना
7. मुसीबतों का दृढ़ता से सामना करना
8. दीर्घदृष्टा बनना
9. नीति-नियमों का पालन करना
10. अंतर्मानवीय संबंधों का विकास करना
11. शैक को व्यवसाय बनाना

11. धन कमाने के बाद उसे संभालिए और उसमें वृद्धि करें

धन को हमारे पास आकर्षित करना यानि कि पैसा कमाना एक बात है और उस पैसे को हमारे पास अच्छी तरह से संभालना और उसमें वृद्धि करना दूसरी बात है। जीवन की शुरुआत के सालों में हमें पैसे कमाने के लिए काम करना चाहिए। लेकिन बाद में पैसों को हमारे लिए काम करना शुरू कर देना चाहिए। इसे ‘धन निवेश की सबसे बड़ी खूबी कहते हैं।’

बहुत लोग अपनी कार्य कुशलता और मेहनत के जरीये हर महीने अच्छा-खासा धन कमाते हैं लेकिन उन्हें पैसों के निवेश और वृद्धि के बारे में कुछ भी पता नहीं होने के कारण पूरी जिंदगी काम ही करते रहते हैं।

अधिकतर लोग अपनी कमाई में से प्रथम खर्च करते हैं और बाद में जो कुछ बचता है उस में से बचत करते हैं। इसीलिए अधिकतर लोगों की बचत कम होती है। क्योंकि वे खर्च के ऊपर काबू नहीं रख सकते हैं। सबसे पहले तो यह नियम बनाईये कि हर महीने आपको कमाई के कितने प्रतिशत की बचत करनी है। हमारा तो आपको यह सुझाव है कि हर महीने की जो भी कमाई हो उसमें से 20 प्रतिशत आय बचत करने के लिए सब से पहले निकाल कर बाकी के 80% में से घर-खर्च चलाएं।

धन निवेश का एक सिद्धांत समझने जैसा है। हमारे जीवन में धन के बारे में दो बातें होती हैं - अंग्रेजी में उसे ‘एसेट्स और लायेबिलिटी’ कहते हैं। ‘एसेट्स’ यानि जो हमारे जेब में पैसों की बढ़ौती करें या हमारे लिए जो आमदानी का माध्यम हो। ‘लायेबिलिटी’ यानि कि जो हमारी कमाई में से जा रहा है या कम हो रहा है।

बैंक की फिक्स डिपोजिट, लाईफ इन्श्योरेन्स, प्रोविडेन्ट फंड, डिबेन्चर, शेयर, रैयुलर कमाई करे वैसी स्थावर, संतुलित जायदाद, रॉयल्टी, यह सब ‘एसेट्स’ है। टी.वी., डी.वी.डी. प्लेयर, कार, फार्महाउस, छुट्टियाँ, गहने तथा अन्य घर-खर्च ये सब ‘लायेबिलिटी’ हैं।

ऐसा देखा गया है कि धनवान लोग अपनी एसेट्स बढ़ाने के पीछे ही अपना ध्यान ज्यादा केन्द्रित करते हैं और लायेबिलिटी को नहीं बढ़ाते। जबकि गरीब और मध्यमर्वा के लोग अपनी लायेबिलिटी बढ़ाते हैं मगर एसेट्स बनाने के पीछे अधिक ध्यान नहीं देते। जिसके कारण वे धनवान नहीं बन पाते।

आपको शायद लगेगा कि बचत कहाँ और कैसे की जाए? तो आइये, समझते हैं। निवेश का सरल सिद्धांत है कि 'हाई रिस्क - हाई रीटर्न', यानि कि जितना बड़ा रिस्क उठाओगे उतना अधिक रीटर्न मिलेगा। लेकिन कितना रिस्क उठाना है वह आपकी उम्र के ऊपर निर्भर है।

यदि आप हाल में युवा-अवस्था में हो तो आप अपने कुल निवेश में से 70% हाई रिस्क वाला निवेश (इन्वेस्टमेन्ट) करें और 30% लो रिस्क में निवेश (इन्वेस्टमेन्ट) करें। जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती जाये वैसे-वैसे आप हाई रिस्क वाला निवेश कम करते जायें और लो रिस्क में निवेश बढ़ाते जायें।

60 साल की उम्र के बाद 20% से ज्यादा निवेश हाई रिस्क में नहीं होना चाहिए। कम खतरे वाला निवेश यानि कि बैंक की फिक्स डिपोजिट, पोस्ट ऑफिस बचत योजना, सरकार के बॉन्ड, जीवन बीमा, इत्यादि। ज्यादा खतरे वाला निवेश यानि शेयर, धातु, म्युच्युअल फंड और जमीन इत्यादि।

धन निवेश का एक खास नियम है कि, "Don't put all eggs in one basket." यानि कि आपके सभी अंडे एक ही टोकरी में मत रखें। यदि आपने सभी अंडे एक ही टोकरी में रखें हो और टोकरी गिर जाये तो सभी अंडे टूट जायेंगे।

यह गलती डॉ. अद्विया ने 1991 में की थी। उन्होंने अपनी साउदी अरेबिया की सारी बचत शेयर मार्केट में लगा दी थी और हर्षद महेता का अनैतिक आचरण खुलने से शेयर मार्केट टूट गई थी और डॉ. अद्विया ने अपनी अधिकतर कमाई गवाँ दी थी।

ऐसी गलती आप कभी मत करना। आपका निवेश अलग-अलग जगह पर बहुत सी चीजों में होना चाहिए।

आपके मौज-शौक्र की चीजें खरीदने की लालच को थोड़ी देर के लिए रोक कर जब आपके बड़े खतरे वाले धन निवेश से आमदानी शुरू हो जाये उसके बाद ही मौज-शौक्र की चीजें खरीदनी चाहिए।

अधिकतर पढ़े-लिखे लोग यहीं पर ही गलती कर बैठते हैं। जैसे ही उनकी मेहनत की आमदानी शुरू होती है कि तुरंत ही वे किस्तों से सब भोग विलास के साधन खरीदने लगते हैं।

घर, गाड़ी, टी.वी. और फ्रिज की किस्ते भरने में ही उनकी जिंदगी पूरी हो जाती है और वे बचत नहीं कर पाते।

इस पुस्तक में बताये हुए कदम उठाने से आपको नतीजें मिलना शुरू हो जायेंगे यानि कि आपकी आमदनी में बढ़ोतरी होती जायेगी। इस आमदनी के बढ़ने में कुदरत का (यदि आप भगवान में मानते हो तो भगवान का) योगदान होगा।

इसके अलावा जाने-अनजाने अनगिनत लोगों का योगदान आपको धनवान बनाने में होगा। इन सब लोगों और कुदरत के प्रति कृतज्ञता प्रगट कीजिए।

कुदरत और लोगों के अलावा हमें पैसों का भी धन्यवाद करना जरूरी है। क्योंकि हमारे जीवन में कभी हम पैसों के बिना नहीं रह सकते।

हमारे जीवन का एक भी व्यवहार धन के बिना नहीं चलता है। लेकिन फिर भी हम कभी पैसों के प्रति दिल से कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते।

इसलिए आज से जब भी पैसा आपके जीवन में खुशियाँ लाये तब आप पैसों का दिल से धन्यवाद जरूर अदा करें। यानि कि “थेन्क्यु मनी” कहना है।

इसीलिए ही शायद हमारी हिन्दू संस्कृति में लक्ष्मी पूजन का महत्व बताया गया है। ताकि कम से कम साल में एक बार तो मनुष्य लक्ष्मी जी यानी की धन के प्रति धन्यवाद अदा करें।

धनवान बनना सबसे बड़ा आध्यात्मिक कार्य है।

v

धनवान बनने के सफर में...

1. बेलेन्सिंग कीजिए

मार्ईकल जैक्सन, राजेश खना और स्टीव जोब्स अपने व्यवसाय में बहुत ऊँचाई पर पहुँचे थे। उसके द्वारा वे धनवान भी बने थे। लेकिन उनका जीवन और अंत दुःखदायक था। बिल गेट्स, वॉर्न बफेट, गोविंदभाई धोलकिया, करसनभाई पटेल, गोविंदभाई काकडिया यह सब लोग भी अपने व्यवसाय में ऊँचाई पर हैं, लेकिन मार्ईकल जैक्सन या स्टीव जोल जोब्स जैसा दुःख उनके जीवन में नहीं आया, पता है क्यों?

क्योंकि इन सब लोगों ने अपने जीवन का विकास संतुलित तरीके से किया है।

ये संतुलित तरीका क्या है, ऐसा शायद आप सोचते होंगे। आइए देखें, हमारे जीवन के चार अलग-अलग पहलू हैं; भौतिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक।

हमारे जीवन में जब इन चारों पहलुओं में एक समान प्रगति होती है, तब सुख का अनुभव होता है। लेकिन एक भी पहलू कमजोर होने पर हमें सुख के बदले दुःख का अनुभव होता है और कभी जीवन का दुखद अंत भी आ जाता है। यदि आप देखोगे तो आपके आसपास कई ऐसे धनवानों के किस्से नजर आयेंगे जिनके पास धन तो बहुत है, फिर भी शारीरिक बीमारी है, या पारिवारिक संबंधों में बहुत तकलीफें हैं।

हम जब धनवान बनने की ठान लेते हैं और उसकी शुरुआत करते हैं तब हमें हमेशा इस बात का ख्याल रखना है कि हम सुखी होने के लिए धनवान बनने जा रहे हैं, नहीं कि दुःखी होने के लिए। सुख की अनुभूति करने के लिए अच्छे स्वास्थ्य की बहुत जरूरत है और हमारे आसपास के सभी लोगों के साथ उत्कृष्ट संबंध बनाये रखने की जरूरत है। उसके अलावा जरूरतमंदो को उपयोगी होने की भावना संतुष्ट होनी भी जरूरी है। जो हर एक के भीतर बीज़ स्वरूप छिपी हुई होती है।

इसलिए आपकी इस धनवान बनने की यात्रा में निरंतर इन तीन बातों का विशेष ख्याल आपको रखना है। सिर्फ पैसे कमाने के लिए काम करना नहीं है। पैसों के कारण नज़दीकी लोगों के साथ रिश्ते बिगड़ जाये वैसा कोई भी कार्य हमें नहीं करना है। प्रमोद महाजन के पास बहुत पैसे थे लेकिन पैसों की वज़ह से ही अपने भाई के साथ उनके संबंध में दरार आई और उन रिश्तों का दुःखदायक अंत आया।

ऐसे कई किसे देखने को मिलते हैं कि मनुष्य के पास जैसे-जैसे संपत्ति बढ़ती जाती है वैसे-वैसे ही उनको बुरी आदतें और व्यभिचार जैसे दुर्गुण आते हैं। जो उनके दुःख का कारण बन जाते हैं।

सुनील दत के पास पैसों की कहाँ कमी थी? लेकिन उनके बेटे संजय दत ने उस पैसों का अपने सुख के लिए उपयोग नहीं किया और खुद अपने लिए और अपने परिवार के लिए मुसीबतें खड़ी करी दी। ईश्वर कृपा से अब सब ठीक है।

माईकल जैक्सन के पास भी जैसे-जैसे पैसे आने लगे वैसे-वैसे उनकी मुसीबतें बढ़ती गईं। नशीली दवाओं की लत हो गई, बच्चों पर व्यभिचार के मुकदमें उन पर हुए। उन्होंने दो बार शादी की और दोनों बार तलाक लिया। अंत में इन सभी बातों की वजह से वह धनवान से कर्जदार बन गये थे।

सिक्के की दो पहलुओं की तरह धन के भी दो पहलू होते हैं। धन जितना सुख दे सकता है उतना दुःख भी दे सकता है। सुख देना या दुःख देना इस बात को धन नहीं तय करता लेकिन धन के मालिक तय करते हैं।

इसलिए यह बात हमेशा याद रखिये और सचेत रहिये कि सुखी होने के लिए कमाया हुआ धन आपको कहीं दुःख के रास्ते पर ना ले जाये।

2. धन के द्वारा आध्यात्मिकता

आध्यात्मिकता यानि कि इस दुनिया के सभी जीवों को सुखी करने का भाव और प्रयास। यदि आप गरीब होंगे तो यह भाव और प्रयत्न एकदम सामान्य कक्षा के होंगे लेकिन यदि आप धनिक होंगे तो यही भाव और प्रयत्न उच्च कक्षा के होंगे।

जोन डी रॉकफेलर पैट्रोल के व्यवसाय में से बहुत धनवान बनें लेकिन भीतर से वे बहुत दुःखी थे। वे आत्महत्या के विचार करते थे। उस समय उन्होंने स्वामी विवेकानंद की कीर्ति के बारे में बहुत सुना था। स्वामी विवेकानंद ने उन्हें मिलते ही सीधा सवाल किया कि क्या आप आत्महत्या करने की सोच रहे हो? जोन रॉकफेलर चौंक उठे कि इन्हें कैसे पता चला कि मैं आत्महत्या करने की सोच रहा हूँ। तब स्वामी विवेकानंद ने उनको समझाया कि आप अपनी संपत्ति का उपयोग केवल अपने सुख और ऐच्याशी के लिए कर रहे हो। जो मनुष्य ऐसा करता है वह भीतर से कभी सुख-चैन नहीं पा सकता। उसे आत्महत्या के विचार जरूर आते हैं। जब तक अपनी धन-दौलत का उपयोग दुःखी और गरीब लोगों की उन्नति के लिए नहीं करोगे तब तक आपको सच्चे सुख की अनुभूति नहीं होगी।

इस मुलाकात से रोक फेलर के जीवन का परिवर्तित हो गया और उन्होंने 'रॉक फेलर फाउण्डेशन' नामक चैरिटी संस्था की शुरूआत की। जिसके जरिये उनकी अरबों डॉलर की मदद से करोड़ों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया। रॉकफेलर का जीवन धन्य हो गया और वे इतिहास का एक अमर पात्र बन गये।

बिल गेट्स और वॉरन बफेट को भी इस बात के सत्य का महसूस हुआ, तब से उन्होंने भी अपनी धन-दौलत का उपयोग आध्यात्मिक रास्ते में करने का निश्चय किया और 'मिलिन्डा बिल गेट्स फाउण्डेशन' की स्थापना की। उसमें अपनी अधिकतर पूँजी का दान किया। वे धन-दौलत द्वारा समग्र विश्व के अविकसित देशों में अपना बहुत योगदान देते हैं। इसके अलावा उन्होंने विश्व के अन्य धनवान लोगों को भी इसके बारे में प्रोत्साहित किया और उनको भी यह राह दिखाई।

ऐसा कहा जाता है कि दीपचंद गाड़ी नामक एक जैन सज्जन, जाति के भेदभाव के बिना अंदाज़न रोज 5 लाख रुपयों का दान करते हैं। खास करके शैक्षणिक संस्थाओं में उनका अनुदान अधिक रहता है।

इसी तरह गोविंदभाई धोलकिया और गोविंदभाई काकडिया भी निरंतर दान करते रहते हैं। यदि आप सौराष्ट्र की किसी शैक्षणिक संस्थाओं के दाताओं की

नामावली देखेंगे तो अधिकतर संस्थाओं में इन तीनों महान दान-दाताओं के नाम देखने को मिलेंगे।

निरमा वाले करसनभाई पटेलने तो वर्ल्ड क्लास ‘निरमा युनिवर्सिटी’ बनाकर समाज के लिए बड़ा लाभदायी और आध्यात्मिक कार्य किया है।

श्री गौतम अदाणी भी उसी राह पर आगे बढ़ रहे हैं। अज्ञीम प्रेमजी ने भी यही काम किया है। बिला परिवार ने बहुत बड़े मंदिर बनाये हैं और राजस्थान के पिलानी में बहुत अच्छी शैक्षणिक संस्था स्थापित की है।

मुकेश अंबाणी ने भी ‘पैट्रोलियम युनिवर्सिटी’ बनाकर यह कार्य करने का प्रारंभ किया है। उनकी पत्नी नीता अंबाणी भी ऐसी बहुत सारी चेरिटी संस्थाओं में कार्य करती हैं।

जिन्दाल परिवार ने दिल्ली के पास में सोनीपत में ‘लॉ कॉलेज’ बनाई है और दिल्ली में वर्ल्ड क्लास की स्कूल बनाई है।

सरकार सब का भला नहीं कर पाती। सरकार की अपनी कुछ मर्यादाएं हैं। इसलिए जो लोग साधन संपन्न हैं उन लोगों का यह फर्ज बनता है कि वे समाज को सुखी करने के लिए अपनी संपत्ति और अपनी कार्य कुशलता का उपयोग करें। यह सबसे बड़ा आध्यात्मिक कार्य है।

कोई एक व्यक्ति अकेला बैठकर ईश्वर की पूजा-आराधना में ही अपना समय बिताये और सबके कल्याण की कामना करता रहे और दूसरा व्यक्ति अपनी कार्यकुशलता और मेहनत से बहुत धन इकट्ठा करके उसका उपयोग समाजोपयोगी कार्य में करें तो दोनों में आप किसे अधिक आध्यात्मिक व्यक्ति मानोगे? हमारे मतानुसार दूसरा व्यक्ति अधिक आध्यात्मिक है।

आप भी आध्यात्मिक व्यक्ति बनना पसंद करेंगे। आगे बताये गये दोनों उदाहरणों में से आप कौन सा आध्यात्मिक मार्ग पसंद करेंगे? पहला या दूसरा? ओशो रजनीश हमेशा कहते थे कि हिन्दुस्तान से अधिक अमेरिकन और युरोपियन लोग आध्यात्मिक बन सकते हैं क्योंकि उनकी पैसे की भूख अब पूरी हो गई है और उनके पास अपनी जरूरत से ज्यादा पूँजी आ गई है। हम दोनों का मंतव्य है कि सही अर्थ में आध्यात्मिक बनने से पहले आप धनवान बनें और उसके बाद उस धन के जरीये आप अनगिनत लोगों का कल्याण करें।

लेकिन एक बात याद रखना कि यह धन आपकी मेहनत और कार्य कुशलता से नीति-नियमों का पालन करके कमाया हुआ होना जरूरी है। यदि आप लोगों को लूटकर, गलत काम करके धन कमाये तो यह धन आपको या किसी और को सुखी नहीं कर सकेगा।

3. सुखी होने के लिए धन का उपयोग

मनुष्य को सुख की अनुभूति तब होती है, जब उसके पास अच्छा स्वास्थ्य हो, अच्छी पदवी या ज्ञान हो, अच्छा सा सुंदर घर, वाहन और मनपसंद काम हो। आसपास के लोगों के साथ उत्कृष्ट रिश्ता हो और वह सामाजिक कार्य करता रहे। इन सबके लिए हमें धन की ज़रूरत होती है। धन में सुख या दुःख देने की शक्ति नहीं है लेकिन हम किस तरह धन का उपयोग करते हैं उसके द्वारा सुख या दुःख का जन्म होता है।

इसलिए आप तय कर लीजिये कि आपको अपने धन का उपयोग निम्नलिखित पहलुओं का विकास करने के लिए करना है:

स्वास्थ्य

कहते हैं कि हमारा स्वास्थ्य ही अपना पहला सुख है। गरीब व्यक्ति के पास रहने के लिए अच्छा घर नहीं होता, पहनने के लिए अच्छे कपड़े नहीं होते, खाने के लिए पौष्टिक आहार नहीं होता, बीमार होने पर इलाज के लिए भी पैसे नहीं होते। इन सब के लिए पैसों की ज़रूरत होती है। जब कि धनवान के पास इन सब चीजों के लिए पैसे होते हैं, जिसके जरीये वे अपना स्वास्थ्य अच्छा रख सकते हैं। आप अपने धन का उपयोग अच्छे से अच्छा स्वास्थ्य बनाने के लिए कीजिए।

मानसिक विकास

आपने ऐसे कई किस्से सुने होंगे कि गरीब माँ-बाप की संतान खूब मेहनत करके उच्च शिक्षण लेना चाहती है लेकिन पैसों के अभाव के कारण यह नहीं हो सकता। मगर जिनके पास पैसे हैं उनको ऐसी कोई समस्या नहीं है फिर भी कई धनवानों के बच्चे अच्छा पढ़ते नहीं हैं। जीवन के सर्वांगी विकास में मानसिक विकास का बहुत महत्व है। इसलिए हम दोनों लेखक अप्रैल 2010 में एन्थनी रोबिन्स के प्रसिद्ध कार्यक्रम में शामिल होने के लिए इन्डोनेशिया गये थे। वहाँ एक हप्ते में पाँच लाख रूपयों का खर्च किया था। इस तरह हम दोनों लेखक हमारे मानसिक विकास के लिए देश-विदेश में घूमकर विविध वर्कशॉपों के द्वारा कई अलग-अलग गुरुओं को मिलकर, हो सके उतना हमारा मानसिक विकास कर रहे हैं।

भौतिक विकास

हर एक मानव के भीतर प्राकृतिक रूप से ही अधिक से अधिक भौतिक सुख पाने की तमन्ना होती है। विशाल और अच्छे घर में रहने की, अच्छे से अच्छे वाहन में घूमने की, अच्छे से ब्रान्डेड कपड़े पहनने की, पूरी दुनिया घूमने की और खास करके स्त्रियों को खूब सारे गहने पहनने की इच्छा होती है। इन सभी इच्छाओं को पूरा करने के लिए बहुत सारे धन की जरूरत होती है। ये इच्छाएं होना और उसे पूरी करने की भावना यह कुदरती बात है। उसमें कोई नई बात नहीं है और वह पूरी होने से ही सुख की अनुभूति होती है।

इन भौतिक सुखों की इच्छाएं इतनी अदम्य होती हैं कि जब तक ये इच्छाएं पूरी नहीं होती तब तक दूसरों को सुखी करने का विचार आता ही नहीं। इसलिए जैसे-जैसे आपके पास धन की वृद्धि हो वैसे-वैसे ही आपको अपनी ये सभी इच्छाएं पूरी करते रहना चाहिए। ऐसा करने से आपकी आध्यात्मिक बनने की संभावना बढ़ती जाएगी। यदि आप भौतिक सुख पाएँगे नहीं तो उसका त्याग नहीं कर सकेंगे। हमारे अधिकतर ईश्वर भी राजसी परिवार से ही आये हुए हैं।

सामाजिक संबंध

प्रत्येक मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता। इसीलिए ही, कैद की एकांतवास की सजा सबसे मुश्किल सजा मानी जाती है। हर एक मनुष्य में ये दो इच्छाएं जरूर होती हैं कि कोई मुझे प्रेम करें और वह किसी से प्रेम करें। मनुष्य पैसों के बिना जी सकता है लेकिन प्रेम के बिना नहीं जी सकता। सुख के लिए पैसों से ज्यादा प्रेम का महत्व है। यह निर्विवाद सत्य है। इसलिए ही प्यार में असफल होने से पागल हो जाने के या आत्महत्या करने के किसी आपने सुने ही होंगे।

उत्कृष्ट सामाजिक रिश्ते भी बहुत सुख देते हैं। अच्छे रिश्ते निभाने के लिए भी धन की जरूरत होती है। किसी भी प्रसंग पर व्यवहार निभाने के लिए भी धन की जरूरत पड़ती है। धन से किसी को भी मुसीबत में या बीमारी के समय मदद कर सकते हैं। निर्धन मनुष्य इच्छा होने पर भी यह नहीं कर पाता। आप जितने अधिक धनवान होंगे उतनी अधिक मदद आप अपने परिवाजनों, स्त्रीजनों और दोस्तों की कर पाएँगे। अगर आप उनके साथ जुड़े हुए रिश्तों को अधिक मजबूत और अच्छा बनायेंगे तो उससे आपको बहुत सुख की अनुभूति होगी।

लेकिन अधिकतर किसी में संबंध बिगड़ने का प्रमुख कारण शायद धन ही होता है। इसलिए हमारे सौराष्ट्र में एक गुजराती कहावत है – “जर, जमीन अने जोर कजियाना त्रणेन छोरुं” यानि कि धन, जमीन और स्त्री ये तीनों ही अधिकतर झागड़े के मूल हैं।

आप आपके धन से दूसरों को मदद करके अपने रिश्तों में और भी निखार ला सकते हैं या पैसों के कारण परिवार या व्यवसायिक मित्रों के बीच झागड़े खड़े करके रिश्तों को ज़हरीला बना सकते हैं। यह आपके ही हाथ में है। यह

आपको ही तय करना है। हमारी नजर में जो व्यक्ति अपनी धन-दौलत से अपने आसपास वालों को अच्छे और बढ़िया ढँग से रख सकता है वह बहुत ही ज्ञानी इन्सान है।

Dr. Jeetendra Adhia's

Mind Training Institute

Many different courses and clinics related to mind, body, success, happiness and spirituality under one umbrella by trained faculties in ISO 9002 Certified Institute in the heart of Ahmedabad city.

Courses

- Mind Mastery
- Hypnosis
- Money
- N.L.P.
- Health and Healing
- Anger Management
- Visualization
- Transaction Analysis
- Train the Trainers Training
- Train the Writers Training
- Public Speaking
- English Speaking
- Personality Development
- Relationship
- Super Power Memory

Mind Power Clinic

- Confidence Building Clinic
- Anger Management Clinic
- Phobia Clinic
- Garbh Sanskar Clinic
- Positive Health Clinic
- Enjoy Exam Clinic
- Sound Sleep Clinic
- Painless Delivery Clinic
- Coronary Reversal Clinic
- Weight Balancing Clinic
- Spiritual Healing Clinic
- Power Vision Clinic
- Relationship Repair Clinic
- Past Life Regression Clinic
- Hypnotherapy Clinic

Counseling for any of your personal problem on one to one bases with Dr Adhia and his team.

Also learn all these subjects personally on one to one bases from Dr Adhia with prior appointment.

Please visit us for details either personally or on our website www.mindtraininginstitute.net

Location: 404, Legacy, Above: Nissan Show Room,
IIM ATIRA Road, Panjarapole Cross Road,
Ahmedabad-380015, Gujarat, India
Phone: +91 79 2630 2660/61

Timings: 10 a.m. to 6 p.m. Monday to Saturday

Dr.Adhia's Products

Books	Language
1. Prerna Nu Zarnu	Guj./Hindi/ Eng./Telugu/ Bengali/Marathi
2. Man Ane Jivan	Gujarati/Hindi
3. Mann Na Moti	Gujarati
4. Sneh Nu Jharnu	Gujarati/Hindi
5. Stree	Gujarati/Hindi
6. Memory	Gujarati/Hindi/ English
7. The Gift	English
8. Visulization	Gujarati/Hindi/ Marathi
9. T.A. Shikho Jindagi Jito	Gujarati/Hindi
10. Dhanvan to Banvu J Joyie	Gujarati/Hindi
11. Depression	Gujarati
12. 9 Ways to Manage Your Anger	English
13. N.L.P.	English
14. Goal Setting and Achieving	Gujarati/English
15. Leadership Etle	Gujarati
16. You can be responsible	English/Gujarati
17. Powers of Your Mind	Hindi/Eng.



18.	Subconscious Mind Says	Gujarati/Hindi
19.	How to choose a life partner?	Guj/English
20.	Kshan ne Sachavo	Gujarati
21.	Mari Vahli Dikri Ne	Gujarati/Hindi
22.	Mara Vahla Dikra Ne	Gujarati/Hindi
23.	Mari Vahli Patni Ne	Gujarati
24.	Mari Vahla Vidhyarthi Ne	Gujarati
25.	Prayer of Mind	Gujarati/Hindi/ Marathi/English
26.	Yauvan Ni Prarthna	Gujarati
27.	Matruvandana	Gujarati/Hindi
28.	Pitruvandana	Gujarati/Hindi
29.	My 10 inch Journey	English/Gujarati



	New Arrival	Language
1.	Lokona Man Jitvani Kala	Gujarati/Hindi
2.	Promise	Gujarati
3.	Habit of Going Extra Mile	Gujarati/Hindi
4.	Ekrar	Gujarati/Hindi
5.	Confidence	English/Gujarati/ Hindi
6.	Dhan ki Maha Prathana	Gujarati / Hindi



Pocket Books

1. Spring of Inspiration	Gujarati/Hindi/ English
2. 7 Step to Success	Gujarati/Hindi/ Marathi
3. Visulization	Gujartati/Hindi
4. Vakil ki Prathana	Hindi
5. Learn T.A. and win @ the Game of Life	English
6. Dhan ni Maha Prathana	Gujarati



Audio CDs

Language

1. Relaxation	Gujarati/Hindi/ English
2. Alpha Music	Gujarati/English/ Hindi
3. Man No Mahamantra	Gujarati
4. Prayer of Mind	Gujarati/Hindi/ English
5. Subconscious Mind Says	Gujarati/Hindi
6. Das Kadam Diamond Ke	Hindi
7. Insurance Agent's Relaxation & Guided Visualization	Hindi
8. Score More (Guided Visualization for Students)	Hindi



**Audio Books****Language**

- | | |
|---------------------------------|----------------|
| 1. Man ane Jeevan | Gujarati/Hindi |
| 2. Visulization | Gujarati/Hindi |
| 3. T.A. Shikho Jingdagi
Jito | Gujarati/Hindi |
-

**Video CDs / DVDs****Language**

- | | |
|---|----------------------------|
| 1. Spring of
Inspiration DVD (6
Hrs.) | Gujarati/Hindi/
English |
| 2. Prerna Ka Jharna
DVD (1 Hr.) | Hindi |
| 3. Yadshakti Na
Rahasyo DVD | Gujarati |
| 4. Prem Na Panthe
VCD | Gujarati |
-

**Posters**

1. Goal Chart - English/Gujarati
2. Tathastu - Gujarati
3. Car - English
4. Cheque - English
5. E.Q., I.Q., S.Q. - English
6. Circle of Concentration - English
7. Marksheets - English
8. Vision Board - English

Products Outlets

Available at **A.H. WHEELERS** Book stall at all Railway Stations of India and S.T. Stands of Gujarat
All Gujrat CROSSWORD Branch

AHMEDABAD - 079

Rudra Book Shop : 25-B, Govt.Co-op. Soc., Navrangpura, M : 98259 25947

Mind Training Institute : 404/B, Legacy, Panjarapol Cross Road 26302660/61

R.R. Sheth & Co. : Khanpur, Tel.: 2550 6573, 2550 1732

Ajay Publication : Aaradhna Comm. Centre, Relief Road, M. 98251 50562

Rupali Book Centre : K.B. Comm. Complex, Khanpur, Tel.: 2550 44 43

Hitesh Gandhi : Nr. Thakorbhai Desai Hall, Law Garden, Tel.: 26638773

S.T. Book Stall 1 & 4 : Gita Mandir S.T. Stand, M. : 98249 75562

Gujarat Pustakalaya : 11, Ellora Comm. Centre, 2550 6973, M. 98984 67262

Uzma Publication : 12, Faiz Complex, Khanpur, Tel.: 25500790

Mosinbhai : Aastodiya, Tel.: 25350794

Vijaybhai Dobariya : Gurukul, Memnagar, Ahmedabd 098256 86900

New Prakash Book Depo : Gokul Complex, Ellisbrdige, 079-26422111

Saurashtra Staionary : Bipin Patel 9824253141 Bapunagar

ANAND - 02692 and VALLABHVIDYANAGAR

Chandan General Stores : Station Road, Anand Tel. 2660 60 99250 99590

Ambica Book Store, Nana Bazar, V.V. Nagar M 9825545261

Pustak Mahal, Nana Bazar, V.V. Nagar 9924812095, 9409012868

Pandya & Sons, Mota Bazar, V.V. Nagar 9974598026

A. H. Wheeler & Co. Pvt. Ltd. Book Stall Railway Station, 9737765438

Ajay Book Stall, "Krishna Kunj", Nr. Mota Bazar, Vidhayanagar, 99254413936 **ankleshwar A. H. Wheeler (Ankleshwar)** C/o. Railway Book Store 9428685597

BARDOLI - 02622

Ramesh Traders : Sardar Baug, Opp. College, Tel.: 22 78 84

BARODA - 0265

Gujrat Pustakalay Sahakari Mandali

Popular Book Centre : O/s. Yuvraj Hotel, Nr. S.T. Stand,
Tel.: 279 44 24

The Allies Stores, Opp. Jubilee Gardern, Baroda, 9537648491

Sagar Book Publishers, 101-102-104, "Sukhdham Compex",
Mira Datar's Tekro, Navabazar, Baroda. 9979322746, 9879402375

Acharya Book Depot, Opp. Gandhi Nagar Gruh, Baroda.
9824286729

GangaSagar Pustakalay, Jagdish Lojni Bajuma, 9067115757,
8530151920

Maneesh Book Shop, 7, Payal Complex, Opp. M.S. University,
9898522447

Shreenath Newspaper Agency, Raopura, Baroda-390001
9898240228

Bharuch - 02642

A. H. Wheeler Railway Station, Bharuch 9723268037

Prajapati Book Store, 9879237236, 9898214517, 9898368426

Harilal Maganlal & Co., Katopore Gate, Bharuch - 392001
9227135356

Thakkar Book Depot, M. 9228299695, 9228176199

BHAVNAGAR - 0278

Kitab Ghar : High Court Road, Tel.: 5213257 M.: 98983 97271

Prasar : Rupani-Atabhai Road, **Lok Milap** : 1565, Sardar
Nagar, Tel.: 256 64 02,

S.T. Stand Book Stall : S.T. Stand

BHUJ - 02832 Sahajanand Rural Trust : G.M.D.C. Guest
House, M.: 9825227509

Bilimora - 2634 Arjunsinh Engineer : M. : 9998045188

GANDHINAGAR - 02712

Hariom Stationery : BG Dist. Shopping Centre, Sector-21, M.:
99244 55882

HIMMATNAGAR - 02772 Pravinsinh Zala : (M) +91-91734 18280

JAMNAGAR - 0288

School Point : Nr. St. Xaviers High School, M.: 98980 71514

Kirit Bhatt : Manu Farsan : Bardhan Chowk, Tel.: 2675512, 9898574748

JETPUR - 02823 Vidya Book Store : Opp. Central Bank Tel.: 221516

JUNAGADH - 0285

Kesari News Agency : Kalva Chowk, Tel.: 265 09 43, 265 48 19

Prerna Nu Jharnu Sahitya Book Stores : Mira Complex, M.: 98242 11446

LIMDI - 2752

Darshan Hotel : National Highway,

Jamuna Hotel : Nr. Jamuna Hotel, National Highway M.: 98248 13804

MEHSANA - 02762

Dinesh Prajapati: 44, Aashadipa Soc., Opp. Nirma Factory, M.: 94260 86244

Gujarat Pustakalaya : 1, Sardar Shoping Centre, Tel.: 252 426

Piyush Pustak Bhandar : Nr. S.T. Stand, 220350, (M) 98258 88 778

NADIAD - 0268

Mohmadbhai, S.T. Bus Stand, Nadiad 9974336344

Honey Book Centre, Old Bus Depot, Nadiad 9277951521

A. H. Wheeler & Co. Pvt. Ltd. Book Stall Railway Station, 9737765438

Student Book Stall, 13-14, Chankya Complex, Nadiad 9825438399

NAVSARI - 02637

Mansukhlal & Sons, Dudhiya Talav Road, Navsari 9428163480

College Store, Topiwala Mansion, Opp. Garda College, 9825099121

New College Road, 1, Dadabhai Navroji Shoping Centre, 9898215999

Shah Chatrabhuj Nanchand, Mota Bazar, Navsari 9879199651, 9727840900

PALANPUR - 02742

Treasure : Jivan Jyot Bldg, Jahanara Baug Road, Tel.: 225 13 20

Killol Enterprise : 106, White House, Tel.: 25 56 96 M.: 94263 88053

PATAN - 2766 Modern Book Stall : Opp. Bus Stand, Tel.: (O) 220129 (R) 22 10 09

PORBANDAR - 0286 Jayendra Chotai : Manish Stores, M.

99790 11011

RAJKOT - 0281

Johar Cards : 'Hasnain' Dr.Yagnik Road, Tel.: 246 22 52, M : 98242 10492

Pravin Pustak Bhandar : Opp. Rajkot Mun.Corp., Tel.:232460, 234602

Rajesh Book Shop : Yagnik Road, M.: 99241 33519

Bharat Book Store: Yagnik Road, Tel.:2465148

Ravi Prakashan : Yagnik Road, Tel.: 246 06 25, 248 34 90

Old & New Book Stall : Yagnik Road,

Rajesh Book Stall : Opp. Lodhawad Police Chowky, Tel.: 2233518

Minerwa Footware : Dharmendra Road, M.: 9898119097

Sanjeevani Ayurvedic Store : 2, Siddhnath Complex opp. Jivan jyot School,University Road Rajkot: Ph:9879878328,02812583755

SURAT - 0261

Indira Book Stall, Nr. Jain Dharmshala, Opp. Railway Station, 9879193114

Gajanan Pustkalay : Opp Commerce House, Tel. : 242 42 46, M : 98244 83772

Gajanan Book Depot : Tower Road, Tel. : 2365 49 21 M : 98797 40059

Panvala Stores : Lal Gate, Musha Chasmavalani Gali, Tel. : 243 71 55

Surat Book Centre : 9/48, Kotsafil Road, Opp. Dena Bank Tel.:243 69 11 M.: 98790 44220

Surat Book Stall : M.: 98790 44220

Book Smart : Sharon Plaza, Ambika Niketa Busstop, Tel: 222 33 64

Book Point, 41-42-43, Shreeji Arcade, B/h. Bhulka Bhavan School, Anand Mahal Road, Adajan, Surat. 9825803654

Sahaj Super Store Pvt. Ltd., Anand Mahal Road, Adajan. 9998989661

Padmavati Stationary, B-301, Arihant Residency, Adajan. 99913097383

Book World, E-42, Kanak Nidhi, Opp. Gandhi Smruti, Nanpura. 9825008182

The Popular Book Centre, 16, Jolly Plaza, Athawa Road, 9825519002

Lucky Book Store, Shop No-1, Omet Huse, Athawa Gate Surat 9825483447

Ghanshyam Book Depot, 4/829, Tower Road, Surat 9825110708

Sainath Book Stall, Surat Central Bus Station, Surat 9825536436

Harihar Pustakalya, 4/816/817, Tower Road, Opp. GPO Surat 9825636483

Dev Enterprise, Surat 9725608089

VALSAD - 02632

Rangeela Stores:¹² Trade Centre, Station Rd., P : 245708, 9825731218

Bulsar Book Store, 6-7, Gumahor Appt, Opp. Riddhi Siddhi Aptt., Valsad 9825146263

ST Book Stall, Valsad 9173359444, 9825130538

Mahavri Sales Corporation, Opp. Town Hall, Valsad 9825041364, 9909570698

Mahalaxmi Stores, 4, Akashganga, Opp. Bai Avabai Highschool, Halar Road, Valsad 9978759592

Prajapati Books Sotres, Opp. Bai Avabia Highschool, Valsad 9638206125

Deep Xerox & Gen. Store, ST Depot Road, Dharampur, Valsad 9909079590

VAPI - 0260

Crossword, 2nd Floor, Vikas Textorium, Nr. Upasana School, Gunjan, GIDC, Vapi. 6444066

Maruti Book Stores, 8, Tejal Complex, Nr. Ambamata Mandir Koparli Road, GIDC. Vapi 9428065789, 9428715033 **delhi - 011** Arunbhai Saraf M. 9958098076

Indore-0731 Parasbhai M. 93000 30005, 93000 30008

JABALPUR - Sanjiv Ray M. 9617744721

JAIPUR - 0149 (RAJASTHAN)

Rajesh Manish Agency : G-3, B-11, Mayur Tower, Nehru Bazar,

Tel. : 232 60 19 M.: 98291 39626

Madhya Pradesh (M.P.) - Madhavray M. 9755655368 Dindori
MUMBAI - 022 (MAHARASHTRA)

R.R. Sheth & Co. : Princess Street, Tel. : 2201 3441, 2205 8293

Mahavir Book House : 164, D.N. Road, Opp. VT Station, M.: 98210 23169

KOLHAPUR

Vitthal Kotekar : M.: 99211 11665

NASIK - 0253 World of Winner : 12, Steem Tower, Ambedkar Road, M.: 9921332766

NAGPUR - 0712 Shri Jalaram Medical Stores : Darodkar Square, Tel. : 276 81 95

PUNE - 020 Vijaybhai : 303, CV Prestige Classes, M. 93262 74507
Kumar Marketing : 16-15, Sukravar Peth, Bhorialli, Shubhansha Dargah, M.: 94220 23160

RAIPUR - 0771 (CHATTISGADH)

Bhupeshkumar Varu : Parag Hospital, Fatadi, Tel.: 2262700 M.: 9425201143

KOLKATTA - 033 Shyam Modi : Tel.: 98300 43813

#1 Online Book Shop દુનિયાભરના ગુજરાતી વાચકોની પ્રથમ પસેંદગી



www.clickabooks.com

પ્રેરણાત્મક પુસ્તકો - સીડી - ડીવીડી *Free Shipping
Above Rs. 500/-

વધુ ડિસ્કાઉન્ટ મેળવવા માટે
"કોઓ ઓફર" પર ક્લિક કરો ફક્ત એક કલીક અને ઘરે બેઠા મેળવો.

લિઝાનેસમેન, નોકરીયાત, ગૃહીણીઓ, વિધાયીઓ વગે માટે ઉપયોગી અને ઘરમાં વસાવવાલાયક
પુસ્તકો, ઓડીયો સીડી, વીડીયો સીડી આજે જ ઓર્ડર કરો અને ઘરે બેઠા મેળવો.

SHIPPING ALL OVER THE WORLD
USA - UK - AUSTRALIA - CANADA

PAYMENT OPTIONS

CREDIT / DEBIT CARD
CASH ON DELIVERY

CUSTOMER CARE
+91 9825688856

Buy Online www.clickabooks.com

HOME DELIVERY (Anywhere in India)

Tel.: (O) 079- 2644 7393 • 4003 5153 (10 a.m. to 6 p.m.)

M.: 99241 43847 • 99258 11737 • 98259 25947

e-mail : rudrapublication1@gmail.com • www.rudrapublication.com

Home Delivery : Navsari, Valsad, Dharampur, Vapi M. 9725608089

: **Bombay :**

Bharat Chotai : Tel. 2967 1229 • M : 98212 95281 • 98692 75439

Jatinbhai Shah : Malad, Mumbai M : 93222 11594